हमारे - गीत

सत्रहवां-भाग

सुमधुर भक्ति गीतों व लेखों का अनुपम-संग्रह

प्रकाशक

श्री जैन नवयुवक मण्डल

गोपालजी का रास्ता, जयपुर-३

सम्पादक सुभाषचन्द्र नाहटा

फोन ६५८५६ ७४१२६ पी पी

प्रथम वार ५०००

सवत् २०३१

मूल्य १रु० ५० पैसे

* पुस्तकें मिलने के स्थान *

१ आनद प्रिंटिंग प्रेस, गोपालजी का रास्ता, जयपुर ।

२ आसानन्द लक्ष्मीचन्द जैन जौहरी, गोपालजी का रास्ता, जयपुर ।

३ मै० किशोरीलाल जैन एण्ड ब्रादर्स, जौहरी, गोपालजी का रास्ता, जयपुर ।

४ चांद जैन जनरल स्टोर, घी वालो का रास्ता, श्वेताम्बर स्कूल के बाहर, जयपुर ।

५ श्री विजयकुमार जैन, मकान न० २७० रोशन मोहल्ला आगरा ।

६ श्री सन्तोषचन्द जौहरी, नमक की मडी, आगरा (यू० पी०)

७ बाम्बे सिल्क स्टोर पाली बाजार, ब्यावर ।

८ श्री छगनलालजी जैन, मैनेजर लोढा धर्मशाला, अजमेर ।

९ श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर, चीरा खाना, देहली । (पुजारी द्वारा)

१० जैन ब्रादर्स, ४३७ चीनला गेट, चावडी बाजार, देहली ।

११ श्री भैरूदान घीसूलालजी सर्राफ, लश्कर (म प्र)

१२ श्री सम्भवनाथ जैन पुस्तकालय, फलोदी, राजस्थान ।

१३ ठाकुरदास रोशनदासजी जैन, शिवपुरी (ग्वालियर, मध्य प्रदेश)

१४ श्री दुलीचन्द जैन, तुर्रेवाले, कपडा बाजार, जोधपुर ।

१५ श्री मोहनचन्द लूकड, इन्कम टैक्स वकील रीया हाऊस, सोजती गेट, जोधपुर (फोन ३१५०)

१६ श्री सुगनचन्द कल्याणमल पालावत, त्रिपोलिया बाजार, अलवर ।

१७ मिलापचन्द नाहटा, (जयपुर ज्वैलर्स,) ताडदेव एयर कन्डीशन मारकिट, बाम्बे ।

१८ कोहिनूर फैशन हाऊस, कालुपुरा, टाकशाल, अहमदाबाद–१

नोट :—बाहर से पुस्तकें मगाने वाले सज्जन पुस्तक के मूल्य के अतिरिक्त ४० पैसे प्रति पुस्तक पोस्टेज खर्च के साथ भेजें। पोस्टेज स्टाम्पस मिलने पर पुस्तक बुक पोस्ट द्वारा भेज दी जावेगी अथवा वी० पी० द्वारा मगावे ।

अनुक्रम

श्री जैन नवयुवक मण्डल

कार्यालय —गोपालजी का रास्ता,

जयपुर (राजस्थान)

विशिष्टताए —

☐ राजस्थान की सर्वाधिक लोकप्रिय सस्था ।

☐ २५ वर्ष से समाज सेवा मे सलग्न ।

☐ सेवा दल द्वारा गरीबो, असहायो को विशेप रूप से सहायता कार्य ।

☐ धर्म प्रसार के लिए सतत् प्रयत्नशील ।

☐ नि स्वार्थ शासन और जिन धर्म सेवा-कार्य ।

उद्देश्य .—

☐ राष्ट्रीय सामाजिक व धार्मिक उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना ।

☐ जैन सस्कृति का सम्पूर्ण भारत मे प्रचार करना ।

☐ जैन समाज को सगठित व जागृत करना ।

☐ विश्व शान्ति के हित मे प्रचार करना ।

☐ भाषण गायन, नाटक एव अन्य आयोजनो द्वारा धर्म प्रचार करना ।

प्रचार विभाग

श्री जैन नवयुवक मण्डल द्वारा प्रचारित

पच्चक्खाण-समय-कोष्ठ

जयपुर पंचांग से स्टैन्डर्ड समय पर

अंग्रेजी महीना	तारीख	सूर्योदय घ मि	सूर्यास्त घ मि	नमुक्कार-सहिअ घ मि	पोरिस घ मि	साढ-पोरिसी घ मि	पुरिमड्ट घ मि	अवड्ढ घ मि
मार्च	२३	६–३४	६–३६	७–२२	९–३४	११–४	१२–३५	१५–३५
अप्रैल	५	६–१७	६–४३	७ ५	९–२४	१०–५७	१२–३०	१५–३७
,,	२१	६–१	६–५१	६–४९	९–१४	१०–५०	१२–२६	१५–३९
मई	५	५–५०	६–५८	६–३८	९–७	१०–४६	१२–२४	१५–४१
,,	२०	५–४०	७–६	६–२८	९–२	१०–४३	१२–२३	१५–४५
जून	३	५–३८	७–१२	६–२६	९–२	१०–४४	१२–२५	१५–४८
,,	१८	५–३६	७–१८	६–२४	९–२	१०–४५	१२–२७	१५ ५२
जुलाई	३	५–४२	७–२०	६–३०	९–६	१०–४९	१२–३१	१५–५५
,,	१८	५–४८	७–१८	६–३६	९–११	१०–५३	१२–३३	१५–५६
अगस्त	२	५–५५	७–११	६–४३	९–१४	१०–५४	१२–३३	१५–५२
,,	१६	६–३	७–१	६–५१	९–१८	१०–५५	१२–३२	१५–४७
सितम्बर	१	६–९	६–४३	६–५७	९–१८	१०–५२	१२ २६	१५–३५
,,	१४	६–१७	६–२९	७–५	९–२०	१०–५२	१२–२३	१५–२६
अक्टूबर	१	६–२३	६–९	७–११	९–२०	१०–४९	१२–१७	१५–१४
,,	१४	६–३१	५–५५	७–१९	९ २२	१०–४७	१२–१३	१५–४
,,	३०	६–४०	५–४४	७–२८	९–२६	१०–४९	१२–१२	१४–५८
नवम्बर	१२	६–४९	५–३३	७–३७	९–३०	१०–५१	१२–११	१४ ५२
,,	२८	७–०	५–२८	७–४८	९–३७	१०–५६	१२–१४	१४ ४१
दिसम्बर	१२	७–९	५–३१	७–५७	९–४५	११–३	१२–२०	१४–५६
,,	२८	७–२०	५–३७	८–८	९–५४	११–११	१२–२९	१५–४
जनवरी	११	७–२०	५–४७	८–८	९–५७	११–१५	१२–३४	१५–१०
,,	२६	७–१९	६–०	८–७	९–५९	११–१९	१२–४०	१५–३०
फरवरी	१०	७–१३	६–१०	८–१	९–५७	११–१९	१२–४२	१५–२६
,,	२४	७–१	६–१९	७–४९	९–५१	११–१९	१२–४०	१५–३०
मार्च	१०	६–४८	६–२८	७–३६	९–४३	११–११	१२–३८	१५–३३

'हमारे गीत' प्रकाशन अब न केवल जयपुर या राजस्थान मे ही लोकप्रिय है, अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष मे सर्वत्र इसकी माग है, जिसका प्रमाण वे सैकडो पत्र हैं जो नित्य प्रति जगह २ से हमारे पास आते रहते हैं, और हम इस बढती हुई माग को पूरा करने मे प्रयत्नशील हैं। यही कारण है कि अब इस प्रकाशन की ५,००० प्रतिया छपवाई जाती हैं। गत वर्ष यह पुस्तक हम नही निकाल सके, जिस कारण हमारे सगीत प्रेमियो को जो असुविधाए हुई हैं, उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

समय-समय पर हमारे शुभचिन्तक हमे उत्साहवर्द्धक पत्र एवं सुझाव व शुभकामनाए भेजते रहते हैं उस के लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूँ, और उनमे से कुछ आपके समक्ष रख रहा हूँ।

—सम्पादक

दिनाक २५-६-१९७३

× × ×

श्री जैन नवयुवक मण्डल के गीतो मे मधुरता, प्रसन्नता, ध्वनि गम्भीरता एव सगठन के बीज बहुतायत मे रहते हैं। गीतो की ललकार मे मानव हृदय एकयता मे ओत-प्रोत हो जाता है एव जीवन के मूल लक्ष्य मोक्ष के प्रति लालायित हो जाता है। हम हृदय से शुभ कामना करते है कि श्री जैन नवयुवक मडल दिनोदिन अपनी प्रगति कर उन्नतिपथ का अनुगामी बनें।

मुनि श्री कान्तिसागर जी महाराज

जनता सिनेमा की तर्जों पर मुग्ध होकर उन अश्लील, भद्दे, पतनकारी तर्जों को अलाप-अलाप कर अपनी वासना को उत्तेजित करे, इसकी वजाय आज यदि उन्ही तर्जों पर निर्मित प्रभू भक्ति की रागे अलापे तो अच्छा हो। भक्ति रस भक्त को भगवान वना देता है और इसी के लिए श्री जैन नव युवक मडल २८ वर्षों से इस दिशा मे प्रयत्नशील ह, और इस दिशा मे सफल भी रहा है।

आर्यरत्न विदुषी साध्वी श्री विचक्षण श्री जी

× × ×

आपके मण्डल द्वारा प्रकाशित सोलहवा भाग पढ कर वहुत खुशी हुई, क्योकि आपकी पुस्तक मे भजन वास्तव मे प्रेरणा स्रोत हैं। मैंने आज तक काफी पुस्तकें पढी हैं क्योकि मुझे गाने का वहुत शौक है। आपके लेखको की लेखनी वास्तविक प्रशसा करने योग्य है। इससे ज्यादा आपके मण्डल के गीतो की प्रशसा करने के लिए मेरे पास और कोई शव्द नही जो आपके मण्डल को सुशोभित कर सके। भाग १७वा शीघ्र भेजे और १८वे भाग के लिए मेरा नम्वर अभी से बुक कर लें, आपकी अति कृपा होगी।

मानीव कुमार जैन
निरीक्षक
श्री बाहुवली जैन नवयुवक मडल,
इटावा (यू. पी)

दिनाक २०-१०-१९७२

× × ×

मैं राजेन्द्र जैन पाठशाला मे धार्मिक मास्टर हूँ। हमारी पाठशाला मे अधिकतर धार्मिक तथा सगीत का अभ्यास कराया जाता है। आपकी 'हमारे गीत' पुस्तक मैंने पढी। पढकर असीम आनन्द आया। सगीत के आधुनिक ढग से नये--नये वहुत ही सुन्दर

गायन श्राप वनाते हैं, इसके लिए श्राप वधाई के पात्र है। दो पुस्तक भाग १७वा भेजे। वालक वालिकाए इसके श्रावार पर गायन याद करेंगे। हम श्रापका महान उपकार मानेंगे।

जवेरी लाल डागा
धार्मिक मास्टर
राजेन्द्र जैन पाठशाला, श्राहोर
(जालोर राज)

दिनाक १६-१-१९७३

× × ×

कृपा करके मुझे 'हमारे गीत', का पूरा सैट जितनी भी नई पुरानी हो शीघ्र वी पी द्वारा भिजवाने की कृपा करे। श्रापके सुमधुर गीतो का सगम यहा के लोगो को खूब पमद है। यहा धार्मिक उत्सवो व श्रन्य कार्यक्रमो मे यह गीत हमे वहुत सहयोग प्रदान करते हैं। श्री महावीर जयन्ति भी नजदीक है। इसीलिए 'हमारे गीत' की नयी पुस्तक की हमे श्रावश्यकता रहेगी। कृपया शीघ्र भिजवावें।

किशन लाल एण्ड सन्स
स्टॉकिस्ट टाटा टैक्सटाइल्स
विशाखापट्टनम-२

दिनाक २६-३-१९७३

× × ×

श्राप सवके दर्शन मेडता रोड मे श्री फलवृद्धो पार्श्वनाथ के वार्षिक मेले के शुभ श्रवसर पर हुए। श्रापके विशेष भजनो की पुस्तक 'हमारे गीत' देख कर श्रत्यन्त प्रसन्नता हुई। मेले मे श्रापने श्रपने कार्यक्रम तथा वैण्ड की ध्वनि एव वालिकाश्रो द्वारा नृत्य प्रस्तुत कर श्रोताश्रो को मत्र मुग्ध कर दिया। श्रापने मेले पर श्राकस्मिक, श्रावश्यक, उचित निर्णय लेकर भक्तो के हृदय की हर्पित कर भक्ति की लहरो का सचार किया वह सराहनीय है। श्राशा है कि श्राप इसी प्रकार समय-समय पर मेले जैसे विशेष श्रवसरो पर श्राकर भक्तो

को भक्ति रस का पान कराने का सौभाग्य प्रदान करने का अवसर देते रहेंगे।

'हमारे गीत' भाग १७वा के प्रकाशन के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं स्वीकार कीजिए। मेरी प्रभू मे प्रार्थना है कि आप समाज के साथ मानव मात्र की अधिक से अधिक सेवा करें। सेवा रूपी मशाल सदा प्रज्वलित रहे।

संपतराज बोथरा
बोथरा मैन्शन, (नागौर राज.)

दिनाक १२-१०-१९७२

× × ×

रायचूर से कन्हैयालाल जैन का जयजिनेन्द्र मालूम होवे। हमने आपकी सगीत पुस्तक पढी, वहुत आनन्द आया। मन को भक्ति रस मे लीन करने का यह पुस्तक मुख्य साधन है। आपका जब भी नया भाग छपे तो मुझे सूचित करे।

कन्हैया लाल जैन
विरद्धीचन्द, उत्तमचन्द जैन
क्लाथ मर्चेन्ट्स, रायचूर

दिनाक २६-१०-१९७२

× × ×

हमने भी केकड़ी मे इन दिनो नवयुवक मंडल स्थापित किया है। हमे आपके सहयोग की आवश्यकता है। हमारे पास आपके 'हमारे गीत' के सभी भाग हैं। हम आप की पुस्तको से ही भजनों का प्रोग्राम करके मडल चला रहे हैं। इन पुस्तको से हमे वहुत सहयोग मिल रहा है। हमे महावीर जयन्ति की पूरी तैयारी करके कोटा मे कार्यक्रम देना है। इसलिए हमे १७ वा भाग की वहुत जरूरत है। छपी हो तो शीघ्र भेजें।

ताराचन्द महावीरप्रसाद जैन
केकड़ी (राज०)

दिनांक १७-४-१९७३

आपका प्रकाशन 'हमारे गीत' पढ़ कर मुझे भी हार्दिक इच्छा हुई है कि किसी प्रयास से मैं आप लोगो के बीच आकर प्रोग्राम देख सकूं और अपना कार्यक्रम भी दूं। 'हमारे गीत' मे आपके भजन मुझे बहुत रुचिकर लगे, तथा मैं इनसे बहुत प्रभावित हुआ। मेरी बारम्बार यही कामना है कि इस पथ मे आप लोगो को दिनोदिन उन्नति मिले।

चन्द्र प्रकाश जैन
अध्यक्ष
श्री दिगम्बर जैन नवयुवक मडल
झालरा पाटन

दिनाक २०-७-१६७३

× × ×

आपका मण्डल जब रतलाम आया था तब आपके गीतो की पुस्तक भाग १६ वा आपसे मैंने लिया था। जिसको मैने पढा और प्रभावित हुआ। अब आप मुझे १७ वा व १८ वा भाग जल्दी भेजें। मैं आपका आभारी रहूँगा।

दिलीप कुमार गोलेछा
थावरिया बाजार, रतलाम (म० प्र०)

दिनाक ८-१०-१६७२

× × ×

आपके यहा से प्रकाशित हमारे गीत भाग १६वा देखा। बहुत पसन्द आया। आप हर वर्ष पर्यूषण पर्व पर यह पुस्तक निकालते हैं। परन्तु इस वर्ष आपने नहीं निकाली, जिससे हमें बडी निराशा व परेशानी हुई। आपके मडल के सदस्यो द्वारा रचित भजन हमे बडे पसन्द आते हैं और हम हर साल पर्यूषण पर्व पर यही उम्मीद लगाए रहते हैं कि किताब निकल गई होगी। अब प्रकाशित होते ही सूचित किया करें।

अनिल कुमार लूणिया
प्रिंटिग प्रेस, ब्रह्मपुरी, अजमेर (राज०)

हम आपकी मण्डली के भजन नित्य प्रति पढते है। आपके भजनो में उच्चकोटि के भाव पूर्ण शब्दो का प्रयोग होता है तथा आपकी पुस्तको में नई नई सामग्री पढने को मिलती है। आपके मण्डल का नाम सिर्फ राजस्थान मे ही नही बल्कि मध्य प्रदेश व मद्रास मे भी प्रसिद्ध है। आपकी मण्डली ने चारो तरफ चार चाद लगा दिए हैं। बच्चो के रोम रोम में आपके बनाए हुए भजनो के एक एक शब्द रटे रहते हैं, क्योकि इनकी भाषा सरल होती है। मेरी शुभकामना है कि आपके मण्डल का नाम सदा रोशन रहे।

डूंगरमल जैन
नरेन्द्र एण्ड कम्पनी
मद्रास

दिनाक २२-३-१९७३

× × ×

आपकी पुस्तक के लोकप्रिय गीतो को पढ कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। यह पुस्तक जन-जन उपयोगी है, इसमें कोई दो राय नही। केवल जैन बन्धुओ के लिए ही नही बल्कि समाज के सभी प्राणियो के हृदय में इसके लिए हमेशा २ जगह बनती रहेगी। मेरी शुभ कामना है।

महावीर प्रसाद जैन
हैदराबाद (आंध्र)

दिनांक २१-९-१९७२

× × ×

मुझे लिखने मे बड़ा हर्ष होता है कि श्री जैन नवयुवक मंडल का 'हमारे गीत' भाग १९वां मैंने पढा और मनन किया। सभी दृष्टियो से उत्कृष्ट पाया। मैं आपके मधुर गीतों को बहुत पसन्द करता हूँ। मैंने कई मंडलो की ऐसी पुस्तकें पढ़ी पर अन्त मे सारांश

यह निकाला कि 'हमारे गीत' का कोई मुकाबला नहीं। आपके भजन व महान व्यक्तियो के अनमोल वचन बहुत ही अच्छे हैं। अब आपके १७वें भाग की प्रतीक्षा मे हूँ।

दिनांक १७ १२ १९७२

गोपाल सिंह चौहान
मेडता रोड, (नागोर)
रा म. विद्यालय,

× × ×

आपके मडल द्वारा प्रकाशित हमारे गीत भाग १५वा तथा १६वा पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपके द्वारा प्रकाशित हुए भजनो की जितनी भी प्रशसा करू वह थोडी ही रहेगी। मैं आपके मण्डल के उत्साही युवको की सराहना किस प्रकार से करू वह शब्द मैं नही ढूढ पा रहा हूँ। इतना मैं अपनी तथा सघ की ओर से अवश्य लिखूगा कि आपका मण्डल उज्जवल भविष्य मे प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

सुगनचन्द बरैया
अध्यक्ष
दिगम्बर जैन बरैया, नवयुवक सघ
लश्कर (ग्वालियर-म प्र)

दिनाक ७ १ १९७३
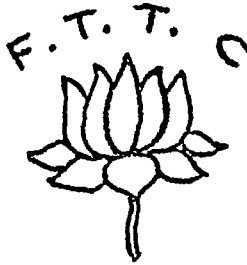
हमारे प्रेरक
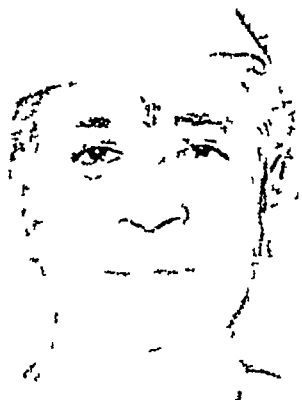
श्री मणीलाल जी दोसी

हसमुख तथा धार्मिक भावनाओ से ओतप्रोत जो हमेशा समाज
सेवा मे स्वत ही आगे आकर अपनी 'मणी' का
प्रकाश फैलाते जा रहे हैं ।
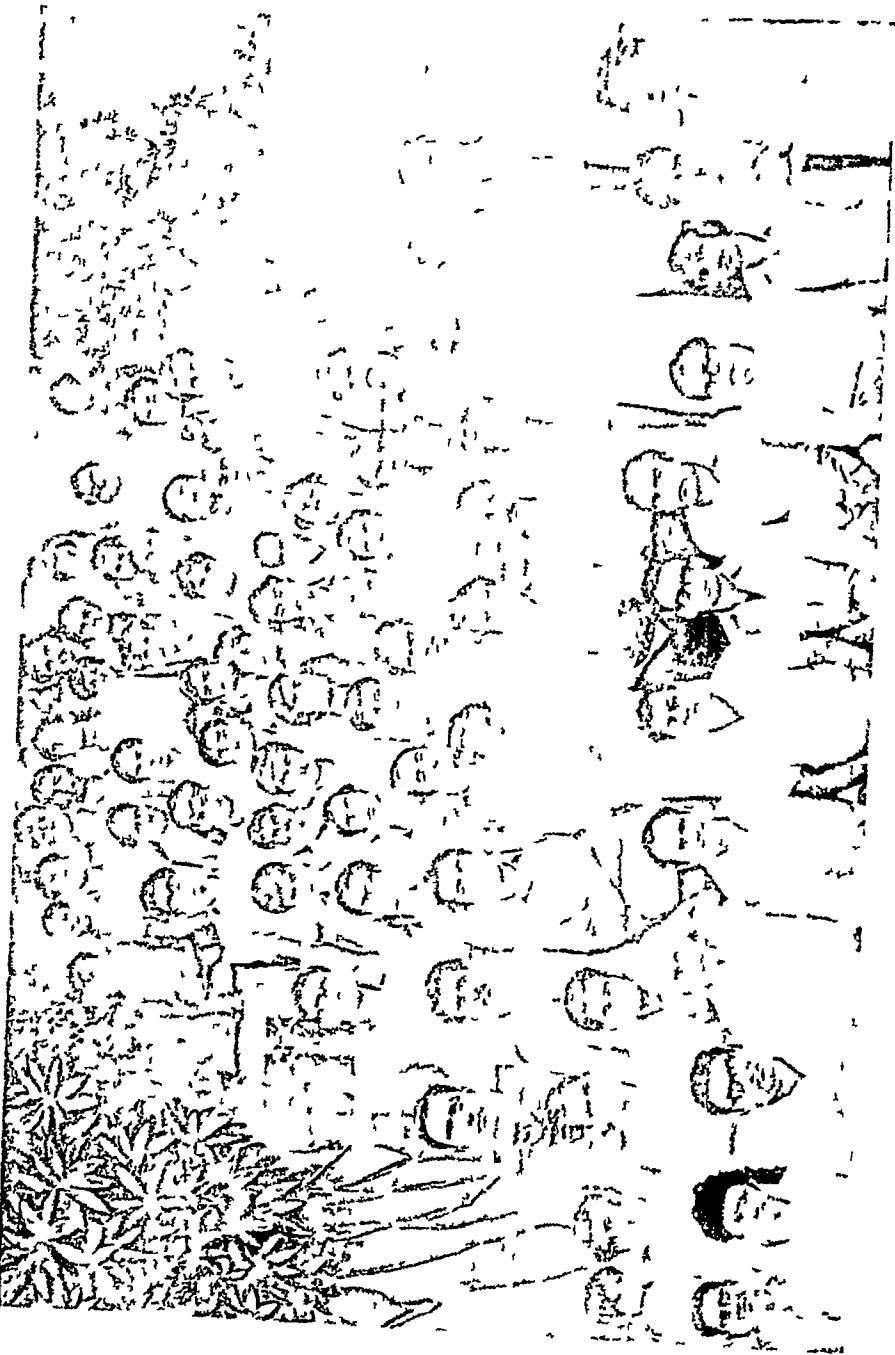
श्री जैन नवयुवक मंडल जरग्पर के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

आशीर्वचन

संगीतज्ञों का कहना है कि:—

सुखियो के सुख को वढाना व दु खियो के दु ख को दूर करना यह सगीत का मुख्य कार्य है।

अर्थात् विपमता को दूर कर समता का सागर लहराना व आनन्द उर्मिओ की वहार लाना सगीत का काम है। जीवन की गति को सगति देना सगीत का वरदान है।

अनन्त ज्ञानियों ने फरमाया है कि:—

वाह्य सुख सामग्री समता को वनाये रखने की क्षमता नही रखती। वह तो पानी के वुद्वुदे जैसी प्रक्रिया है। जिसका कोई ठोस या शाश्वत फल नहीं वैठता। शास्त्रो मे भी गीत, नृत्य व वाजित्र द्वारा की जाने वाली जिन भक्ति का अनन्त गुणफल वताया है। परम तारक भगवान श्री जिनेश्वर देव भी मालकोष राग मे
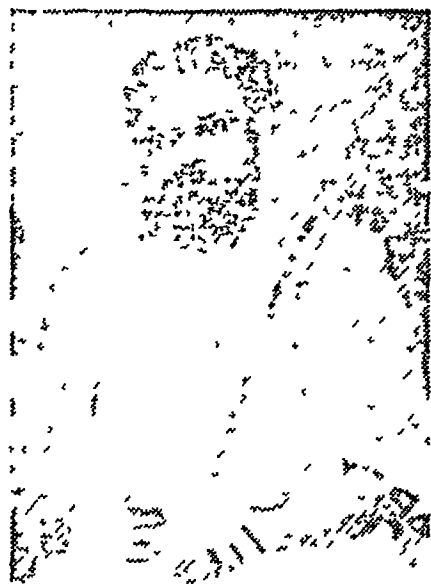
मुनि श्री मनोहर विजय जी महाराज

देशना फरमाते है। जिसके प्रभाव से जीवो के पाषाण जैसे कठोर हृदय भी मोम जैसे मृदु बन जाते है। उन मृदु हृदयो मे परम तारक परमात्मा की वाणी प्रवेश करती है और जैसे सद्यफला शस्य शामला धरा मे बीज पड कर फलते फूलते हैं वैसे ही जिनवाणी उन हृदयो मे फूलती है, व मोक्ष फलदा बनती है। पूजा, स्त्रोत, जप, ध्यान आदि मे भी तब ही सफलता मिल सकेगी जब उसमे लयलीन बन जाय। (उसमे तदाकार बन जाय! एक रूप बन जाय!) उसी मे आत्मा का एक एक आत्मप्रदेश समर्पित हो जाय।

जिन भक्ति मे आत्मा प्रदेशो के समर्पण का चमत्कार देखना हो तो रावण उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। अष्टापद पर्वत पर इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंपति भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी के निर्वाण स्थल पर प्रभु के प्रथम पुत्र व प्रथम चक्रवर्ती महाराजा भरत-देव ने चौवीस जिनेश्वरो की काया व वर्ण प्रमाण की रत्नमूर्त्तियां भरवाकर उसे सिंह निषधा नामक जिन प्रासाद बनवा कर, चक्रवर्त्ती ने उन प्रतिमाओ को विराजित करवाईं। तीन कोस ऊचा, चार कोस चौडा, चौरासी मडप वाला यह चतुर्मुख जिन प्रासाद एक अपूर्व रचना है।

इस सिंह निषधा जिनप्रासाद मे रावण व मदोदरी जिन भक्ति व तीर्थयात्रा हेतु गये थे। मदोदरी नृत्य मे मस्त थी व रावण वीणा बजाने मे एकाग्रचित्त था। बजाते--बजाते वीणा का तार टूटा, रावण ने सोचा कि मदोदरी की नृत्य गति मे रुकावट न आ जाय इसलिये लघुलाघवी कला द्वारा अपने हाथ की नस तोड कर वीणा के टूटे तार का अनुसन्धान किया व भक्ति के रग को अभग रक्खा। जिन भक्ति का सगी बन कर रावण ने मोह से ऐसा जग खेला कि जिसमे उसने मोह को पछाड दिया, तीर्थंकर नाम गोत्र को बाध लिया। अपने भव-भ्रमण के रग के भग की प्रक्रिया को गतिशील बनादी।

पत्थर जैसे कठोरतम व्यक्ति को मोमसा मृदु बनाना, कषाय

की आग से जलते जीवन मे शात रस की धारा बहाना, गम को प्रसन्नता मे पलट देना भी सगीत का कमाल है।

गीता मे बताये गये ज्ञानयोग–भक्तियोग व कर्मयोग की विवेचना का भी यह साराश है कि भक्तियोग एक ऐसा योग है कि जिसकी आराधना आबाल गोपाल आसानी से कर सकते है। भक्ति-योग मे लीन भी आसानी से हो सकते हैं। सगीत की लय मे मस्त होकर छोटे मोटे सभी झूमने लगते हैं। मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी सगीत के नाद मे लयलीन बनकर दूसरो के शिकार भी बन जाते हैं। कभी कभी जीवन मे प्रमाद की सुस्ती को उडाकर आरा-धना योग्य अनुशासनात्मक चुस्ती लाने का कार्य भी सगीत की मस्ती द्वारा सहज बन जाता है।

आज विदेशो मे भी सगीत द्वारा फूल पौधे, व अनाज की फसल को बढाने के प्रयोग होते हैं। रोगो को मिटाने हेतु भी सगीत का प्रयोग विदेशो मे हो रहा है। प्राचीन भारतीय शास्त्रो मे सगीत द्वारा रोग मिटाने के प्रमाण भी सुलभ हैं।

निराकार साधना की ओर अग्रसर होने के लिये भी जो साकार साधना आवश्यक होती है, उसमे भी सगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। साकार आराधना निराकार आराधना का पथ प्रशस्त करती है, यो कहना अत्यन्त उपयुक्त है कि साकार साधना को ठुकराकर निराकार साधना का आग्रह रखने वाले पानी का विलौना करते हैं। रेत मे से तेल निकालने की बाल चेष्टा करते हैं। इसलिये सभी जीवो को सापेक्ष भाव से साकार व निराकार साधना को नि सकोच अपनाना चाहिये। आरभ समारभ व हिंसा के नाम की आड मे साकार आराधना को छोडना भी जिनागमो के बोध की विकलता या अनभिज्ञता का सूचक है। जीवन की कडवाहट को दूर करने हेतु सत्व भाव सभर सगीत मधुर मधु है। उसका जिन भक्ति भरे हृदय द्वारा आस्वादन करना भी एक परम सौभाग्य है।

संगीत साकार साधना के सौंदर्य का श्रेष्ठ रस पात्र है:—

समय के अनुसार बनने वाले नये गीत भी रचनाकार के हृदय के भावो की अनुभूति का आस्वादन करवाते है। ऐसे उत्साही व भावनाशील नवयुवको के भावो का सुगठन रूप 'हमारे गीत' के नाम से मुद्रित हो रहा है। मैं तो चाहता हूँ कि 'हमारे गीत' मे मुद्रित गीत हमारे अ तरभावो को ऐसा आदोलित करें कि हम उसमे खो जाएं व हमारे गीत सच ही हमारे हो जाए।

जयपुर के प्रख्यात जैन नवयुवक मडल के प्रयास का यह कदम उनकी प्रगति की तमन्ना का परिचायक है। हम इन उदीयमान, भावी सघ के कर्णधार नवयुवको के सद्भावो की अनुमोदना करते हैं क्योकि–अनुमोदना भी तो प्रेरणा का आदर्श बन सकती है। प्रेरणा के पथ का प्रदीप बन सकती है।

मानव-जीवन सेतु (Bridge) पर खडा है। वह अच्छी बुरी दोनो दिशाओ की ओर अग्रसर होने के लिए स्वतन्त्र है। उसकी विचार सारणी सर्व दिशा गामिनी है। उसे बुरे विचारो की ओर उन्मुख होने की कोई आवश्यकता नही है। इस दिशा मे सहज गतिमान हो सकते हैं। जब हमारे समक्ष सद्-विचार नही होते तो बुरे विचार स्वत आ जाते हैं। वस्तुतः अच्छे विचारो मे तल्लीनता प्राप्त करना मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए।

श्रीपूज्य श्री जिन चन्द्र सूरि जी महाराज

संगीत अन्तर्मन के उज्ज्वल विचारो को प्रेरित कर चरित्र के उन्नयन मे सहायक होता है। उसमे एक शाश्वत जीवन शक्ति है। उससे मानव भावविभोर

हो जाता है। इसके द्वारा शास्त्रो के दुर्बोध विषयो को भी सरलता से युवक मस्तिष्क मे बिठाया जा सकता है।

भारतीय दर्शन ने ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए, उसकी प्राप्ति हेतु भक्ति मार्ग को भी अनिवार्य रूपेण स्वीकार किया है। उसने भक्ति मार्ग को शैशव काल की उपमा से विभूषित किया है। जिस प्रकार प्रत्येक प्राणी की बाल्यावस्था सभी के लिए आनन्द-दायी होती है, उसी तरह सगीत सभी को प्रिय होता है। वह मानव जीवन का प्राण है। जैन धारणा के अनुसार भगवान् ऋषभदेव ने अपने पुत्र-पुत्रियो को सगीत नृत्य कलादि सर्वविद्याएं सिखाकर उच्च विचारमय जीवन व्यतीत करने का साधन बताया।

"जैन नव युवक मंडल" भाव पूर्ण वाणी को मधुर स्वरों द्वारा अभिव्यक्त करने मे सफल रहा है। इसको मैं अनेक वर्षों से अति-निकटता से देखता आ रहा हूँ। मैंने अनुभव किया है कि ऐसे मडलो की धर्म प्रचार मे अत्यन्त आवश्यकता है।

मडल मे पारस्परिक प्रेम, सौहार्द्र सतत् बढता रहे और मडल निरन्तर शुभ पथ की ओर अग्रसर होता हुआ उन्नति के शिखर को लक्ष्य कर आगे बढता रहे। हमारी अनेकानेक शुभकामनाएं इसके साथ है।

साधारण मानव ने त्याग, तप, योग, साधनादि की कठोरता का विचार करके, उनके आचरण करने मे अपने आपको असमर्थ और अशक्त सा अनुभव किया तो महापुरुषो ने भक्ति का पथ भी उतना ही उपयोगी वतलाया है। तप और त्याग के कठोर मार्ग की अपेक्षा यह सरल साधन सर्वाधिक प्रिय और रुचिकर लगा। गायन-कला के सदा से दो मार्ग चले आ रहे हैं। एक ऐसा गीत है जो मानव को विषयविकारो की ओर ले जाता है, अन्त मे उसे पतित वना देता है, और एक ऐसा गीत है जो मानव हृदय को भक्ति रस पूरित वना कर भगवान के पास पहु चा देता है। जब कोई प्रभु प्रेमी सगीतकार प्रभु प्रेम में झूमता गीत गाता है, श्रोताजनो को प्रभु भक्ति के प्रवाह में वहाता हुआ ले जाता है। स्वय जिस भाव में वहता है दूसरो को उसी भाव प्रवाह में वहाता है, तब ही सगीतकार की सगीत साधना सफलता की चोटी पर पहु चती है।

इसके लिए श्री जैन नवयुवक मडल २४ वर्षों मे प्रभु भक्ति की लगन को हृदय में सजोये हुए समाज सेवा के पथ पर अग्रसर है। मडल को समाज के सभी महानुभावो का बिना साम्प्रदाय व गच्छ भेद के हार्दिक व आत्मीय सहयोग मिलता रहा है। उसीसे हमारी सेवा भावना की लगन को वल मिला है। आज सम्पूर्ण राजस्थान

ही नहीं अपितु भारतवर्ष में जैन समाज की अपने प्रकार की यह एक संस्था है, इसमें सन्देह नहीं। गत वर्ष में मंडल द्वारा किए गए कार्यों के विवरण से आपको संस्था की प्रगति की स्पष्ट झलक मिलेगी।

संगीत व धार्मिक शिक्षण केन्द्रः—

हमारे सामाजिक, नैतिक व धार्मिक स्तर में अपेक्षित सुधार हो और भावी पीढी को इस भौतिक युग में आध्यात्मिकता की ओर मोड सकें, ऐसी कल्पना हमारे इस ६ वर्ष पूर्व स्थापित नि.शुल्क संगीत व धार्मिक शिक्षण केन्द्र से साकार हो रही है। इस केन्द्र में इस समय भी ४० से अधिक बच्चे शिक्षण ले रहे हैं। हमें सूचित करते हुए हर्ष होता है कि इस केन्द्र में जैन समाज के सभी सम्प्रदायों के बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। अर्थ व स्थान की कमी के बावजूद भी शिक्षण केन्द्र बराबर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इसका श्रेय उन महानुभावों को है जो गत ६ वर्षों से बराबर मासिक सहायता प्रदान कर रहे हैं।

गत कुछ वर्षों से बच्चो को प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद की वार्षिक संगीत परीक्षाओं मे प्रवेश दिलाने का भी प्रबन्ध कर लिया गया है। प्रति वर्ष २० से २५ बच्चे शास्त्रीय संगीत, नृत्य, वाद्य यन्त्र (गिटार, सितार) आदि की परीक्षाएं दे रहे हैं। शिक्षण केन्द्र की प्रगति से हमारे शिक्षक श्री बजरंग लाल वर्मा का गहरा सम्बन्ध है, जिनके कठिन परिश्रम से इस केन्द्र के बच्चों के कार्यक्रमों ने जन मानस का हृदय मोह लिया है। आशा है कि हमारी इस संस्था के ये ही बच्चे भावी कलाकार बन कर समाज सेवा तथा संगीत की मशाल को सदा प्रज्वलित रखने में सफल होंगे।

संगीत उप समितिः—

पांच सदस्यों की यह उपसमिति संगीत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को अधिक सफल बनाने के लिए सदा तत्पर रहती है,

स्थानीय तथा बाहर से किसी भी धार्मिक आयोजन के लिए आमन्त्रण प्राप्त होने पर बिना किसी साम्प्रदायिक भेद के समयानुसार हमारी सगीत मडली जिन शासन की शोभा बढाने के लिए सदा अग्रसर रहती है। यह भजन मडली अपने भक्ति के मस्ती भरे गीतो, इन पर भाव नृत्यो, सवादो, एकाकी व बच्चो के आर्केस्ट्रा पर आधारित कार्यक्रमो तथा विविध सास्कृतिक कार्यक्रमो के लिए अपना प्रतिष्ठित स्थान रखती है। मडल को गत वर्ष जयपुर से बाहर निम्न स्थानो पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

१. मालपुरा पैदल यात्री संघः—

राक्यान बन्धुओ द्वारा निकाले गए इस सघ मे सम्मिलित होकर मडल ने निम्बेरा तथा मालपुरा मे कार्यक्रम प्रस्तुत किए, दोनो कार्यक्रम सफल रहे।

२. श्री फलवृद्धी पार्श्वनाथ जी का मेला मेडता रोड़ —

सदा की भाति गत दोनो वर्षो मे मेले मे सम्मिलित होकर मडल के सदस्यो व शिक्षण केन्द्र के बच्चो द्वारा मडल के तत्वावधान मे आयोजित विशिष्ट सभाओ मे काफी जन समूह के बीच अपने आकर्षक, लुभावने कार्यक्रम प्रस्तुत किए, कार्यक्रमो से प्रभावित होकर नागौर, बीकानेर, जोधपुर, खजवाना आदि से पधारे महानुभावो ने बच्चो को इनाम तथा मडल को सहायतार्थ राशिया प्रदान कर उत्साह बढाया, उसके लिए मडल सबका आभार प्रकट करता है।

३ नाकोड़ा, फलोदी तथा कापरड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ यात्रा —

श्री लक्ष्मी चन्द जी भसाली के आमन्त्रण पर मडल को इन तीर्थों के दर्शनो तथा वहा पर विशेष भक्ति कार्यक्रम रखने का लाभ प्राप्त हुआ।

४ केकडी मे भव्य रथ यात्रा महोत्सवः—

केकडी मे श्री कान्ति सागर जी महाराज की निश्रा मे आयो-

जित इस कार्यक्रम मे मडल ने भाग लिया, तथा जुलूस व रात्रि सभा मे केकडी की जनता को प्रभावित किया।

५ रतलाम में एक करोड़ जाप का आयोजन —

यहा पर मडल ने भव्य रथ यात्रा तथा दो दिन रात्रि सभाओ मे १० हजार से भी अधिक उपस्थित जनसमूह मे रात्रि के २ बजे तक अपने अनूठे कार्यक्रम प्रस्तुत करके उनका मन मोह लिया। यहा के श्री सघ द्वारा भरी विशाल सभा मे मडल का हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

६ श्री चवलेश्वर पार्श्वनाथ का वार्षिक मेला —

इस मेले मे भी इस वर्ष तीर्थ कमेटी का आमन्त्रण प्राप्त होने पर मडल को इस दुर्लभ तथा दर्शनीय तीर्थ के दर्शन करने का लाभ प्राप्त हुआ। वहा पर कलैक्टर, पुलिस ऑफीसर तथा अन्य सरकारी अधिकारियो को आमन्त्रित करके रात्रि को एक विशिष्ट सभा कलैक्टर महोदय की अध्यक्षता मे आयोजित की गई, जो कि कडाके की सर्दी तथा वर्फीली हवाओ मे पहाड के ऊपर खुले स्थान पर रात्रि के एक बजे तक विशाल जन समूह के साथ चलती रही। अतिथि महोदय ने मडल के कार्यक्रमो की भूरी-भूरी प्रशसा की, तथा तीर्थ कमेटी द्वारा मडल का हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

७ बीकानेर मे श्रीपूज्य पट्टाभिषेक महोत्सव.—

इस अवसर पर मडल को आमन्त्रण प्राप्त होने पर, शिक्षण केन्द्र के बच्चो तथा पूरे साजोसामान के साथ मडल सम्मिलित हुआ। वहा पर ६ घन्टो के लगातार जुलूस मे मडल के सदस्यो ने अपनी बुलन्द आवाज तथा मधुर स्वर लहरियो द्वारा जनता को प्रभावित किया। रात्रि को रागडी के चौक के विशाल उपाश्रय मे करीब ७, ८ हजार नर नारियो के जन समूह मे सास्कृतिक तथा भक्ति कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये, जो कि बीकानेर निवासियो को

भुलाए नही भूलेंगे । जिन-जिन महानुभावो ने बच्चो को पुरस्कार तथा मडल को सहायतार्थ राशियाँ प्रदान की उनका मडल आभारी है ।

८ जयपुर के कार्यक्रम —

जयपुर मे जिन जिन कार्यक्रमो मे मडल ने भाग लिया वह किसी से छिपा हुआ नही है । इन मे मासक्षमरण के २० के करीब शोभा यात्राओ, दशलक्षणी पर्व के कार्यक्रम भाकरोठा मे दिगम्बर जैन मन्दिर का वार्षिक मेला, श्री पूनमचन्द जी नाहटा द्वारा जिन बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव, पोपदशमी की भव्य रथयात्रा, दीक्षा महोत्सव, तथा मन्दिरो व दादा बाडी मे पूजन व रात्रि जागरणो आदि कार्यक्रमो मे मडल ने अपना पूर्ण योगदान प्रदान किया ।

पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व —

इस पर्व मे मडल के तत्वावधान मे विशेप तथा धार्मिक भावनाओ से ओतप्रोत कार्यक्रम रखे, जिसमे आशातीत भीड रही । चन्दनबाला तथा राजुल मति के जीवन पर आधारित नृत्य नाटिकाओ तथा डका, फूलझडी, मूसल, सितारो का जमघट आदि नृत्यो की खूब धूम रही । अन्तिम दिन हमारे शिक्षण केन्द्र के बच्चो द्वारा अभिनीत नाटक "अमर कुमार" पूरी तैयारी के साथ प्रस्तुत किया गया । इन विशेष कार्यक्रमो की अध्यक्षता प्रथम दिन श्री गुमानमल जी मालू भूतपूर्व मन्त्री श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ सघ, दूसरे रोज श्री कन्हैयालाल जी जैन तथा तीसरे रोज श्री छुट्टनलाल जी बैराठी ने की । उन्होने क्रमश २५१) रु०, ३५१) रु० तथा १२५) रु० की राशि मडल को सहायतार्थ प्रदान कर हमारा उत्साह बढाया, मैं उनका आभार मानता हू । श्री कन्हैयालाल जी जैन ने मडल को सहायता के अलावा १२५) रु० बच्चो को जिन्होने कार्यक्रम मे भाग लिया इनाम के रूप मे दिए तथा एक गोल्ड मैडल राकेश कुमार को प्रदान किया जिसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हू ।

गत पर्व पर्यूषण मे श्री चन्दनमल जी गुजरानी ने हमारे कार्यक्रमो की विशेष सभा की अध्यक्षता करके हमे कृतार्थ किया तथा कार्यक्रमो से प्रभावित होकर ५०१) रु० की राशि मडल को सहायतार्थ प्रदान की थी, उसके लिए हम सदा आभारी रहेंगे। मे० रतन एण्ड क० की तरफ से शिक्षण केन्द्र के ७ बच्चो को उनके कुशल कार्यक्रम के उपलक्ष मे ७ चाँदी के कप प्रदान किए, जिसके लिए हम उनका आभार मानते हैं।

श्री महावीर जयन्तीः—

सदा की भाँति गत वर्ष १९७२ मे श्री महावीर जयन्ती के कार्यक्रमो मे मडल ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। राजस्थान जैन सभा के आग्रह पर मडल ने दो आकर्षक झाकिया प्रस्तुत की। एक झाकी जन्म कल्याणक की थी, जिसमे त्रिशला माता ने स्वप्न देखे और राजा सिद्धार्थ राजपुरोहितो से स्वप्नो का फल पूछ रहे थे। दूसरी झाकी चन्दन वाला की वनाई गई, दोनो झाकिया अपनी अलग २ विशेषताए रखती थी। हमारे सदस्य गण झाकियो का पूरा परिचय दे रहे थे, और जनता को काफी आकर्षित किया। चन्दन वाला की झाकी को देख कर हजारो महिलाए झाको के पीछे पीछे चलने लगी, जिससे जुलूस का एक वड़ा भारी विशाल रूप हो गया।

इस वर्ष १९७३ मे भी श्री महावीर जयन्तो के शुभ अवसर पर मडल ने प्रभात फेरी, जुलूस तथा प्रातः सभा एव सायकालीन सास्कृतिक कार्यक्रमो मे अपना पूर्ण योगदान दिया। जुलूस मे हजारो की सख्या मे जन समह हमारे साथ रहा, जौहरी वाजार मे ज्वैलर्स एसोसिएशन के नीचे हमारे शिक्षण केन्द्र के वच्चो द्वारा वैण्ड का कार्यक्रम एक आकर्षक केन्द्र वन गया। पूरे जुलूस का तथा जनता का वैण्ड द्वारा अभिवादन किया गया। रात्रि को सास्कृतिक कार्यक्रमो की प्रतियोगिता मे जिसमे १५ के करीब सस्थाओ ने भाग लिया, मडल के शिक्षण

केन्द्र के वालक वालिकाओ द्वारा बडे ही लुभावने व सुन्दर कार्यक्रम तथा मधुर गीत प्रस्तुत किए गए, जिसमे मेरुगिरी पर्वत पर जन्माभिषेक का दृश्य तथा चन्दन वाला के एकाकी ने उपस्थित जनता का मन मोह लिया। इस प्रतियोगिता के लिए श्री स्वरूपचन्द जी चोरडिया की स्मृति शील्ड पुरुस्कार जो कि गत दो वर्षो से मडल ने जीता था, इस वर्ष भी जीत कर सदा के लिए उस पर अधिकार कर लिया। यह मण्डल के आकर्षक लुभावने व शिक्षा प्रद रोचक कार्यक्रमो का प्रतीक रहेगा।

सेवादल उप समिति:—

सेवा दल ने सदा की भाँति इस वर्ष भी श्री पर्यूषण पर्व मे मण्डल के कार्यक्रमो मे चरण पादुका प्रवन्ध को वहुत ही कुशल ढग से चलाया। इस समिति द्वारा समाज के गरीब व असहाय व्यक्तियो की यथा सम्भव वस्त्र, खाद्यान्न, दवाईयो तथा अन्य रूप से सहायता की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है, गत वर्षों मे इस समिति द्वारा जरूरत मन्द विद्यार्थियो को सैकडो पुस्तके व अन्य स्टेशनरी आदि के रूप मे सहायता प्रदान की गई है।

मैं सभी दानी महानुभावो से निवेदन करता हू कि इस मद (फण्ड) के लिए हमे धन, वस्त्र, खाद्यान्न, दवाईया आदि जिस रूप मे भी आप अधिक से अधिक सहायता प्रदान कर सकें, अपना पूर्ण योगदान देकर पुन्योपार्जन करें। ताकि इस कार्य को और अधिक वढाया जा सके।

वैन्ड —

गत वर्ष श्री पर्वाधिराज पर्यूषण के शुभ अवसर पर मडल ने अपना वैन्ड स्थापित कर लिया है। इसका श्रीगणेश श्री माणक चन्द जी वोथरा वाम्वे वालो के कर कमलो द्वारा हुआ था। मडल के कार्यक्रमो से प्रभावित होकर उन्होने वैन्ड के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने की घोषणा करके हमारा उत्साह वढाया, जिसके लिए हम

उनको वारम्वार धन्यवाद देते है। हम श्री डूंगरमलजी मेमवाल के भी आभारी है जिनकी प्रेरणा से वैन्ड का यह साकार रूप आपके समक्ष है।

हमारे गीत—

मडल प्रति वर्ष 'हमारे गीत' का प्रकाशन करता रहा है। गत वर्ष किन्ही विशिष्ट कारणो से हम यह प्रकाशित नही कर सके, जिससे आप सव को जो असुविधा हुई, उसके लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

आपके हाथ मे 'हमारे गीत' का अव यह 'सत्रहवा पुष्प' अपने वारे मे स्वय वोलेगा। हमारा प्रयास तो गीतो, लेखो और ऐतिहासिक कहानियो द्वारा ज्ञान और भक्ति का सगम करने का रहा है, परन्तु हमारे इस सगम प्रयास का मूल्याकन तो आप स्वय ही कर सकते हैं। वढती हुई माग को देख कर इस प्रकाशन की ५००० प्रतिया छपाई जा रही है। 'हमारे गीत' भाग १६ वा हमारे पास समाप्त हो चुका है, इसलिए उसके कुछ प्रसिद्ध तथा प्रचलित गीत आप सव की सुविधा हेतु इस १७ वे भाग मे प्रकाशित किए जा रहे है।

इस सुन्दर प्रकाशन के लिए विज्ञापन दाताओ के प्रति आभार प्रकट करना ही काफी नही है पुस्तक को इस सजधज के साथ लागत मूल्य से भी कम कीमत पर उपलब्ध कराने के पूरे श्रेय के अधिकारी केवल वही हैं।

गत वर्षों से हम अपने प्रकाशन को कुछ महानुभावो की तरफ से, समाज के हर घर मे भिजवाने का प्रयत्न करते रहे है। इस पुष्प के लिए भी छपने से पूर्व निम्न महानुभावो ने वितरण के लिए हमे स्वीकृति प्रदान कर, मण्डल के प्रति जो हार्दिक प्रेम प्रदर्शित किया है, इसके लिए उन सव का आभार प्रकट करते हैं।

१	श्री अमरचन्द जी धर्मचन्द जी नाहर	२५२
२.	श्री रतनचन्द जी सिंधी	२००
३	श्री पूनमचन्द जी झाड़झूर	२००
४	श्री विमलकान्त देसाई जयपुर	२००
५	श्री मनोहरलाल जी मांगीलाल जी भसाली	१००
६	श्री नेमचन्द पाना भाई	१००
७	श्री गुलावचन्द जी झाडझूर	१००
८	श्री प्रतापचन्दजी हीराचन्द जी डढ्ढा	१००
९	श्री गुमानमल जी मालू जयपुर	१००
१०	कोहिनूर फैशन हाऊस कालुपुरा टाकशाल, हाजापटेलस पोल के सामने, अहमदावाद-१	२००
११.	श्री सोहनचन्द जी लूकर एडवोकेट, जोधपुर	१००
१२	राज गोटा स्टोर कपडा वाजार, जोधपुर	१००
१३.	मिलापचन्द जी नाहटा (जयपुर ज्वैलर्स) वॉम्बे	१००
१४	श्री भैरूदानजी घीसूलाल जी, लश्कर	५०
१५	श्री सन्तोख चन्द जी जौहरी, आगरा	५०

इस पुस्तक को प्रकाशित करते समय पूरा ध्यान दिया गया है, फिर भी त्रुटिया व रहना स्वाभाविक है जिसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। अन्त मे हम अपने लेखको, गीतकारो, विज्ञापन दाताओ, तथा पुस्तक समाज मे वितरण कर्ताओ और आप सभी महानुभावो के प्रेमानुराग के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए सस्था के लिए आपके मगलमय एव आत्मिक सहयोग की कामना करते हैं ताकि सस्था प्रगति के पथ पर वढती हुई समाज की ठोस सेवा कर सके।

धन्यवाद !

दिनाक -१५-७-७३

सुभागचन्द नाहटा

मन्त्री - श्री जैन नवयुवक मंडल
जयपुर

महान दानवीर

स्व० श्री मगलचन्द जी चौधरी (मडार वाले)

कुशल व्यवसायी कर्मनिष्ठ, दानवीर श्री मगलचन्द जी अपने जीवन मे तन, मन, धन से धार्मिक कृत्यो मे उदार नीति का पालन करते रहे हैं। उनके सपुत्र भी आज उसी मार्ग का अनुकरण कर रहे हैं। ऐसे निष्ठावान् व कर्मठ चरित्रवान् प्रेरक के रूप मे स्मरण किए जाते रहेगे।

हमारे हितैषी

श्री राजमल जी सुराणा

जयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी एव कुशल व्यवसायी जो सरल हृदयी, मृदु स्वभावी तथा अपनी धार्मिक वृत्तियो के लिए समाज मे एक विशिष्ट स्थान रखते है।

समाज की प्रमुख प्रतिभा

श्री रामलाल जी वैद

ममाज के दुलभ 'लाल । आप देहली में मुप्रमिद्ध प्रतिष्ठित तेल
व्यवमाई होते हुए भी समाज मेवा के हर क्षेत्र मे सक्रिय रुचि
लेते हैं। आत्मानन्द जैन महासभा देहली के अध्यक्ष
तथा हस्तिनापुर तीर्थ कमेटी के वर्षों मे कोपाध्यक्ष
रहना आप की धर्म निष्ठ लगन का प्रमाण है।

प्रमुख समाज सेवी

श्री सिरहमल जी नवलखा

देश, समाज और व्यापार सभी मे समान रूप से उच्चस्तरीय प्रतिष्ठित, शिक्षा के क्षेत्र मे क्रान्तिकारी योजनाओ के सफल सचालक। जिसका सजीव उदाहरण निर्माणाधीन सुबोध कॉलेज।

धर्म प्रेमी

स्व० श्री पूनमचन्द जी झाड़झूर

समाज की वह विभूति जो सांसारिक बन्धनों के रहते हुए भी अपनी धार्मिक व सामाजिक वृत्तियों के लिए सम्पूर्ण समाज मे प्रतिष्ठित थे।

मृदु स्वभावी

श्री हरीशचन्द्र जी बढेर

जिनकी आत्मीयता इतनी कोमल है कि दूसरो के दुखो को अपना दुख समझ कर उसके दुख को मिटाने के लिए तन, मन, धन से सदैव तत्पर रहते हैं।

युवा कार्यकर्त्ता

स्व० श्री भीमसैन सिंघी

गम्भीरता धैर्य, अनुराग, धम ही जिसका जीवन रहा, श्री जैन
नवयुवक मडल के सह-मन्त्री व कोषाध्यक्ष के प्रतिष्ठित
पदो, पर सराहनीय कार्य कर हर सभव आगे
बढाने का निरन्तर प्रयास किया ।

मण्डल द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी महता। मंडल के अध्यक्ष आपका स्वागत कर रहे हैं।

माननीय वित्त मंत्री श्री चन्दनमल जी वैद की अध्यक्षता में आयोजित सभा में हमारे शिक्षण केन्द्र की बालिकाएं गीत प्रस्तुत करते हुए।
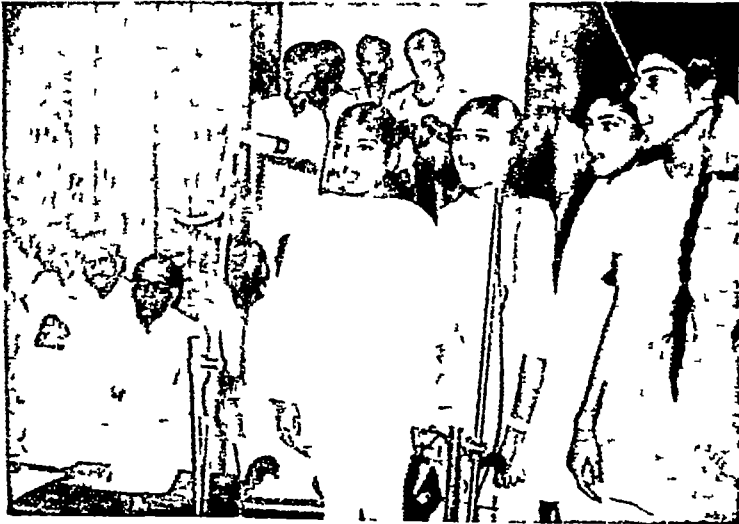
प्रार्थना

राग—पटदीप (त्रिताल)

अखिया तुम्हरे दरश की प्यासी।
त्रिशला नन्दन, भव दुख भजन।
दर्शन दो शिव वासी॥ अखिया...

१ अष्ट कर्म ने घेरो मोको।
नाथ कहो किम जासी॥ अखिया...

२ तुम विन और, न को मन भावत।
तोरा ही ध्यान लगासी॥ अखिया...

३ नैया हमरी पार लगाओ।
'लक्ष्मी' सदा गुण गासी॥ अखिया...

नोटेशन

१ सा ग, म प, नि सां, ग रे,
सा नि, ध प, म ग, ध प, म ग, रे सा।

२. सा ग, म प, ग रे, सा–, ध प, म प, ग म, प–
प नि, सां ग, रे सा, नि सा ध प।

---

२. समोसरन रचना

तर्ज—इन्हीं लोगों ने (पाकीजा)

समोसरन में बैठे मगन में। समोसरन...
दर्शन भव्यो ने कर लीना जिनन्दा तोरा॥ ओ..

१. तुमरी तो महिमा, त्रिभुवन सब जाने। तुमरी.
भक्ति में झूमें, जयकार जिनन्दा तोरा॥ ओ ...

२ सुरनर आए, पशु पक्षिवा भी आए। सुर ....
चरण शरण ले लीना, जिनन्दा तोरा॥ ओ......

३. जगमग ज्ञान की ज्योति प्रकाशे। जगमग...
जिसने वाणी को सुन लीना, जिनन्दा तोरा॥ ओ ....

४ शोभा 'सुभाग' मुख वर्णी न जाए। शोभा ....
रूप अनूपम मोह लीना जिनन्दा तोरा॥ ओ. ....
समोसरन में... ....

३. दान की महिमा

तर्ज—मार दिया जाय, या छोड दिया जाय (मेरा गाव मेरा देश)

दान दिए जा, शुभ काम किए जा।
भाग्य मे मिला है, उपकार किए जा॥
भाग्य से मिला

१ जाने किस भव की, पुन्य कमाई है।
शान शौकत यह दौलत पाई है।
इस भव में जो दे, पर भव में मिले।
ज्ञानी फरमाए॥ दान दिए

२ पूर्व भव मे, साधू को खीर वोहराई।
दुखिया सगम, वालक ने नही खाई।
शालीभद्र वना, ऋद्धि सव पाई।
सोने की पेटिया देव भिजवाई।
शान थी वेमिसाल, फल मिला था कमाल।
राजा शरमाए॥ दान दिए

३ पाच सौ साधुओ को वह वोहराते थे।
पन्द्रह सौ सन्यासी भोजन पाते थे।
आवू पे सुन्दर मन्दिर वनाए थे।
सघ वडे भारी, वह निकलाए थे।
धन्य है वस्तू पाल, धन्य वह तेज पाल।
सव गुण गाए॥ दान दिए

४. अकाल में अन्न का भडार खुलाया था।
जगडू शाह, दान वीर कहलाया था।
देश की खातिर धन खूब, लगाया था।

भामा शाह दान वीर कहलाया था।
ऐसा उपकार कर, हो जाए अमर।
तेरी याद आए ॥ दान दिए……………

५ दान की महिमा, भारी है बतलाई।
सब रहेगा यहीं, पैसा और पाई।
कोई भूखा न प्यासा रहे भाई।
देश जाति धर्म की करो भलाई।
युवक मंडल कहे, शुभ अवसर है यह।
'सुभाग' यूं न जाए ॥ दान दिए……

---

४ अमृत वाणी

तर्ज—बरखा सुहानी आई रे पुरवाई (पूरब पश्चिम)

दोहा

वीर प्रभू गुणगाना गाना, जीवन सफल बनाना बनाना ॥

अमृत सी वाणी बरसे, सुनो भाई । अमृत……
प्रभू वीर वर्षाई, भव्य जीवों को सुनाई।
दुनियां ने अपनाई रे ॥ मन भाई… अमृत……

१ यह दुखिया संसार है सारा, जीवन मृत्यू खेल है न्यारा,
विषय कषाय यह, मोह रुलाए यह।
संयम है सुखदाई रे … सुनो भाई ॥ अमृत …

२. सत्य वचन मुख से ही बोलो, धर्म यह उत्तम कम न तोलो।
नही सताना तुम, किसी जीव का मन,
दया करना भलाई रे;… सुनो भाई ॥ अमृत……

३. धर्म अहिंसा है यह प्यरा, खुद जीओ जीने दो नारा।
सब को हक जीने का,—शान्ति से रहने का।
जुल्म हिंसा, मिटाई रे सुनो भाई ॥ अमृत........

४. चोरी करे, चोर बने, जेल मे जाए,
जुआ खेल जुवारी है, धन लुटाए
शराब न पीना तुम, इज्जत से जीना तुम।
समझो 'सुभाग' गाई रे। सुनो भाई ॥ अमृत

---

५ शुभ अवसर

तर्ज—मोसम है आशिकाना (पाकीजा)

जीवन सफल बनाना, अवसर मिला यह तुमको।
एसे न यू गवाना........ २ .... ॥

१ भव भव भटकते हम तो, सदियो से धूमते है।
मझधार मे है नैया, साहिल को ढूढते हैं।
पापो का बोझ भारी, हल्का इसे बनाना ॥ एसे

२, नर तन रतन अमोलक, है भाग्य से यह पाया।
यह धूल मे मिलेगा, गर तू परख न पाया।
रोए गा हाथ मल मल, मुशकिल है फिर यह आना ॥
एसे न . . .

३ चक्कर समय का देखो, यह घडी यू चलती जाए।
फिर लौट के न आए, उमर यू ढलती जाए।

करना सो आज करले, कल का है क्या ठिकाना।
एमे न यू गवाना ····

४ जिन वाणी धर्म उत्तम, वीतराग देव छाया।
सब कुछ 'सुभाग' पाया, है सतगुरु का साया।
शुभ मार्ग पे चले जा, शिव सुख को गर है पाना॥
एसे न यू गवाना··

---

६ जीव दया

तर्ज—जाने क्यों लोग मोहब्बत किया करते है (महबूब की मेंहदी)

धन्य वह लोग है, जीवो पे दया करते हैं।
करते जो धर्म दया, भव से वही तिरते हैं॥ धन्य··

१ इक वाज के पजे से, कबूतर को छुडाया।
मेघरथ राजा ने उसको, तराजू पे विठाया।
काट काट मास वह, अपना च ढाते वह।
वाज को, कबूतर के, वदले मे देते वह।
कष्ट भयकर, हुए तीर्थंकर,
सोल्हवें कहते हैं॥ धन्य वह लोग······

२ मुनि धर्म रुचि, दया की मूर्ति।
नागश्री ने लोकी, जहरीली वोहरादी।
बूंद घी की गिर गई, चीटिया ज्यो मरगई।
सोचा, नही फेंकू इसे, मरते अनन्ता जीव।
साग सब खाया, छूट गई काया।
देव वह बनते है॥ धन्य वह लोग·······

३ इक मेरु प्रभ हाथी था, जब पाव उठाया।
खरगोश इक नन्हा सा, नीचे उसके आया।
पाव ऊचा ही रखा, फिर जमी पे न रखा।
सोचा कही न मर जाए, खरगोश बेचारा।
वह तीन दिन यू खडे, अकड के गिर पडे।
राजा वह बनते हैं ॥ धन्य वह लोग···

४ दया धर्म पालो, महापुरुषो की वाणी।
युवक मडल कहता है, जीना चाहे हर प्राणी।
चीटि हो चाहे हाथी, आत्मा है इक जैसी।
रक्षा करो, जीवो की, मदद दीन दुखियो की।
कहे 'सुभाग' जगालो भाग्य।
पुण्य.वह भरते है ॥ धन्य वह लोगहैं ॥···

---

७ मानव भव

तर्ज—जिन्दगी इक सफर है सुहाना (अन्दाज)

जिन्दगी मे तू कुछ कर जाना,
इक रोज यू ही है चले जाना ॥

१ आया अकेला, जग मे यहा,
चार दिनो का मेला यहा
दुनिया है मुसाफिर खाना ॥ इक····

२ मानव भव है, तुम को मिला।
पगले इस को यू न गवा।
फिर होगा यू पच्छताना ॥ इक··

३. पैसा पैसा करता रहा,
जुल्म जहां मे करता रहा।
पापों से तूं जरा घवराना ॥ इक

४. दो दिन की जिन्दगानी है।
सारी दुनिया फानी हैं।
'लक्ष्मी' कहे प्रभु गुण गाना ॥ इक...

---

८ हम एक हैं

तर्ज—आज आओ मुस्कराओ (ललकार)

आज आओ मिल जाओ, दिल से दिल मिलाओ।
शान हो एसी, जिसे देखे यह जमाना।
प्रीत की डोर, न हो कमजोर ॥ ओ साथी " प्रीत "

१. चमन जो ऋषभ देव ने था सजाया,
फूला वहारो मे निखरा वह एसे। निखरा"
सीचा तपो वल से वीर प्रभू ने,
आज वह गुलशन उजड़ा है कैसे। उजड़ा"
वह कुर्वानिया न, महापुरुषो की भुलाओ ॥ आओ

२. दिगाम्वर, श्वेताम्वर, तेरापन्थी कोई,
कोई स्थानक वासी आज क्यो है। वासी"
इनमे भी हैं, गच्छ पन्थ अनेको,
भाई से भाई जुदा आज क्यो है। जुदा "
मत भेद यह सारे, दिलो से हटाओ ॥ आओ

३ फूट का रग, भयानक है देखो,
कोई भी इससे, पनपने न पाया। पनपने····
रावण के घर को, जब फूट ने घेरा,
सोने की लका को, खाक बनाया। उसने····
बुरा अन्त इसका, अभी से मिटाओ। आओ··

४ एक है जिनदेव, सिद्धान्त भी एक,
मजिल भी एक है, आज हमारी। आज····
कहे युवक मडल, जो मिल के चले हम,
'सुभाग' गूजेगी, आवाज हमारी। आवाज·
अहिसा का झन्डा, वह मिल के उठाओ॥ आओ·
शान हो एसी····

---

९. सम्राट चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न

तर्ज—रामचन्द्र कह गये सिया से (गोपी)

चन्द्र गुप्त राजा है पूछे—कौन मुझे बतलाएगा।
सोलह स्वप्न देखे है मैंने, उनका फल समझाएगा॥
भद्रबाहू कहे चन्द्रगुप्त से, ऐसा कलयुग आएगा।
देखे सोलह स्वप्न आपने, उनका यह फल आएगा॥

राजा ने पूछा हे भगवान मुझे आप सोलह
स्वपनो का अर्थ बताईए।

१ पहला स्वप्न देखा राजा ने, कल्प वृक्ष टूटी डाली।
काल भयानक युग मे होगे, मची होगी त्राही त्राही।

कही पे प्रलय हो जाएगी, पानी को कोई तरसेगा ॥
देखे सोलह स्वप्न·· ·····

२ दूजा सपना सूर्य अस्त का ज्ञान का होवेगा अन्धकार।
तीजा सपना चाँद को देखा, छेद छेद छलनी जैसा।
धर्म ध्वजा लहराने वाले, बीज फूट के बोवेगा॥ देखे···

३ चौथा साप भयकर, बारह मुह वाला काला।
बारह वर्ष का काल पडे, ना होगा कोई रखवाला।
पेट की खातिर दुखियारा, औलाद बेचकर खायेगा॥ देखे

४ पाचवा सपना देव विमान को उल्टा ही जाते देखा।
छठे सुपने रूडी ऊपर, कवेल फूल खिलते देखा।
पाखडी मौज उडायेंगे, और धर्मी धक्के खायेगा॥ देखे····

५ सातवें स्वप्न भूतनी नाचे, मधू शाला होगी ज्यादा।
स्वप्न आठवा धरती पर, देखा अग्नी का लशकारा।
कोई नगर लपटो मे सुलगे, कोई धरती मे धस जायेगा॥ देखे·

६ नवें स्वप्न नदी के अन्दर, पानी सूख गया देखा।
दसवे स्वप्न सोने के थाल मे कुतडा को खाते देखा।
धर्म थोडा रह जायेगा, धन नीच के घर मे आयेगा॥ देखे··

७ ग्यारहवा स्वप्न समुन्द्र को देखा, तोडी अपनी मरियादा।
स्वप्न बारवा हाथी ऊपर, बन्दर बैठा झूम रहा।
राजा प्रजा को लूट लूट, अपना काम चलायेगा॥ देखे

८ तेरहवें सुपने रथ मे, ज्योती की जोडी देखी।
चौदहवें सुपन ऊट के ऊपर राज सवारी है बठी।
धर्म कर्म ना माने कोई, अधर्मी राज चलायेगा॥ देखे····

९ स्वपन पन्द्रहवा रतन ढेर को, धूल मे है मिलते देखा।
सोलहवा स्वपन मे दो हाथी को आपस मे लडते देखा।
राजाओ मे युद्ध रहेगा, ज्ञानी युग मे छुप जायेगा ॥ देखे

१० चन्द्र गुप्त राजा ने सोलह स्वपनो का है फल जाना।
राज पाट देकर बेटे को, आपने है सयम ठाना।
लक्ष्मी कहे प्रभू चरणो मे है, जो प्राणी झुक जायेगा।
अमर रहेगा नाम सदा, वह मोक्ष की पदवी पायेगा ॥

———

१०. श्री सीमधर स्वामी वन्दना

तर्ज— सोना लै जा रे, चान्दी लै जा रे (मेरा गांव मेरा देश)

चन्दा लै जा रे, सन्देश लै जा रे।
ओ ·· महाविदह में मेरे स्वामी।
सीमधर जी से वन्दन कहना ॥ चन्दा ·

१ सत्य की माता के दुलारे, श्रेयास पिता हैं जिनके प्यारे।
शत पाच धनुप, काया सुवर्ण, कोमल रूप सुहाना ॥ चन्दा···

२. सुरनर, गणधर, देवी देवा, हर दम करते हैं जिनकी सेवा।
तू नित जाए, दर्शन पाए, उनका जहा विचरना ॥ चन्दा·

३ सागर वहते, पर्वत, चट्टानें, कोसो दूर राह अनजाने।
भाव मेरे मैं उडकर आऊँ, पर मुशकिल है आना ॥ चन्दा

४ जलबिन तरसे जैसे मच्छरिया, बिन बादल तडफे ज्यू बिजुरिया। जल
तुम दर्शन को मनवा तरसे, है 'सुभाग' दीवाना ॥ चन्दा··

११. श्री महावीर जन्म

तर्ज—दम मारो दम (हरे राम हरे कृष्ण)

वीर जन्म, मिल गाए हम ।
वोलो सुवह शाम, महावीर प्रभू नाम ॥
महावीर प्रभू··· ··

१ त्रिशला का लाल दुलारा, जन्मे वह तारन हारा।
पूरे हुए देखो स्वपने, चमका था एक सितारा ॥
आ ··· ·आ··· ··· वीर जन्म······

२ छाई हिंसा जुल्म भारी, पाखड धर्म मे जारी ।
पशुओ की क्या मानवो की, गर्दन पे चलती कटारी ॥
आ· ··· आ··· · ··वीर जन्म ···

३ प्रभू ने वाणी सुनाई, हर सू यह आवाज आई ।
खुद जीओ जीने दो सवको,सुख शाति जग मे थी छाई ॥
आ· ··· आ···· वीर· ······

४. त्यागी, तपस्वी वह ध्यानी, समत भावी महा ज्ञानी ।
युवक मडल गुण गए, 'सुभाग' वह शिव गामी ॥
आ· ·आ · वीर· · · ।

---

१२. जैन धर्म

तुमने पाया, हमने पाया, उसने पाया, सवने पाया ।
सवने पाया, क्या पाया· ····२···

जैन धर्म जो हमे जान से प्यारा है।
जैन धर्म, जो धर्म ही न्यारा हैं॥

१. आदिनाथ से वीर प्रभु तक, है चौवीस जिनेश्वर।
सब की महिमा न्यारी न्यारी, वीतराग परमेश्वर।
महापुरुष हुए कितने सारे।
त्यागी सन्त, मुनिवर हमारे।
ज्ञान के दीप करें उजियारे।'' ' ' उजियारे।
तुमभी करलो,हमभी करलें,आओ मिलकर सभी करले। सभी''''
क्या करले'' २''''नमस्कार इन सब को, हमारा है।
जैन धर्म' ''''''' ''

२. शौत्रजय, गिरनार, शिखरजी, तारगाजी गिरिवर।
समोसरे कही सिद्ध हुए हैं, तिर्थंकर, नर मुनिवर।
कितने पावन तीर्थ तारनहारी।
ऊचे पर्वतो पे, मन्दिर भारी।
दर्शन कर लेना, सब नर नारी। नर''''
तुमने देखा, हमने देखा, उसने देखा, सबने देखा। सब '
क्या देखा २ छिपा इन में इतिहास हमारा है।
जैन धर्म ''' ' ''

३ स्यादवाद और साम्यवाद यह, जिसका तत्व निराला।
आतम से परमातम होता, है सिद्धान्त विशाला।
कर्म फिलास्फी है लासानी,गूजती है अहिंसा की वाणी।
रखो समता भाव हर प्राणी, हर प्राणी। हर''
तुमने सुना, हमने सुना, उसने सुना, सबने सुना। सब '
क्या सुना '''२ '' इस पे चलना कर्त्तव्य हमारा है॥
जैन धर्म ''' ''''''

४ खूब चमकता धर्म सितारा, शान जगत मे होती।
गर न विखरे होते हम यह, इक माला के मोती।
फिर एक सभी हो जाए, गच्छ पंथ यह भेद मिटाए।
युवक मडल वस जैन कहलाऐ। कहलाए'"
तुम भी आओ, हम भी आए, इक झडे के नीचे आए। नीचे"
इक मार्ग, 'सुभाग' हमारा है॥ जैन धर्म'

———

१३. भाग्य परीक्षा

तर्ज—अव तो हम अपनी (पाकीजा)

अव तो हम तुमको भक्ति में ध्या के देखेंगे।
सर झुका के देखेंगे, शरण आ के देखेंगे॥ सर

१. दर वदर अव प्रभू भटका, नही यूं जाता है।
अव तो आवागमन से, दिल मेरा घवराता है।
सहे दुख है सदा, शिव सुख भी पा के देखेंगे॥ सर

२ आप भी थे, कभी हम से, यही विचरते थे।
कर्मो को जीतने खातिर, घोर तप करते थे।
हम भी कर्मो को, अपने खपा के देखेंगे॥ सर'"

३. अष्टापद पे गया रावण, भक्ति नृत्य गान किया।
हो गया मस्त वह, तिर्थंकर गोत्र वाध लिया।
भाग्य हम अपना, अव आजमा के देखेंगे॥ सर

४. भाव मेरे हैं यह, पर आस कव पूरी होगी।
शक्ति दोगे तो, फिर न कोई मजवूरी होगी।
दिल मे तस्वीर तेरी, 'सुभाग' वसा के देखेंगे॥ सर "

१४ ज्ञान की बातें

तर्ज—न इज्जत की परवाह (बेईमान)

शुभ मार्ग पे चलना, कुछ सीखो बातें ज्ञान की ॥
जय बोलो, भगवान की, जय बोलो ॥ जय· ··

१ प्रभू की भक्ति, पूजन करना, भजन भी हमने छोडा ।
नही सेनेमा जाना भूला, मन्दिर से मुख मोडा ।
व्रत तपस्या की शक्ति, हम अपने मे नही पाते ।
धर्म कथा भी नही सुहाती, नावल २ पढ जाते ।
पर भव मे क्या ले जाना ?
कुछ फिकर करो, सामान की ॥ जय बोलो ·

२ नही देश की सच्ची सेवा, झूठे रोब जमाते ।
आफिस मे जाकर रिश्वत से जेब गर्म कर लाते ।
बैठ दुकान पे, कम तोलें हम, झूठी बात बनाते ।
देखे अपनी झूठी कमाई, रोकड रोज मिलाते ।
पुण्य पाप है कितना ? इसका भी करो अनुमान भी । जय· ·

३ दया दान और सम्य भाव, और त्याग को हम हैं भूले ।
होकर फैशन मे अन्धे हम, चटक मटक मे फूले ।
भक्ष अभक्ष विचार नही, होटल मे खाना खाते ।
पंच इन्द्री के दास बने, हम संयम नही कमाते ।
क्या यूं ही खो दोगे ? योनी पाई इन्सान की ॥ जय ·· ·

४ माता पिता की सेवा, आदर, कहते धर्म पुराना ।
बेटा बाप से लडे, सभ्यता, विनय का नही जमाना ।
गुरु अगर मिल जाए कही, तो उनसे आंख चुराते ।

नमस्कार करने मे देखो, दिल मे हम शर्माते।
न इज्जत की परवाह, न फिक्र कोई अपमान की। जय........

५ त्यागों एसी रीत बुराईया, इस मे शान हमारी।
युवक मडल कहता, अब न विगडे आन हमारी।
उन वीरो को भूल गए, कैसे थे त्यागी ध्यानी।
सती चन्दना, सोमा सी, बाहुबल, सकुमाल से ध्यानी।
'सुभाग' बात न भूलो, धर्म, कर्म, ईमान की। जय........

---

१५ वीतरागी मूरत

तर्ज—शरीफों का जमाने (शराफत)

नही तुम सा जमाने मे, मिला ना देव है दूजा।
जब से मूरत देख ली मैंने॥ यह मूरत....
तुम्ही मन मे समाए हो, तुम्हे चाहा तुम्हे पूजा। जब से मूरत...

१ न भोगी है, न लोभी है, न द्वेशी है, न रागी है। न द्वेषी.....
है सच्चा देव त्रिभुवन मे, तू ही तो वीतरागी है. तू ही..... ..
तूझे पाना मेरी मजिल, न कोइ राह अब दूजा॥ जब से.....

२ यह कैसी शान्त मुद्रा है, छवी कैसी है मतवाली। छवी.. . ..
है जगमग ज्ञान की ज्योति, यह मूरत सब गुणो वाली। यह... ....
है सिंहासन पे पद्मासन, खिला हृदय कमल मुरझा। जब . .. .

३. तेरे दर्शन को पाने से, कर्म दल चूर होते है। कर्म..............
मिटे दुखरे है भव भव के, द्वार मुक्ति के खुलते हैं। द्वार..... ......

हमारे माननीय अध्यक्ष
एवं
गीतकार
श्री लक्ष्मीचन्द जी भंसाली

हमारे मंत्री, हमारे गीत के सम्पादक व गीतकार
श्री सुभागचन्द नाहटा

हमारे उपाध्यक्ष
एव सहयोगी
श्री केशरीचन्द जी सेठी
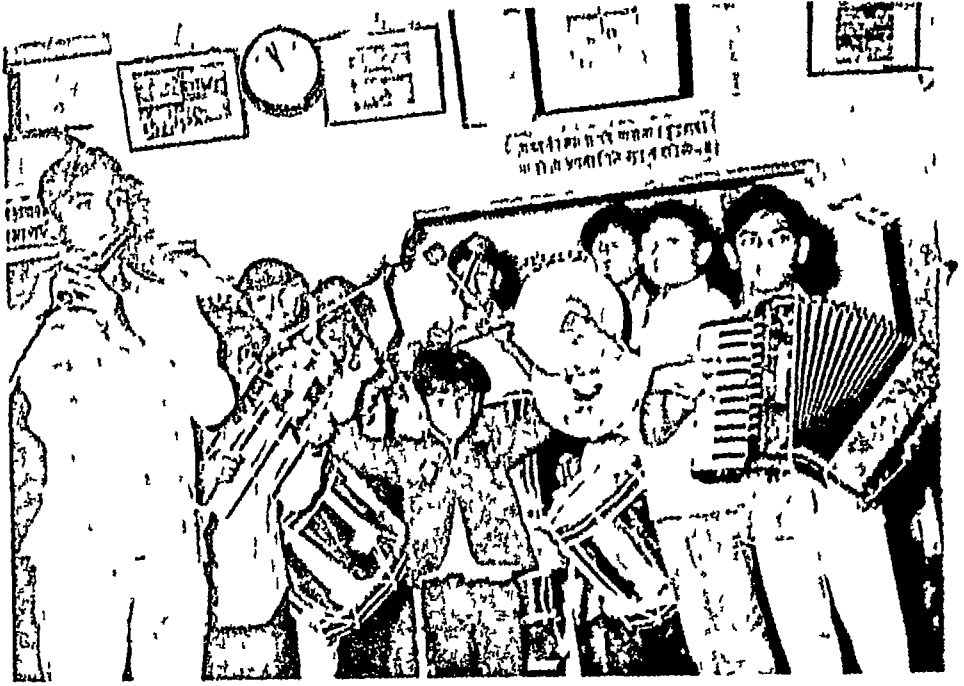
↑ हमारा नव स्थापित बैण्ड जो समाज सेवा के लिए सदा अग्रसर रहेगा।

↓ हमारी आर्केस्ट्रा पार्टी विभिन्न वाद्य यन्त्रों के साथ।

तेरा दरबार भक्तो की, है भक्ति से सदा गूंजा ॥ जब से..........

४. मिला भाग्यो से मानव भव, है यह जिन धर्म पाया है। है........
मिली भक्ति तेरी भगवान, तेरा ही शरण पाया है। तेरा ......
बने 'सुभाग' तुम जैसा, अब तो मन मे यही सूझा ॥ जब से.........

---

१६ पश्चाताप

तर्ज—वादा तेरा वादा (दुशमन)

दोहा

सचाई छुप नही सकती, बनावट के असूलो से।
खुशबू आ नही सकती, कभी कागज के फूलो से॥

मा के जब पेट मे था, उल्टा लटके हुए था।
तडप तडप के था यू रो रहा, वादा है तेरा वादा। वादा २...

मैं फिर कभी न पाप करुंगा।
था जीव सीधा, सादा, वादा तेरा वादा॥

१ तूं जब जवान हुआ, यह सब कुछ भूल गया।
अनेको पाप किए, न कुछ विचार किया।
तुने व्योपार किया, काला बाजार किया।
तूने कई झूठ बोले, और अत्याचार किया।
किसी को कमती तोला, किसी को कम नपाया।
किसी से कुछ बताया, है आपसे मे लडाया।
कुछ भी न तूने सोच किया, तोडी तूने मरियादा॥ वादा....

२, कसाई बन गया तूं, है कत्ले आम किया।
किसी का डर ना तुझे, जीना हराम किया।
लेके बन्दूक तूने, हाथों शिकार किया।
जाके तूने वनो में, कैसा उजाड़ किया।
डाकू बन कर के तूने, है कितने घर को लूटा।
तेरे हाथों से जाने, किसका तकदीर फूटा।
तूने ध्यान ही कभी ना दिया। तू तो बन रहा है दादा ॥

३. तूं हुकमरान बना, ना के इन्सान बना।
हुकूमत बल से तूने, है बेहद जुल्म करा।
तूने रिश्वत भी खाई, सचाई है छिपाई।
बेगुनाहों पे तूने, मचाई है तबाही।
लाखों का धन कमाया, बुरे कामों मे उड़ाया।
विषय भोगो मे अन्धा, तूने खुद को गिराया।
क्या है यही इनसाफ़ तेरा, अब क्या है इरादा ॥ वादा तेरा

४. ना जाने किस जन्म में, तूने है पुण्य कमाया।
कि मानव भव यह तूने, है इस जनम पाया।
तेरे जुल्मो सितम की, कहानी है यह सारी।
है तेरा दिल भी काला, तेरी सूरत भी काली।
ना प्रभु नाम लिया, ना अच्छा काम किया।
कहे 'लक्ष्मी' ऐ बन्दे, खुद को बदनाम किया।
बोल क्या विचार तेरा, करोगे पुण्य ज्यादा ॥ वादा तेरा····

---

१७ वीतराग शरण

तर्ज—ओ मेरी, ओ मेरी शर्मीली (शर्मीली)

ओ मिली, ओ मिली, तेरी शरण मिली।
जैन धर्म मानव जन्म·····२······· ॥

१ भटकत भटकत, युग बीत गए। बीत
जाने कितने जन्म, हुए, मिट गए। मिट ·
कभी नर्क निगोद के दुख सहे। दुख ·
भाग्य से आए यहा ॥ ओ

२. झूठा जग कोई न, साथ है। साथ····
प्रभू तू ही अनाथो का नाथ हैं। नाथ····
भव जल तिरने की आस है। आस····
देव तारक तुम महान् ॥ ओ मिली

३. इस भव मे न गर, तिर पाऊ मैं। पाऊ··
तेरी शरण ही भव भव चाहू मैं। चाहू····
'सुभाग' मुक्ति पद पाऊ मैं। पाऊ मैं····
तुम को ही ध्याऊ यहा ॥ ओ मिली···

---

१८ प्रभू महावीर का त्याग

तर्ज—काची ओ काची रे (हरे कृष्ण हरे राम)

त्यागी हो त्यागी रे, वीर बने त्यागी।
झूठे जहा को छोड के ॥ ओ झूठे···
त्यागा हो त्यागा रे, राज्य सुख त्यागा।
ममता से नाता तोड के ॥ ओ····ममता···

१ बचपन से यह मन वस किया, आई जवानी यह जग तज दिया।
दुखो का मारा, ससार असारा।
दिया वर्षी दान दिल खोल के ॥ ओ·· त्यागी···

२ घोर तप से यह तन, तपा लिया,
घाती कर्मों को, तू ने खपा लिया। ओ....
केवल ज्ञानी, बने वह ध्यानी। केवल.. ...
हुए ज्ञाता प्रभु, तीन लोक के॥ हो.. त्यागी...

३. अब तो नगर, नगर गांव जाने लगे।
वाणी अमृत वर्षाने लगे।
अहिंसा धर्म प्यारा, गूंजा यह नारा। अहिंसा...
मिटी त्राही, जीवो की चहूं ओर से हो॥... त्यागी

४. चौवीस्वें तिर्थंकर कहलाए,
पावापुरी निर्वाण, प्रभू पाए।
जगमग दीवाली, छाई खुशहाली। जग....
'सुभाग' नमे कर जोड के॥ हो ...त्यागी...

---

१६. शालीभद्र की अमर गाथा

तर्ज—ढोल सजना ढोल जानी (मरियादा)

अजी सुन लो सुनाऊँ मैं एक कहानी,
आज सुनना बात पुरानी आज ..
नगरी राजगृही थी एक सुहानी—आज सुनना..

१ इक दुखियारी गुजरी थी वह स्वाभिमानी
दुनियां उजड़ गई, रही मम्मता निशानी
मेहनत मजदूरी करे, भरती वह पानी

लाल की खातिर करी पूरी कुरबानी
बेटा गाये चराये, बीते यह जिन्दगानी ॥ आज सुनना....

२. इक दिन बेटा मा से मीठा मीठा बोले है
खाऊ गा मैं खीर अज मन मेरा डोले है
चुप सी लगा ली मा ने कुछ नही बोले है
लाऊँ कहा से मैं मन ही मन रोये हैं
अब तो आई सामने, यह परेशानी । आज सुनना . .

३ जिद करी बेटे ने तो माँ समझाती है
माने नही माता घर घर जाती है
दूध चोनी चावल लाके, खीर वह पकाती है
खीर का भगोना देकर माता, चली जाती है
ठन्डी करके है खाने की, अब है ठानी । आज सुनना....

४ पच महाव्रत धारी मुनी आ जाते हैं
मास क्षमण था धर्म लाभ सुनाते हैं
सगम बालक के भाव चढ जाते हैं
उच्य भावो से सारी खीर बोहराते हैं
उच्य भावां ने बान्धी, यह पुन्यवानी । आज सुनना.

५ खीर का भगोना देखा, मा ने आ के, खाली है
बोली मेरे लाल तू ने खीर सारी खाली है
नजरे झुकाई कोई बात ना बताई है
बेटा मेरा भूखा हाये नजर लगाई है
बुरी लागी नजर, छूटी मा से निशानी । आज सुनना.

६ सेठ घर जा के फिर जन्म लियो है
शाली भद्र नाम भूला रत्नो का भूले है
धन का ना पार कोई सेठ गुजर गयो है

देवगति जाके अपने लाल को निहारे हैं
पेटी निनयानवें आभूषण रोज भिजवनी। आज सुनना...

७ छोटी सी उमर मे माँ की मम्मता निराली थी
३२ कुवारी सग शादी रचाई थी
जग के सुखो में कोई, कमी नही पाई थी
मोह की यह डोरी मा ने, गले मे लगाई थी
ऐसे सुख मे हैं वीते यह जिन्दगानी। आज सुनना....

८ आया है श्रेणिक के द्वारे इक वजारा
रतन कम्वल लाया सुन नाम तिहारा
वहुमूल्यवान है राजा ने विचारा
वोले नही हिम्मत लेलू कम्वल तुम्हारा
कौन लेगा यह कम्वल, दिखे ना वह प्राणी। आज सुनना...

९ रास्ते मे जाते हुए धीरे से पुकारा
लाया रत्न कम्वल लेलो आया वन्जारा
माता ने वुलाकर पूछा वोल कितने लाया
१६ के ३२ वनाये वहुओ को भिजवाया
चुभते तन को फेंके सवने, ले जाये महतरानी। आज सुनना....

१० नदी के किनारे जाके धोवे महतरानी है
दूर से राजा ने देखा उसे वुलवाई है
वोल यह कहा से लाई वात यह सुनाई हैं
नगर में है मेरे ऐसा कौन भाग्यशाली है
उनके दर्श पाऊँ चरचा सवकी जवानी। आज सुनना....

११ खवर जो सुनी माता घर को सजाती है
राहो में है फूल विखेरे इत्तर छिड़कवाती है

राजा घर में आये माता लाल को बुलाती है
सातवे महल में जाकर लाल से मिलाती है
बोली यह हैं स्वामी इन की यह है राजधानी। आज ...

१२. हुआ अब विचार मन मे स्वामी मैं बनूगा
झूठे जहान में अब ना जीऊ गा
एक एक पत्ना को मैं रोज ही तजू गा
कर्मों के बन्धन को मैं अब तोड दू गा
३२ दिन मे है त्यागी ३२ रानी। आज सुनना....

१३ तज के सुखो को सारे बने वैरागी
सब के दिलो मे एसी भावना जागी
शिवपुर का स्वामी बनु गा लगन यही लागी
घोर तपस्या से है, काया को जलादी
मोक्ष गामी बनें वह शिवपुरी स्वामी

१४ चार दिनो की यह जिन्दगानी है
सुन ले ओ पगले, दुनिया फानी है
शालीभद्र की रहेगी अमर कहानी
युवक मडल कहे बनो आप दानी
लक्ष्मी गाये महिमा, देवो ने बखानी

---

२० समाज को बदल दो

तर्ज—दुनियां मे जीना है तो (हाथी मेरे साथी)

दुनिया मे आए, शुभ काम करो प्यारे।
समाज को बढाओ ऊचा नाम करो प्यारे।

गर यह बुराईया, अब न मिटेगी,
तुमको यह दुनिया जीने नही देगी।
खुद भी समझ, दुनिया को समझारे ।। दुनिया....

१ एसे भी है पेट भर, रोटी नही मिलती।
तन ढकने को, इक धोती नही मिलती।
पास है जो धन, कुछ दान करो प्यारे ।। खुद...
गर यह बुराईया..........

२ फैशनो मे अन्धा, यह जमाना हुआ जाए।
सभ्यता विनय का, अब नाम उड़ा जाए।
धर्म कर्म का भी ध्यान करो प्यारे। खुद...
गर यह..........

३ जान औरो की समझ, अपने बराबर।
किसी जीव को सताना, जुल्म सरासर।
अहिंसा की आवाज को, बुलन्द करो प्यारे ।। खुद....
गर यह ....

४ शादियो मे शान शौकत बड़ी जाए।
टीका दहेज की, रेट चढ़ी जाए।
बेटी बेटो का ब्योपार, बन्द करो प्यारे।
गर यह बुराईया ....

५, जागो नौजवानो, रूढी बन्धनो को तोड़ो।
देश, जाति, धर्म की आन को न छोड़ो।
कहता 'सुभाग' न आराम को प्यारे।
गर यह..................

---

२१ हमारा गौरव

तर्ज—है प्रीत जहां की रीत सदा (पूरब पश्चिम)

जिन धर्म से सच्ची प्रीत अगर ? सुन लो यह गीत सुनाता हूँ।
जिन धर्म प चलने वाला हू, उसका यह हाल बताता हू॥

१. तीर्थंकर है चौबीस पूज्य, झण्डा जग मे था लहराया।
उपसर्ग हुए है कष्ट सहे, जिन धर्म को खूब है चमकाया।
वह देव हमारे वीतराग, मैं नित उठ, ध्यान लगाता हूँ॥ ..जिन

२ सूली से टरे न सेठ सुदर्शन, श्रीपाल दुःख बहुत सहे।
मुनि पाच सौ, कोल्हू मे पिले, निज धर्म पे अपने अटल रहे।
बने त्यागी वैभव को तज, बना, शालीभद्र गुण गाता हूँ॥ जिन

३ चन्दन बाला, दुख बहुत सहे, महावीर का ध्यान है ना छोडा।
प्रभु भक्ति मे पति का कोढ मिटा, मैना सुन्दरी सग ना तोडा।
सोमा, अजना सती नारियां, वह इतिहास दोहराता हूँ॥ ..जिन

४ हम त्याग तपस्या के बल से, अपने दुष्कर्म खपाते है।
त्यागी साधू मुनिराज हमारे, ज्ञान की धार बहाते है।
उन पे हमको है नाज सदा, मैं नित नित शीश झुकाता हूँ॥ ..जिन

५ वह सत्य अहिंसा का नारा, महावीर ने हमें बताया था।
गाधी जी ने, उसके बल से, भारत आजाद कराया था।
हिंसा को मिटाना है जड से, यह नेताओ से कहता हूँ॥ ..जिन

६ श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानक, यह तेरापथ बने कैसे।
हो जाओ एक, गच्छ भेद, घृणा और द्वेष यह सब पनपे कैसे।
यह देख दशा 'सुभाग' कहे, कुछ कहते हुए शर्माता हूँ॥...जिन

---

२२ जरुरत है

तर्ज– मेरे सपनों में (जानवर और इन्सान)

मेरे नयनों में, इक मूरत है, मेरे मन में बसी, इक मूरत है।
मुझको, उसी की जरुरत है॥ मेरे…

१. देव ऐसा हजारो मे एक कोई,
जिसमे राग न हो, न हो द्वेष कोई।
वह तो हैं, वीतरागी, हितकारी हैं त्यागी।
उनके दर्शनो की जरुरत है॥ मेरे… … …

२. चाद सूरज मे भी, देखे दाग कई।
उसमे दोष नही, न ही दाग कोई।
वह तो हैं निर्विकारी, त्रिभुवन में जयकारी।
उन के ही शरण, की जरुरत है॥ मेरे……

३. महावीर, शीतल या अदीश्वर की।
प्रभु पार्श्व या कोई तिर्थंकर की।
है सब की, छवी न्यारी, दु:ख भंजन हितकारी,
सच्चे देव हैं, उनकी जरुरत है॥ मेरे……

४. हो, निरागी, फिर भी मोह लिया मेरा मन।
हर पल हम रहे, भक्ति में मग्न।
तुम्हें पूंजू, तुम्हे ध्याऊं, 'सुभाग' तिर जाऊं
तिरने, के लिए, अब जरुरत है॥ मेरे……

—— —

२३ दान, शियल, तप भावना की महिमा

तर्ज—मैने देखा तुमने देखा (दुशमन)

मैने देखा तुमने देखा, इसने देखा, उसने देखा, सबने देखा
क्या देखा क्या देखा, इक भगवन जो सबको ही प्यारा हैं
इक भगवन जो सब से ही न्यारा हैं

१ अष्टा पद पर्वत पर इकदिन, रावण ने गुण गाया था।
वीणा की थी तार टूट गई, नम्स की तार लगाया था।
सगीत को मन मे रमाया, है ध्यान प्रभु का लगाया।
तिर्थंकर नाम कमाया कमाया, मैंने देखा, तुमने देखा। '
क्या देखा २, सगीत भी तिरने का सहारा है॥
इक भगवन्

२ अपने तन का दान दिया था, इक दिन मेघरथ राजा ने
एक कबूतर की रक्षा की, पुण्य कमाया उस भव मे।
तिर्थंकर पद है पाया, श्री शान्ती नाथ कहलाया।
लाखो को पार लगाया, लगाया, मैंने देखा, तुमने देखा' '
क्या देखा क्या देखा, दान देने से उसे मिलता किनारा है॥
इक भगवान' '

३ एक एक महीने का व्रत, नन्दन मुनविर ने शुरू किया।
२० थानक का किया अरावन, तिर्थंकर पद उन्हे मिला।
महावीर प्रभु कहलाये, सारा जग है गुण गाये।
भव सागर से तिरजाये २॥ मैंने देखा तुमने देखा''
क्या देखा २, व्रत तप से, खुले मोक्ष का द्वारा है॥
इक भगवान ' ''''

४ उच्च भावना भाते भाते, केवल ज्ञान को पाया है।
चक्रवर्ती की रिद्धी पाकर, पल मे कर्म खपाया है।
रग महलो से जी घबराया, है भावो ने पल्टा खाया।
राजा भरत ने शिव सुख पाया २, मैंने देखा तुमने देखा....
क्या देखा २ उच्च भावो ने लाखो को तारा है ।।

इक भगवान..

५. शील व्रत का पालन करते, विजय सेठ सिठानी मोक्ष गये।
ब्रह्मचर्य का नियम दोनो को, यौवन के दिन निकल गये।
यह भेद ना कोई जाने, तिर्थंकर देव बखाने।
'लक्ष्मी' की जो अर्ज है माने २, मैने देखा, तुमने देख..
क्या देखा २, यह जो व्रत हैं तिरने को सहारा है।

इक भगवान....

---

२४ भोग है रोग

तर्ज —मुझे एसी मिली हसीना (जानवर और इन्सान)

हमे मुक्ति क्यो मिली न,यह नैया कभी तिरी न ।
विषय भोग हमे रुलाएँ, न विषयो मे जीना ।। न विषयो...

१ यह भोग है रोग बढाते है सोग,
मत प्रीत तू इस से लगाना।
भोगें पलभर आनन्द, फिर पचछताए मन।
शान्ती मिलेगी कही न ।। न विषयो....

२. हो के विषयो मे अन्ध, देखो मस्त मलग,
हाथी भी है, पकडे जाते।
रसना के ही वश, मीन पाती है कष्ट।
दुश्वार है उसका जीना ॥ न विषयो···

३ सुगन्ध मे फस, रहा भवरा तडप।
चक्षू विपय मे, जलते पतगे।
वश इन्द्रीयकर्ण, मृग का हो मरण।
होना गुलाम कभी न ॥ न विषयो····

४. एक विपय के वश, जो जाते हैं फस,
दु ख पाते हैं, जान गवाते।
पाच इन्द्रीयो को, जो भोगे है वो।
'सुभाग' नरक मे हो फिरना ॥ न विषयो····

---

२५ संसार असार

चल चल चल मेरे हाथी (हाथी मेरे साथी)

पल भर के तेरे नाति, यह तेरे साथी।
फसा क्यो, मोह जाल मे, चले आ प्रभु द्वार,
मन मे तू विचार, प्रभु है तारनहार। पल ·

१ भाग्यो से मिलता है जो, मानव जन्म है यह वह।
अब तो सम्भल के तू चल, फिर न भटकते रहो।
जाने कब का, किस भव का,
है यह पुन्य कमाई का फल ॥ चल' 'पल····

२. कोई नही यार है, करता किससे प्यार है।
स्वार्थ के साथी सभी, कोई न गमखार है।
अकेला आए, अकेला जाए,
रह जाए गे यू ही महल· ·चल॥ पल· ··

३ झूठा है सारा जहान, सच्चा प्रभु नाम है।
मुक्ति को पाता वही, जो करता प्रभु ध्यान है।
पगले, कुच्छ करले, 'सुभाग' जन्म हो सफल।
चल· पल··

---

२६ मेला श्री फल वृद्धि पार्श्वनाथ

(अलग अलग प्रान्तों से आए हुए लोगों का सम्मिलित गीत)

तर्ज—ट्विन्कल ट्विन्कल लिटल स्टार (पूरब पश्चिम)

टम्पल जगल बना विशाल, बसे फलोदी पार्श्वनाथ ॥

अंग्रेजी

१. वैलकम वैलकम पारशनाथ, वुई आर स्टैंडिंग हियर।
ओ माई लार्ड इज पारशनाथ ॥ टैम्पल·····

पजाबी

२. मेला वेखन आये हा, असी पंजाबी हां तेरा दर्श नूं आये हा।
आये देश पजाब तुए, फुल हृदय कमल लेके तेरे दरते चढ़ाने हा।

मारवाडी

३. आपा दरशन पावा ला, पारस प्रभु जी री।
चालो पूजा रचावाला, टोल्या भक्तारी आई।
आपा राजस्थान रा ही, गीत सुनावा ला ॥ टैम्पल··

पूर्वी

४ हम का जन्म सफल हुई वे, तुहार दर्शन कारण ।
हम तो पूरब से आईवे, हमरे मन मा उमग उठे ।
पार्श्व प्रभु जी की, अज महिमा जग गाई वे ।। टैम्पल ·

गुजराती

५ मने सारू लागे छे, पारस प्रभु जी नी मुरत प्यारी लागी छे ।
गुजरात थी आव्या छू ,ग्राम मेडता मा मेला मोटो भराये छे ।।
टैम्पल · ····

मुलतानी

६ तुवाकु गाल गुरेन्दे हैं, माडा दिल खुश थीन्दे
जेडे वेले मन्दिर वेन्दे हैं ।
मुलतानी सडीण्दे हैं, धर्म दा कम होवे ।
सारे मिलके करें दे हैं ।। टैम्पल

सब मिल के

७ हमतो भारत वासी हैं,
पूरब पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के निवासी हैं ।
'लक्ष्मी' गुण गान करे मडल अर्ज करे ।
गीत तेरे ही गाते हैं ।
दूर दूर से आते है, गुण तेरे ही गाते है ।

---

२७. चन्दन वाला की पुकार

तर्ज—चलते चलते, मुझे कोई (पाकीजा)

मुझे दर्शन मिल गया था, आए वीर चलते चलते । आए····
यह कदम क्यो मुड गए हैं, मेरी ओर वढते वढते । मेरी····

१. प्रभु मेरी क्या खता है, जो हुई न आस पूरी । जो····
कली आज मेरे मन की, मुरझाई खिलते खिलते । मुरझाई·

चन्दन वाला, चौदह अविग्रह धारी भगवान श्री महावीर स्वामी को उरद वाकुले बोहराते हुई ।

२. जकडी हूँ वेडियो से, हाथो मे हथकडी है । हाथो····
दुखडा सुना रहे हैं, अव नीर झडते झडते । अव······

३. प्रभु ने अभिग्रह पूरे, देखे तो लौट आए । देखे···
वन्धन सभी है टूटे, चरनो मे पडते पडते ।। चरनों···

४ 'सुभाग' भाग्य जागे, दीक्षा, प्रभु से धारी । दीक्षा
है देव गति पाई, कर्मों से लडते लडते । कर्मों···
मुझे दर्शन ·····
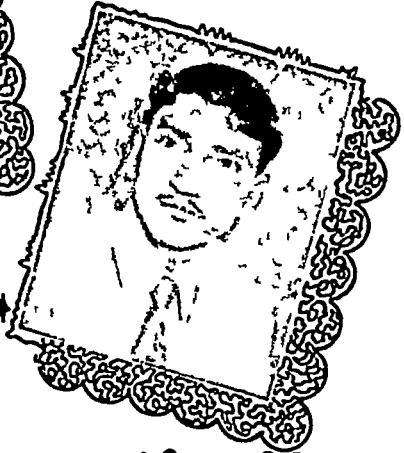
हमारे सहयोगी
सयुक्त मंत्री
श्री राजकुमार सुराना
हमारे कोषाध्यक्ष
श्री चम्पालाल बेगाणी
बी.काम
सयोजक, संगीत उपसमिति
श्री सत्यपाल
हमारे सेवादल के
संयोजक,
श्री नेमकुमार जैन
साहित्यालंकार, एम.ए

मडल द्वारा आयोजित सभाओ मे अध्यक्ष पद पर बोलते हुए (ऊपर) श्री के एल. जैन (नीचे) श्री गुमान मल जी मालू ।

२८ अनमोल जन्म

तर्ज—मेरी प्यारी बहनिया (सच्चा झूठा)

बाधे पाप गठरिया, छोटी सी उमरिया ।
भार अब तो यह हल्का बना जा ।
आ जा आ जा, प्रभु द्वार आजा ।
अपना जीवन, सफल यह बना जा ।। आ जा....

१, प्रभु के द्वार, प्रभु दर्श मिलेंगे ।
दर्श मिलेंगे, दुष्टकर्म कटेंगे ।
कर्म कटेंगे, भव फन्द मिटेंगे ।
मुक्ति का खुलेगा दरवाजा ।। आ जा

२ झूठी काया माया, झूठे बन्धू और मितुवा ।
सग कछु जाए नही, माता नाही पितुवा ।
भगवान रे प्रीत कर, सच्चा है मीत ।
अब तो मन मे, उसी को बसा जा ।। आ जा....

३. देवता तरसें, कब मानव भव आएगा ।
भाग्यो से मिले, फिर पाए या न पाएगा ।
'सुभाग' भजन, कर ले तू यत्न ।
शुभ अवसर है पुण्य कमा जा । आजा ...

---

२९ आत्म से परमात्म

तर्ज —दुनियां में, यारों को (अपना देश)

दुनिया, मे आके जो, भक्ति मे ही खो जाता है ।
फिर तो वह, आत्मा से, परमात्मा हो जाता है ।।

१. तिर्थंकर भगवन्तो ने, यही था ध्यान किया।
सयम तपोबल से, कर्मों को चूर किया ॥
ध्यालो ·········ध्यालो······· ····प्रभु गुण गालो।
कर्मों के, कटने सें, दुख सभी मिट जाता है ॥ फिर·····

२ दान शियल व्रत तप, सब धर्मों का है यह सार।
पाले जो भी भविजन, कमाता वह पुन्य अपार ॥
ध्यालो, ध्यालो, प्रभू गुण गालो ।
बचे जो, पापो से, मुक्ति को वह पा जाता है ॥ फिर····

३ मानव जन्म ही मिले, देवता भी यह कहे ।
हम को तो यह मिल गया, फिर बेफिक्र क्यो रहे ॥
ध्यालो, ध्यालो, प्रभू गुण गा लो ।
साधन बस, यही है, 'सुभाग' सफल जो बनाता है ॥ फिर····

---

३० प्रभु दर्शन

तर्ज :—आ मेरे हमजोली आ (फिल्म जीने की राह)

आजा प्रभु के द्वारे आ, गीत प्रभु के प्यारे गा।
सुवह शाम हर वारो मे, पर्वों मे त्यौहारो मे हो...

तू दर्श प्रभू के पाना ॥ आओ····आहा
मिल गाओ· · जय जय · ·· आ जा ····

१ प्रभू दर्शन सुख सम्पदा, प्रभु दर्शन नवनिध।
प्रभू दर्शन से पामिए, सकल पदार्थं सिद्ध ॥
आ प्रभु गुण गा····२····॥ आजा प्रभू ···

२ सूली के ऊपर चढ बैठा, सुदर्शन सेठ व्रतधारी।
प्रभु का सिमरन करते सूली, बनी सिंहासन भारी ॥
जय जयकार हुआ' २ '॥ आजा प्रभू '

३ मटके के अन्दर सर्प, पति ने, सोमा सत्ति को ढसने को डाला।
ध्यान लगा सोमा ने निकाला, बन गई फूलो की माला।
वह शर्मा गया ' २ '''॥ आजा प्रभू' '''

४ मन्दिर के अन्दर जा पहुचा, मैना सग श्रीपाल वह कोडी।
नव पद का जो ध्यान लगाया, बन गई काया गौरी
सब दुख मिट गया'' '२ ॥ आजा प्रभू'

५. अग्नि कुण्ड पर जा बैठी, सती सीता राम की प्यारी
ध्यान लगाते वर्षा बरसी, कमल खिला सुखकारी ।
सब भ्रम मिट गया'' २ ॥ आजा प्रभू

६ भगवन् के द्वार पे जो आ जाए, दुख चिन्ता सभी मिट जाए।
शुद्ध मन से "सुभाग" जो ध्याए, भव सागर तिर जाए।
क्यो भरमा रहा २' ॥ आजा प्रभू

---

३१ आत्म कामना

तर्ज . - तेरे बिन जिया न लगे, आ जा रे (फिल्म परदे के पीछे)

दर्शन बिन जिया न लगे, प्रभु जी, जिन जी।
अब तो ज्ञान दीया रा जले, प्रभु जी....... ... ॥

१. द्वार तुम्हारे जव मैं आऊं, मन ही मन मुस्काऊं।
देखू सुन्दर मूर्ति तेरी, रुप तुम्हारा पाऊ ॥
निर्विकारी और वीतरागी, गुण देखू शीश नमाऊं।
गुण देखू शीश नमाऊ ॥ प्रभू जी .. . ...

२ मैं फूल हू उस पतझर का, जिस पे कभी वहार न आई।
मैं काल अनादी से भटकत हू, देह अनन्ता पाई ॥
धर्म की कलिया खिल जाए, शुभ योग यह शुभ घडी आई।
शुभ योग यह शुभ घडी आई ॥ प्रभ् जी...........

३ तुझ रग मे मैं रग जाऊ, वस और कछु न चाहूँ।
सयम की शक्ति हो, कर्मों से मैं लडूं खपाऊं ॥
'सुभाग' राग न द्वेश हो, मैं वीतरागी दशा को पाऊं।
वीतरागी दशा को पाऊ ॥ प्रभू जी.... ....

---

३२. विभिन्न प्रान्तों के जैन भाईयों का संवाद

ओ मादरे वतन, मिला हम को जैन धर्म
प्रभु वीर का जन्म, मिलकर मनाते हम

मारवाड़ी

१ म्हारो प्यारो मारवाड़। म्हारो" ... ...
राजस्थान री धरती ऊपर मन्दिर भारी विशाल
धर्म ध्वजा लहरावा वाला, विचरे साधु सन्त
ऊँचा ऊँचा डूंगर सोहे वर्षे सावण री फवार ॥ म्हारो

गुजराती

२ मने सारू लागे छे म्हारो देश गुजरात
पगले पगले सिद्ध गया छे, घरती तीरथ धाम
शत्रुजय गिरनार तारगा, महिमा छे अति महान
घर घर धर्म री गगा वर्षे उपदेशे मुनिराज ॥ म्हारो ''

पूरबी

३ हमरा देश बिहार भलो है, जहा वीरनिर्वाण भयो है
इहा नदियो मे लहर उठे, खेतन मे किसान जुटे
पावापुरी राजगिरी शिखर जी की महिमा कहयो है,
यह घरती है हमरी महान, विचरे तिर्थंकर बीस इहा
दरश जिसने पायो, जन्म सफल भयो वा को हैं ॥

पजाबी

४ हरिया भरिया खेता वाला, साडा देश पजाब,
मेले लगदे लाशें वजदे नहर है उथे चनाव
जैनी हिन्दु सिक्स इसाई सव दा हैगा प्यार
दया धर्म दी महिमा दसदे साडे साधू सन्त
वीर प्रभु दा जन्म मनादे सव मिल करन प्रचार
क्यो मैं झूठ बोलिया '

सब मिल के

५ अज खुशियो का दिन है आया मिल जन्म वीर का मनाया
हम जैन है भारतवासी, चाहे प्रान्त किसी के निवासी
न फरक ना फिरका परस्ती कहे मण्डल हैं हम सव भाई
लक्ष्मी' ने वीर गुण गाया, आज खुशियो का दिन आया

३३ तीर्थ यात्रा

तर्ज—देखो देखो देखो (दुशमन)

देखो देखो देखो, ध्यान लगा कर देखो।
महिमा प्रभू की अपार देखो, भक्तो का भगवन से-
प्यार देखो।

ध्यान लगाकर, मन को घुमालो, वैठे यह तीर्थ महान देखो।
दर्शन करलो, कर्म खपालो। दर्शन....

१. देखो जी तुम देखो, पूरव मे अब देखो।
चम्पापुर मे वासपूज्य, पावापुर महावीर पूजो।
राजगिरी का, पहाड देखो, वराकर का कन्दी
क्षत्री कुण्ड देखो।
तिर्थंकर हैं वीस जहा पे, शिखर जी की महिमा महान
देखो ॥ दर्शन

२ देखो जी अब देखो, पश्चिम मे अब देखो।
आवू रायणकपुर ऋषभदेव, तारगा अजितनाथ दूजो।
पालीताना की वहार देखो, आदिनाथ भगवान देखो।
नेमीनाथ जी मोक्ष गए, वह सव से ऊ चा गिरनार देखो।
दर्शन..

३. देखो जी फिर देखो, पश्चिम मे फिर देखो।
सखेश्वर, नाकोड़ा, फलोदी, पार्श्व प्यारा पूजो।
भद्रेश्वर का मन्दिर विशाल देखो, केसरिया जी
मूर्ति कमाल देखो।

मूर्ति हजारो जेसलमेर मे, शास्त्रो का अनुपम भडार
देखो ॥ दर्शन·····

४ देखो जी अब देखो, उत्तर मे अब देखो ।
हस्तिनापुर मे ऋषभ देव जी किया पारण देखो ।
शौरीपुर, कम्पिला जी देखो, आयोध्याजी और
इलाहबाद देखो ।
रतनपुर आप दर्शन करलो, बनारस मे आके सारनाथ ।
देखो ॥ दर्शन· ··

५ देखो जी अब देखो, दक्षिण मे अब देखो ।
बाहूबली जी जहा विराजे, श्रावण, वरगोला देखो ।
भद्रावत्ती, कुलपात देखो, अन्तरिक्ष मूर्ति कमाल देखो ।
भक्ति भाव से वन्दन करलो, लक्ष्मी' कहे बार बार
देखो ॥ दर्शन· ·

———

३४ पर्यूषण पर्व

तर्ज---चलो दिलदार चलो (पाकीजा)

चलो प्रभु द्वार चलो, व्रत ताप धार चलो
आया त्योहार चलो ॥ ओ ···

१ पर्व पर्यूषण, है यह पर्व महान । पर्व ·
मिलके नर नारी, बच्चे बूढे जवान ॥ बच्चे· ··
चलो प्रभु ····

२. विपय मद लोभ, विकारों में कहीं।
जन्म अनमोल खो न जाए कही। खो ....
चलो प्रभु .. ....

३ पर्व कहते हैं यह करलो कुछ तो। पर्व..
पाप कर्मों से, बच्चा लो खुद को॥ बच्चा.....
चलो प्रभु .....

४ पूजा भावो से, दर्श भक्ति में। पूजा...
करे 'सुभाग' जाएं मुक्ति में॥ पूजा.. .
चलो प्रभु द्वार '

---

३५ फलवृद्धी पार्श्वनाथ महिमा

तर्ज —रामपुर का लक्ष्मण हूं मैं (रामपुर का लक्ष्मण)

मेड़ता निवासी, प्रभु पार्श्व जिनका नाम।
प्यारी प्यारी मूरत जिनकी, अद्भुत न्यारी शान।
लगता हर साल यह मेला, प्रभु ध्यालो यह शुभ वेला॥
मेड़ता . . .

१. दूर दूर से नर नारी, मिलके आते।
भक्ति मे हो मस्त, प्रभु के गुण गाते।
गुजराती, पंजावी, मारवाड़ी आते।

१ हमरी ना मानो, इस मनवा से पूछो,
प्रभू का भजन क्यो ना कीना । दरश तोरा····

२ हमरी ना मानो अपने मितवा से पूछो,
सग ना जाए कुछ भी ना । दरश तोरा····

३ हमरी ना मानो मुनिराजुओ से पूछो,
क्यो जग के सुखो को तज दीना । दरश तोरा····

४ हमरी जो मानो प्रभू नाम ही भज लो,
'लक्ष्मी' यह अरज करी हा । दरश तोरा····

---

३७. महान क्रांतिकारी महावीर

तर्ज—मेरा मन आज लहराये रे (तन तेरा मन मेरा)

आज फिर याद तेरी आए रे, है मगन, झूमे तन, मेरा मन ।
महावीर के ही गुण गाए रे ।। है मगन·· ·····

१. जब भी जयन्ति का दिन, आए, छाए, खुशी मन लहराए ।
चाहे पच्चीस सौ साल बीते है ।
नाम तेरा ही लेके जीते है । ओ····
तेरे दर्शन को ललचाए रे ।। है मगन ·

२ राज्य तज सयम धारा, निकल पडा अहिसा का मारा ।
महँ ओर जल्मो सितम भारी थे.

तेरे लाखो बने पुजारी थे। ओ
शान्ति का साम्राज्य छाए रे॥ है मगन

३ समाजवाद तुमने था लाया, त्याग परिग्रह था सिखलाया।
प्रभु वाणी मे बतलाते यह,
आज कानून हम बनाते यह। ओ
सारा देश, आज इसे गाए रे॥ है मगन

४ वाणी तेरी, अमृत धारा, जो भी पिए मिटे दु ख सारा।
लाखो ने शरण तेरी पाई थी।
ज्ञान की ज्योति जगमगाई थी।
आज 'सुभाग' सर झुकाए रे॥ है मगन

---

३८ चेतना

तर्ज—मेरी चाल मस्तानी (कारवां)

दो दिन जवानी, दिन चार जिन्दगानी।
करले, भजन, प्रभू गुण गाना॥ गुण

१ जिस दिल मे ध्यान, प्रभू का ही नाम, हर सुबह शाम हो।
निज की पहचान, आत्म का ज्ञान करता कल्याण वह।
भज ले तू प्राणी, शुभ घडी यह सुहानी॥ करले

२, दुनिया सराए, कोई आए जाए, यहा ठिकाना नही ।
जैसे डाल पे, पच्छी आते है, उड जाते है कही ।
यह तो है फानी, वहती नदियो का पानी । करले· ·

३ कल कल करता तू जीवन ढलता यूं, करना सो आज कर
पापो से दूर, कर्मों को चूर, तप सयम आज धर
'सुभाग', ध्यानी, वन जा तू अव ज्ञानी । करले···

---

३६ प्रभव चोर को वैराग

तर्ज—फिरकी वाली तू कल आना (राजा और रंक)

जग वालो यह सुनते जाना, छोटा सा अफसाना ।
तू अपनी जुवान से, तिर जाते हैं प्रभु के नाम सें ।।

१ इक दिन एक चोरो का राजा, चोरी करने को निकला ।
पाच सौ साथी सग थे जिसके, प्रभव नाम तो था उनका ।
फूंक मे ताले, खुल जाते थे, कर देता वह कमाल,
डर लागे, के उनके आगे, उनके ही नाम सें ।। तिर......

२. एक सेठ के घर मे जाकर, उसने डाका डाल दिया ।
वाघ के गठरे, सर पर रख कर, चलने को तैयार हुआ ।।
इस धरती ने पाव हैं जकड़े, हो गए आँख से अन्धे ।
न ही सूझे और न ही दीखे, वह राह मकान के ।। तिर ......

३. जम्बु कुंवर जब के आए थे, आठ कन्याओं से शादी।
मन वैरागी शुरू से उनका, माता की आज्ञा पाली।
कोड़ नवाणु देहेज मिला था, सब को ठोकर मारी।
समझाए यह पत्नियां सारी, पिया की प्यारी।
न जाना हमे छोड़ के, मर जाएंगी के हम रो रो के॥ जग...

४ समझाया पत्नियों को सारी, सबने कहा हम संयम लेंगी।
सुबह के होते ही सब मिल कर, माता से आज्ञा ले लेंगी।
माता को बोले यह जाकर, सुन लो अर्ज हमारी।
मन मोहे ओ माता दुलारी, ओ सब की प्यारी।
यह झूठा जहान है, इक साच्चा प्रभू का नाम है।

५ माता पिता ने आज्ञा दे दी, मोह का बन्धन टूट गया।
चोरों ने सब कुछ यह सुना था, उनको भी वैराग्य हुआ।
सुधर्मा स्वामी के आगे, सब ने संयम धारा।
कहे 'लक्ष्मी' यह सुनलो कहानी, वह शिवपुर धामी।
यह जाने जहान है, युवक मंडल करे गुण गान है।

---

४० चलो प्रभू द्वार

तर्ज—चल चल चल मेरे हाथी (हाथी मेरे साथी)

चल चल चल मेरे भाई आई अठाई।
चल रे चल, प्रभू के द्वार पे।
चले आ गुण गा, प्रभु हैं तारन हार॥

१ प्रभु द्वार भक्ति मे जो, काटे कर्मों के फन्द हैं वह ।
मिट जाये जन्म और मरण, शिव सुख का वासी है वह ।
आये आये, वह दिन आये, यू ही ना जाए निकल ॥
चल चल…

२ तू इक रोज पच्छताएगा, दम तेरा निकल जायेगा ।
जिसे कहता है मेरा मेरा, सब यू ही रहे जायेगा ।
पगले कुछ करले, इस जीवन को करले सफल ॥
चल चल…

विषयो मे मगन हो रहा, वक्त अनमोल है खो रहा ।
'लक्ष्मी' द्वार भगवन के तू, आकर भी है सो रहा ।
अब सुन ले, जप ले, अब तो ना कहना तू कल ॥
चल चल…

---

४१. कलयुग-दिग्दर्शन

गजल

पच्चीस सौ साल ही पहले का, वह दिन याद आया ।
आप गौतम से जो कहते थे, नजर आज आया ॥

१ काल पंचम है, न जिनवाणी, पे श्रद्धा होगी ।
धर्म घट जायेगा, शासन की यह दशा होगी ।
पाप को धर्म जो समझा, तो हमे याद आया ॥ आप…

२ धर्म के नाम पे जब, पाप अनेको होंगे।
धरती फट जायेगी, आकाश मे शोले होंगे।
दुनिया बरबाद जो देखी, तो हमे याद आया ॥ आप ··

३ साधु मनमानी चले, पन्थ अनेको होंगे।
धर्म के नाम पे हर वक्त, झमेले होंगे।
फूट ने घर को जलाया तो हमें याद आया ॥ आप

४ वक्त आयेगा रक्षक ही बनेंगे भक्षक।
गर कोई पुकार करे, समझेंगे वह है बकबक।
ट्रस्ट मन्दिरो का बनाया, तो हमें याद आया ॥ आप····

५. भाई भाई का हो दुश्मन, यह जमाना होगा।
धोखा हर बात में, सत्य का न ठिकाना होगा।
धर्म धन खाते जो देखा, तो हमें याद आया ॥ आप···

२ कहत "लक्ष्मी' कि जो जिनवाणी पे चलने वाले।
जीव पुण्यवन्त, वह ससार से तिरने वाले।
बदला रग दुनिया का जो देखा, तो हमें याद आया ॥ आप····

---

४२. प्रभु भक्ति की महिमा

तर्ज—सर जो तेरा चकराए (प्यासा)

शिव सुख पाना चाहे, या भव से तिरना चाहे,
आजा प्यारे, प्रभु के द्वारे, काहे घबराए, काहे घबराए ॥

१–शुद्ध मन से जो ध्याए, वह कर्मों से छुट जाए,
जन्म मरण के दुख मिट जाएं, शिव पद को वह पाए।
सुन सुन सुन, अरे भाई सुन, प्रभु भक्ति में बड़े बड़े गुण,
लाख दुखों की एक दवा है, क्यो न आजमाए। काहे....

२–प्रभु नाम है ऐसा, जपने मे लगे ना पैसा
सब पापों का बोझ हटे फिर सोच करे तू कैसा।
सुन सुन सुन, अरे भाई सुन, प्रभू भक्ति मे बढे बड़े गुण,
लाख दुखों की एक दवा है, क्यों न आजमाए॥ काहे....

३–माया पर क्यो इतराए, क्यो मोह में डूबा जाए,
अन्त समय कुछ काम न आए, प्रभू नाम संग जाए।
सुन सुन सुन, अरे भाई सुन, 'सुभाग' कहे अब गा प्रभु गुण
लाख दु खो की एक.... ....

मडल द्वारा अभीनीत 'वीर अमर कुमार' नाटक के दो भावपूर्ण दृष्य

'अमर कुमार' नाटक के दो हृदय स्पर्शी दृष्य

जल्लाद अमर कुमार को बल्ली चढाते हुए
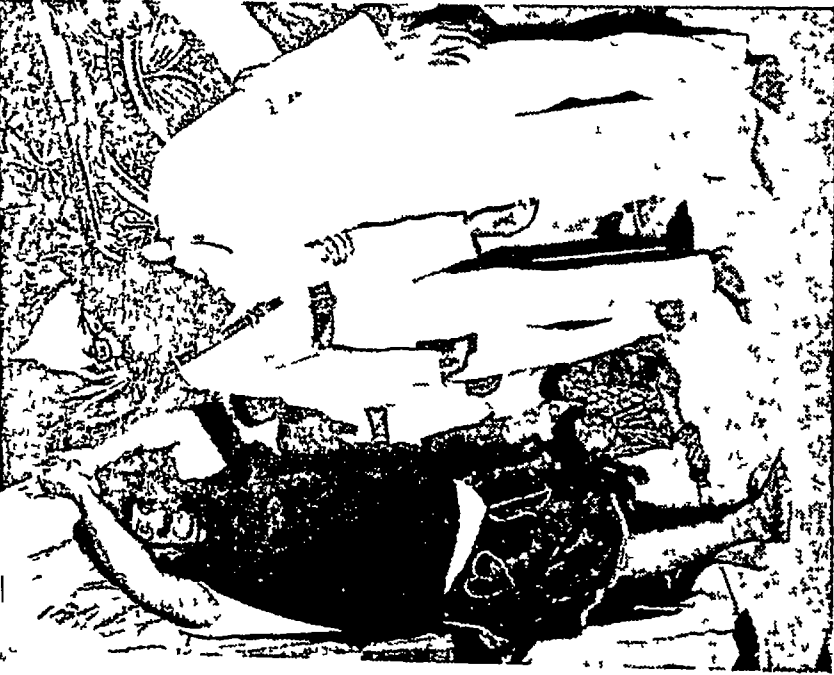
पुलिस अमर कुमार को पकड़ते हुए

४३ 'कौन किसका' (एक कहानो)

तर्ज —दुनिया का मेला, (राजा जानी)

दुनिया यह मेला , मेले मे साथी,
साथी स्वार्थी सुनलो । कौन किसका ?
आया जीव अकेला, जाए जीव अकेला,
झूठा यह झमेला, सुनलो ।। कौन किसका ?

१ इक सेठ का था बेटा, वह लाडला दुलारा।
चन्दा सा जिसका मुखडा, लगता वह सबको प्यारा।
माता कहे लाल मेरा, बहने कहें भैया मेरा।
पत्नि सरताज कहे, उसको ।। कौन किस का ? दुनिया

२ इक दिन महात्मा जी, नगरी मे एक आए।
जग झूठा प्रीत झूठी, उपदेश वह सुनाए।

सुना हुआ विचार, सबका मुझसे है प्यार।
कैसा उपदेश, है यह इनका ।। कौन किसका। दुनियां "

३. उसकी यह बात सुनकर, गुरुवर ने समझाया।
गर चाहो आजमाना, इक रास्ता बताया।
प्राणायाम सिखाया, योग्य उसको बनाया।
करलो अब तो, परीक्षा तुम तो ।। कौन किसका। दुनिया....

४. तब प्राणायाम बल मे, इक दिन यू पड गया वह।
देखा मरा हुआ जब, हाकार मच गया तो।
मेरे लाल, मेरे भाई, मौत हमे क्यूं न आई।
कैसे तुम बिन जिएगे, अब तो ।। कौन किसका। दुनियां....

५ गुरुवर वहा पधारे, नाती सभी पुकारे।
जिन्दा करो अब इसको, हम हुए बेसहारे।
यह लो दूध का प्याला, मरेगा पीने वाला।
बोले गुरुवर होगा यह जिन्दा ।। कौन किसका। दुनिया....

६ किसी ने न पिया वह, मन मे यही विचारा।
पर हित क्यू जान दें हम, जीवन है सबको प्यारा।
हुई सब की पहचान, उठ गया, सब हैरान।
देख लिया तमाशा इनका ।। कौन किस का। दुनियां....

७ गुरु के चरण पडा वह, वैराग्य मन समाया।
दीक्षा गुरु से धारी, प्रभू का ही शरण पाया।
झूठा मोह, ममता, प्यार, अब 'सुभाग' विचार।
युवक मडल पुकारे, सुनलो ।। कौन किस का ? दुनिया....

४४ आत्म चिन्तन

तर्ज—मेरे मितवा, मेरे मीत रे (गीत)

मेरो मनवा, गाए गीत रे।
सदा गाए, प्रभू जी तेरे गीत रे।। गीत रे……मेरो…

१ मै दुखिया भव भ्रमता अभागी। भ्रमता…
वह दुःख पाए, तकदीर न जागी। ओ……
भाग्य उदय मे, नर तन पाया।
काल अनादी गया वीत रे। सदा गाए……

२ आग वने, वैरी कर्म हमारे। कर्म……
मै जलता, हूँ पाप अगारे। ओ……
मोह के सर्प हैं घेरा डारे।
कैसे होगी जीत रे।। सदा गाए……

३. तन नश्वर, नही कोई ठिकाना। कोई……
निज आत्म को, अव है पहचाना। ओ……
तेरी कृपा हो मुक्ति पाऊँ।
कोई न जग मे मीत रे।। सदा गाए…

४ अव तो चरण शरण मे तुम्हारी। शरण…
वीते यह सारी उमरिया हमारी। ओ…
तुम सा साचा देव न दूजा।
लागी 'सुभाग' की प्रीत रे। सदा गाए……

४५, देश की दशा

तर्ज—आओ मैं तुम को अपने बगले की सैर कराऊँ (जोरू का गुलाम)

आओ मै तुम को अपने, इस देश का हाल सुना दूं ।
धर्म कर्म और रीत की मै, तस्वीर खीच दिखला दूं ।
त्यागो बुराईया यह । जागो ।।……जागो ।।

१ इस धरती पर जन्म लिया, महापुरुष थे कैसे कैसे ।
राम, रहीम, ईसा, गुरुनानक, और महावीर जैसे ।
श्रद्धा, भाव, भक्ति नही दिल मे, हम भूले है ऐसे ।
नैतिकता पनपेगी कैसे ।। जागो……जागो ।।

२ भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी, का है बोलवाला ।
कम तोले कोई, झूठ कपट से जोड रहे धन काला ।
कुर्सी की खातिर चुनाव मे, लाख खर्च कर डाला ।
देश का उससे भला क्या होगा ।। जागो …… जागो ।।

३ विनय सभ्यता छोडी, फैशन मे हम स्वाग रचाते ।
मान बढाई की खातिर तो, धन हैं खूब लुटाते ।
भूखे प्यासे, दीन दुखी पर, दया भाव नही लाते ।
झूठी शान पे मत इतराओ ।। जागो……जागो ।।

४ शादी का पवित्र वह बन्धन, अब व्योपार बना है ।
टीका और दहेज का, अब तो, कितना भाव चढा है ।
इन रसमो से देखो तुम, कितनो का घर उजडा है ।
मत बेचो तुम बेटे बेटी ।। जागो…… जागो ।।

५ सदाचार, नैतिकता से, धरती पर स्वर्ग बनाओ ।
जिन्दा रखना गर समाज को, ऊंच और नीच मिटाओ ।

यह फरमान, महावीर के, युवक मडल अपनाओ।
अब 'सुभाग' यह अवगुण त्यागो ।। जागो जागो ।।

———

४६. ससार सागर और जीवन नैया

तर्ज घोह रे ताल मिले नदी के जल मे (अनोखी रात)

मोरी नाव फिरे भव सागर मे। मोरी नाव ...
आधी, भवर, तूफा मे, जाने जाए कौन डगर मे,
कोई जाने न ।। ओ मोरी नाव...

नैया पुरानी जिसमे, पापो का भार है। पापो
मोह का फैला दलदल, चलना दुश्वार है ।। चलना
ओ प्रभू जी रे ...... मोह का फैला ...
क्या होगा भव भवर मे, कोई जाने न ।। ओ मोरी...

उठती लहरे कर्मों की बडी तेज धार है। बडी...
नदिया गहरी है, हृदय चचल पतवार है। चचल
ओ प्रभू जी रे ... नदिया गहरी ......
अनजाने राह सफर मे, कोई जाने न ।। ओ मोरी...

चलती अज्ञान आधी, छाया अन्धकार है। छाया...
लाख चौरासी मगर ढूढे शिकार है। ढूढे ...
ओ प्रभू जी रे ... लाख चौरासी ...
क्या होगा, इक पल भर मे, कोई जाने न ।। ओ मोरी ...

४. आत्म शक्ति जगादो, 'सुभाग' दास है। सुभाग······
भव के यह दुख मिटादो, तिरने की आस है। तिरने··········
ओ प्रभू जी रे··············· ···· ····भव के यह ··· ·········
पहुचे कब मुक्ति नगर मे कोई जाने न ।। ओ मोरी·······

---

४७. जग फानी

तर्जः—ए० बी० सी० डी० छोडो (राजा जानी)

सुख वैभव सब छोडो, ममता से मुख मोडो ।
जग से नाता तोड़ो, सारा जग है फानी ।
कहते ज्ञानी, ओ कहते ज्ञानी····कहते···· ।।

१. यह जग है, इक मेला, आया जीव अकेला ।
कहता है सब मेरा-मेरा, कोई नही हैं तेरा····ओ· ··।।कोई····
खोए क्यो जिन्दगानी, कहते ज्ञानी····ओ कहते ····।।सुख····

२. पर भव की यह कमाई, मानव की योनी पाई ।
विषियो मे न खोना अब तू, इसमे तेरी भलाई·· ओ ।। इस····
न करो मनमानी, कहते ज्ञानी ···· · ····।।सुख····

३. सब तज के, जाना है, अब नही भरोसा कल का ।
शुद्ध मन से प्रभू भजन तू कर ले, 'लक्ष्मी' पता न
पल का····ओ ।लक्ष्मी· ··
गाए जा प्रभू वाणी, कहते ज्ञानी· ओ ।।सुख····

नेमिनाथजी तथा राजुलमति का वैराग्य

नृत्य नाटिका

जूनागढ नरेश उग्रसेन ने अपनी चन्द्रकला की भाति सुन्दर राजकुमारी राजुलमति का सम्बन्ध राजा समुद्र विजय के लाडले पुत्र नेमकुमार से तय किया। महाराज उग्रसैन ने विवाह की तैयारियो मे दिन-रात एक कर दिए। राज महल के तोरण द्वार, अटारिया, विशाल कक्ष और आगन पूर्ण ढग से सजाए गए तथा देश विदेश के राजाओ के रहने के लिए महल और भोजन के लिए विभिन्न मिष्ठान बनवाए गए और क्षत्रीय मास के भी शौकीन होते हैं। अतः राजाने अपने शिकारगाह मे भाति-भाति के जानवर व पक्षी एकत्रित किए। नेमकुमार की बारात का जुलूस धूम धाम के साथ चला आ रहा है। अनेक प्रकार के वाद्य यन्त्रो से नगर गू ज रहा है। हाथी, घोडे, ऊट रथ आदि वाहनो पर बाराती लोग सवार होकर आ रहे हैं। सब से आगे सुन्दर अश्वरथ मे श्री नेमकुमार दुल्हा वेश मे बैठे हैं। समस्त जूनागढ विविध सजावटो मे सजा हुआ है। जगह जगह दरवाजे, तोरण, वान्दनवारे बन्धे हैं समस्त राजपथ एव मकान, चबूतरे दर्शकों से खचाखच भरे हुए हैं। बारात ज्यो-ज्यो नजदीक आती जाती है, महल मे राजुलमती को घेर रखी, सहेलिया परिहास कर रही हैं तथा फिर मगल गीत गाते हुए नाचने लगी।

तर्ज —माने घडो ऊ चाता जाईजो जमुना रे तीर (राग पीलू)

मानें भूल मत जाईजो राजुल प्यारी, पिया घर जाए।

१ कोई लगावो मेहदी कर मे, करो सोलह शृ गार।

नेम०— क्या कहा इनका मास ! और मेरे बारातियो के लिए ? नही ! ऐसा नही हो सकेगा । मेरे विवाह मे निरापराध मूक प्राणियो का बलिदान । (रथ से उत्तर कर) अपने उदर की आग बुझाने के लिए इन बेजुबानो का सहार । क्या यही मानवता है ? मुझे नही करना ऐसा विवाह । मुझे, इस परिवार से, इस ससार से कुछ नही लेना देना । रथ को लौटाओ सारथी ।

सारथी०— यह आप क्या कह रहे हैं राजकुमार, उधर देखिए तोरण पर आपके स्वागत की सारी तैयारिया हो चुकी हैं ।

नेम०— मुझे नही करना यह व्याह । देखो सारथी । यह मूक पशु मुझसे अपने प्राणो की भीख माग रहे हं । तुम नही समझ सकते इनकी वाणी । अपने-२ कर्मानुसार हर प्राणी पृथ्वी पर जन्म लेकर आता है । किसी के जीवन का अन्त कर देना किसी के अधिकार की बात नही ।

सारथी०— किन्तु महाराज राजुलमती का क्या होगा ।

नेम०— मुझे ससार विषधर सर्प के समान भयानक प्रतीत हो रहा है । यहा की समस्त वस्तुए नशवर है ।

सारथी०— महाराज ऐसा मत कहो । यह सब सुन कर महाराज उग्रसैन की क्या दशा होगी । आप की माता जो पुत्र वधू के स्वागत के लिए पलके बिछाए बैठी हैं—यह सब सुन कर क्या जीवित रह सकेगी । वासुदेव, बलभद्र, तथा अन्य सब लोगो पर क्या बीतेगी ।

नेम०— मै सब कुछ सोच चुका हूँ, सारथी । यहा कौन किस का पुत्र है ? और कौन किस का पिता है । कौन माता और कौन

स्त्री है। सभी का रोना अपने-२ स्वार्थ के लिए होता है। मेरे भले बुरे कर्मों को मै स्वय भोगता हूँ। क्या ! कर्म फल भुगतने मे यह लोग मेरा साथ देगे ? यदि नही तो फिर मैं इन सब के मिथ्या मोह मे पड कर अपने आत्म कल्याण के पथ मे बाधक क्यो बनू ।

जाओ सारथी बाडे की कुण्डी खोल दो, पशु पक्षियो को मुक्त कर दो।

सारथी०– जो आज्ञा महाराज।

(पशु पक्षियो को मुक्त कर दिया गया। यह सब खबर सुनकर राज उग्रसैन अपने मन्त्रियो के साथ वहा आते है।

उग्रसैन०– कुमार। यह आपने क्या किया, मै अब लग्न भोजन मे क्या मूंह दिखाऊगा।

नेम०- हे राजन् ! मैंने इन मूक प्राणियो को अभयदान दे दिया है। मै ऐसा विवाह नही कर सकता जहा मेरी खातिर हिंसा हो। मैं यहा एक पल भी नही रुक सकता। चलो सारथी चलो।

उग्रसैन०– नही कुमार नही, ऐसा मत करो। ससार मेरी हसी उडाएगा। राजकुमारी व जगवालो को मैं कैसे मुंह दिखाऊगा।

नेम०– अब मुझे इस ससार से मोह नही रहा। किस पर क्या गुजरेगी, ससार से विरक्त होने वाले यह कभी नही सोचते। विना निमित्त के इस मोह जाल से छुटकारा पाना आसान नही है। मुझे स्वर्ण अवसर मिला है, अब मैं इसे हरगिज

भी हाथ से नही जाने दू गा। चलो सार्थी चलो, रथ को शीघ्र ले चलो।

(देखते ही देखते रथ मुड गया और लग्न अधूरा रह गया। मगल गान वद हो गए। राजुलमति यह सब देख कर कहने लगी —

राजुल०– लौट गए, क्यो ! क्या हुआ ? मेरे द्वार पर आकर एक झलक दिखाकर मेरे प्राणो के स्वामी एकाएक क्यो चले गए। मेरे सपनो की दुनिया वस्ते-वस्ते क्यो उजड गई।

दासी०– राजकुमारी। इन मूक पशुओ की करुणा पुकार ने उनका दिल द्रवित कर दिया। वे गिरनार पर्वत की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

राजुल०— हैं क्या ।

(विलाप करने लगी)

राजुल की पुकार

प्रीत काहे तोड़ी नेम जी तुम ने ।।...२

१ अब की बेर, रूठे काहे सैंया ।
जन्म जन्म पकडी मोरी बैंया ।। तुमने' प्रति

२ पशुवन पर, करुणा प्रभू कीनी ।
राजुल दुखिया की, सुध नाही लीनी ।। तुमने' 'प्रति' '

राजुल०— नही नही । लौटना पड़ेगा उन्हे । मूक पशुओ की पुकार यदि उनके दिल को द्रवित कर सकती है तो क्या मेरी पुकार उनके हृदय को नहीं पिघाल सकती । उन्हे आवश्य आना पड़ेगा ।

(नाथ नत जाओ, रुक जाओ कहते कहते राजुलमति बेहोश होकर गिर पड़ी । सखियो ने नेत्रो पर जल छिड़का, सचेत हुई तो पुकार करने लगी)

राजुल जी की दीक्षा

तर्ज —ठारे रहियो, ओ बाके यार (पाकीजा)

ठारे रहियो, नेम कुमार जी । ठारे ....
तुम संग चलूं गिरनार जी ।। ठारे ...

१ रो रो के बिखरा, नैनो का कजरा ।
टूट गया है, फूलो का गजरा ।
मैं तो तज आई, सोलह शृंगार जी ।। मैं तो...

२ चन्दा विना यह, सजे न चन्दनिया।
बदरा विना कैसे, चमके विजुरिया।
तुम तो भव भव के प्राणाधार जी ।। तुम....

३ जाने न कोई प्रीत पराई।
कोई न अपना, सग सहाई।
मैं तो छोड़ूं यह, झूठा ससार रे ।। मै तो...

४ माता पिता यह सग सहेली।
छोड चली, गिरनार अकेली।
'सुभाग' वह सयम धार जी ।। सुभाग

---

५२. 'दुर्लभ मानव जन्म'

तर्ज—मेरा नाम आओ, मेरा नाम जाओ (यह गुलिस्तान हमारा)

प्रभू द्वार आओ, प्रभु नाम ध्याओ।
मानव जन्म, यह मिलना वडा मुशकिल है। प्रभू....

१ आओ आओ, मिल गाओ, द्वार प्रभू के दर्शन कर ले
ध्याओ ध्याओ, अब ध्याओ, शुद्ध मन से प्रभू पूजन करलें।
ओ मानव जन्म...

२ सुनो सुनो, सभी सुनो प्रभू भक्ति से दुष्कर्म कटेंगे।
देखो देखो, सभी देखो, पापी रावण तीर्थंकर बनेंगे ।।
ओ मानव जन्म

३ भाग्य उदय हुआ तेरा, नर तन और जैन धर्म मिला है।
सतगुरु मिले तुझे, वीतरागी देव का शरण मिला है।
फिर 'सुभाग' यह मिलना....

---
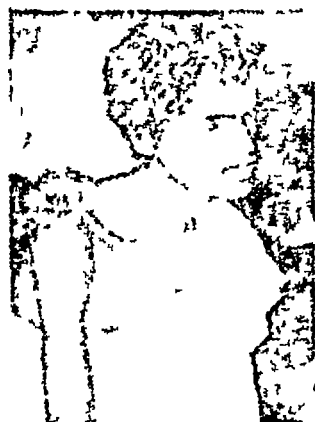
५३ जागृति

मुनि श्री अस्थिर मुनिजी के
प्रसिद्ध तीन नारो पर
आधारित गीत

तर्ज—दीवाने हैं दीवानों को क्या चाहिए (जंजीर)

जैनी हैं हम जैनियो को क्या चाहिए, क्या चाहिए।
जिन शासन की शोभा बढनी चाहिए, बढनी चाहिए॥
भाग्यो से मिला, हमे यह धर्म महान्, धर्म महान्।
धर्म पे अपने, चलना चाहिए, चलना चाहिए॥

१ जैन जगत...एक हो

सभी हम सिपाही है महावीर के। महावीर
पथिक हम सभी हैं, वह इक तीर के। इक'
श्वेताम्बर दिगम्बर, स्थानक वासी,
तेरापन्थी बेटे हैं, उस वीर के।
प्रेम की ही गगा, बहनी चाहिए। बहनी"
जिन शासन की....

२. शक्ति का```सदउपयोग हो

कही जुल्म हिंसा, पनपने न दें। पनपने````
सुखी हो हर प्राणी, यत्न हम करे यत्न````
अगर पास है धन तो उपकार कर।
मदद दीन दुखियो की दिन रात कर॥
दौलत यही रहेगी, न इतराईए। न इत````
जिन शासन की````

३ रूढिवादिता का``````अन्त हो

बुरी रीत रिवाजो को ठुकराए हम। ठुकराए````
आदर्श जीवन बनाए गे हम। बनाए````
यू जीने न देगी, यह दुनियां तुम्हे।
बदलता जमाना, बदल जाए हम।
कहे यह 'सुभाग' अब सम्भल जाईए। सम्भल
जिन शासन````

---

५४ भव सागर में नैया

तर्ज धीरे से आना खटियन में (छुपा रुस्तम)

पार लगाना भव जल से, ओ````भगवन````पार
बे सहारो का सहारा है तू,
दुख दुखियो के हरता है तू।

बीते यू ही काल अनादि। बीते
थका चहू गति चल के॥ पार

ऊपर) मडल के कार्यक्रमो मे अध्यक्ष पद पर आसीन श्री छुट्टनलालजी राठी हमारे शिक्षण केन्द्र के प्रधान अध्यापक वजरगलाल जी को पुरस्कार देते हुए। (नीचे) श्री चन्दनमल जी गुजरानी हमारे शिक्षण केन्द्र के वच्चो को पुरस्कार वितरण करते हुए।
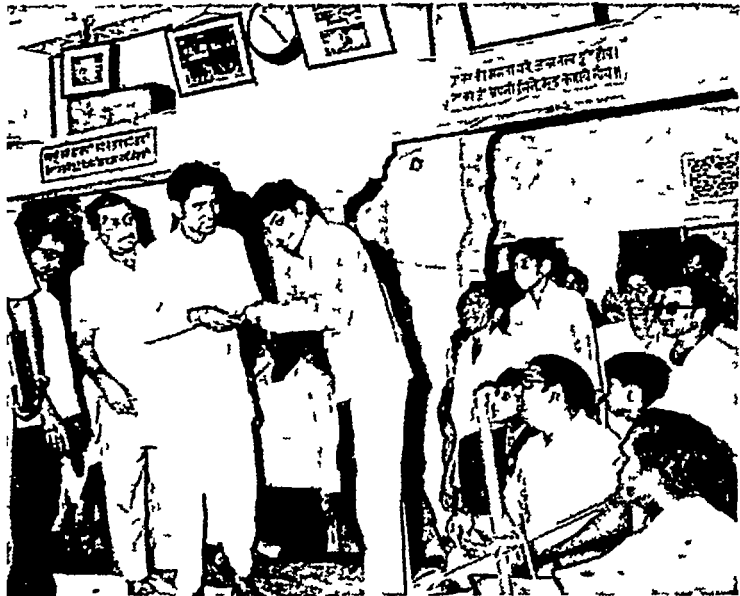
हमारे सगीत शिक्षण केन्द्र की बालिकाओ द्वारा प्रस्तुत
लोक नृत्यो की भावपूर्ण दो झाकिया ।

१ गहरी नदिया, नाव पुरानी ।गहरी····
खेवट नही है, सग मे ॥ पार···

२. पाप तूफा, कर्मों की आधी । पाप····
फसी मोह के दलदल मे । पार····

३. मुक्तिपुरी मजिल हमारी । मुक्ति···
आस यह 'सुभाग' के दिल मे ॥ पार ·

---

५५ गुणों की पूजा

दोहा ।—कोकिला स्वरो रुपम्, स्त्री रुपम पतिव्रत ।
विद्या रुपम करुपाणाम्, क्षमा रुपम तपस्विन· ॥

तर्ज—मैं तेरे प्यार में (लोफर)

गुण जो भरले, जहा मे खूबसूरत वही ।
पूजे जाते गुणी, उनकी सूरत नही ॥गुण····

१ देखो कोयल तराने बोले ।
स्वरो से हैं, मधुर रस घोले ।
जो भी सुन ले, मन उसका डोले ।
काला उसका वदन, वदसूरत सही ॥ गुण····

२. पतिव्रता नही है, जो नारी ।
रूप सुन्दर, चाहे कितनी प्यारी ।
नही होती, पिया की दुलारी ।
गुण विना, रूप की भी जरुरत नही । गुण···

३ ज्ञान, विद्या, सम्यक ज्ञान, जो पाले ।
चाहे निर्धन हो, गोरे या काले ।
राजा चक्रवर्ति भी सर झुकाले ।
जग मे अज्ञानी की, कोई शोहरत नही । गुण····

४. शान्त भाव है, गुण लासानी ।
योगीराज हो, कितने ही ज्ञानी ।
हो तपस्वी, चाहे कितने ध्यानी ।
नही शोभा 'सुभाग' क्षमामूर्त नही ।।
शान्त मूर्त नही ।। गुण ·

---

५६ श्री सिमिन्धर स्वामी जी की स्तुति

तर्ज—सुनरी पवन, पवन पुरवईया (अनुराग)

श्री सीमिन्धर भगवन बिना यह जिया ।
दर्शन को तरसे, मेरा लेजा तू सन्देशा ।
सुन चन्दा, जा तूं जा ।। सुन चन्दा····

१. सत्यकी माता के सुत लाडले,
श्रेयास पिता को पुत्र रत्न मिले ।
त्रिभुवन के नाथ स्वामी हुए ।
शत पाच धनुप काया, सुवर्ण खिले ।
रूप अनूपम, मन मेरा मोह लिया ।। दर्शन····

२ महाविदय क्षेत्र मे विच्चर रहे,
इन्द्र चौसठ सेवा करें ।

देव एक करोड हैं, शरण पडे ।
सुर, नर, मुनि वन्दन करें।
जिसने याद किया, उसको है तार दिया ।। दर्शन…

३. भाव मेरे दर्शन पाऊँ मैं,
पख नही ! कैसे उड आऊँ मैं ।
तू तो नित जाए भाग्य तेरे,
कहियो कैसे प्यास बुझाऊँ मैं
'सुभाग' की नैया के, तुम ही हो खेवैया ।। दर्शन

---

५७ मैत्री भाव

तर्ज—मैं यार वणावांनी चाहे लोग बोलियां बोले । (बाग)

जग से इक दिन जाणा नी, मीठे बोल तू क्यू न बोले ।
मीठे बोल तू क्यू न बोले, वाणी मे अमृत क्यो न घोले ।। जग…
मैत्री भाव हो सब जीवो से क्षमा करो क्षमाओ ।
क्षमा ही भूषण है वीरो का, क्षमा खडग अपनाओ ।
सब कुछ छोड के जाणा जी ।। मीठे बोल ‥… ‥ ‥

१ प्रभु वीर को देखो — महावीर को देखो ।
चण्डकोपिया विषधर ने, जब खूब थे डक लगाए ।
दया दृष्टि रखी प्रभु ने. चण्डकोपी थका शरण आए ।
सब गुण गाणा जी, उस विषधर के भाग्य हैं खोले ।। उस विष

२ प्रभू पार्श्व को देखो—प्रभू पार्श्व को देखो ।
निर्जन वन मे ठहरे थे, प्रभू जब ये ध्यान लगाए ।
मेघ माली ने जल वर्षाया, पानी नाक तक आए ।
समता अपनाना जी, प्रभू ध्यान मे न थे ढोले ।। प्रभू ध्यान…

३ सकुमाल को देखो, सकुमाल को देखो
गज सकुमाल खड़े शमशान मे, जब थे ध्यान लगाए।
ससुर ने सर पाल बाध, उसमे अंगारे जलाए।
नही घबराना जी, देखो सरपे आग के शोले ॥ जलते सर पे····

४. प्यार हो सब से, प्यार हो सब से ।
इर्षा भाव न रखे मन मे, सब का भला ही करले ॥
दोष न औरो के हम देखें, अपने दोष निकालें ।
'सुभाग' सुख पाएगानी, युवक मडल सब से बोले ॥ युवक····

---

५८. दुर्लभ मानव जन्म

तर्ज —चाहे सर फूटे या माथा (दाग)

अब चाहे पुन्य या पाप कमाले, दुर्लभ मानव तन यह पाया।
पिछले जन्म का जोड लगाले, जैसा बोया वैसा पाया।
जिसने जैसी करनी करली, उसने वैसी भरनी भरली।
दुनिया के मेले मे, आया जीव अकेला ॥ अब·······

१ है, यह दुनियां मुसाफिर खाना, यहा होता है आना जाना।
इस दुनियां से क्या ले जाना, पल भर का नही है ठिकाना।
तूने सोचा है क्या, तेरे मन मे है क्या ।
तेरा लम्बा सफर, अब तू पापो से डर,
अच्छी करनी तू कर, हो जाए अमर ।
फिर चाहे डूबे या तिर जाए । दुर्लभ मानव·······

२, मोह ममता के बन्धन मे जकडा, माया लोभ ने पल्ला है पकडा।
कोड़े अभिमान मे तू है अकडा, फसा जाल मे जैसे है मकड़ा।

सब कुछ जानता पर नही मानता ।
अब तू विगडी बना, यू समय न गवा,
बुझ जाएगा तेरा, यह पल भर में दिया ।
अब चाहे खाले' मौज उडाले ।। दुर्लभ मानव…

३ तू अब तो प्रभू ध्यान धर ले,अच्छी करनी का समान करले ।
तू तो मन मे उसी को सिमरले, उस देव गुरु की शरण ले ।
सुन ले ए बशर, गर रहा बेखबर,
तू चला चला जाएगा, सब रहे जाएगा ।
बाद पछताएगा, 'लक्ष्मी' गुण गाएजा ।
युवक मडल तुम्हे जगाए ।। दुर्लभ मानव ......

---

५६. तीर्थ दर्शन

तर्ज — वह क्या है (अनुराग)

आदि नाथ का दर्शन जब मैं पाऊगा ।
तेरे दर्शन को सिद्धाचल जाऊगा ।
वह क्या है—पश्चिम मे है ।
पश्चिम मे — इक पर्वत है ।
पर्वत कैसा होता है ? आदिनाथ का दर्शन होता है ।
जीव अनन्ता इस गिरिवर पे आते है ।
घोर तपस्या करते, कर्म खपाते है ।
सुर नर मुनिवर, ध्यान लगाकर मोक्ष गए ।
अन्धियारा मन का मिट जाए, दर्श किए ।
वह मोहनी मूरत, दिल मे सदा बसाऊंगा ।।

२, पार्श्व प्रभु का दर्शन जव मै पाऊंगा।
तेरे दर्शन को, सम्मेत शिखर जी आऊ गा।
वह कहा है — पूर्व मे है।
पूरव मे — भी पर्वत है।
पर्वत पर क्या होता है—प्रभु पार्श्व का वर्शन होता है।
तिर्थंकर है वीस जहा पे मोह गए।
राजगिरि और पावापुर भी तीर्थ वडे।
जल मन्दिर पावापुर का अति सुन्दर है।
महावोर जी स्वामो, वही पर मोक्ष गए।
उस धरती के गुण मैं सदा ही गाऊ गा।
वह कहा हैं — पूरव मे हैं।

३. तेरे दर्शन को हस्तिनापुर आऊ गा।
वहा आदि नाथ का दर्शन जव मैं पाऊ गा।
वह कहा है — उत्तर मे है।
उत्तर मे — इक नगरी है।
उस नगरी मे क्या होता है—आदिनाथ को वन्दन होता है।
एक वर्ष के तप से, भगवान आए थे।
पोते के हाथ से, वही पारणा पाए थे।
अक्षय- तीज का मेला, भारी होता है।
वर्षी तप वालो का पारणा होता है।
भक्ति भाव से वन्दन करने आऊ गा।
वह कहा है — उत्तर मे है॥

३. तेरे दर्शन को श्रवण वरगोला आऊ गा।
वाहूवली का दर्शन जव मैं पाऊ गा।
वह कहा है, दक्षिण मे है।
दक्षिण मे — इक मूरत है।
वह मूरत कैसी होती है — ५२ गज वह ऊ ची है।

दूर दूर से लोग वहा पे आते है।
अद्‌भुत मूरत के जब दर्शन पाते है।
भद्रावती, कुलपाक, यह तीर्थ प्यारा है।
दर्शन कर मन मे होता उजियारा है।
शुद्ध मन से मै यही, भावना भाऊ गा।
वह कहा है — दक्षिण मे है।

५ चाहे जहा रहूँ, मैं रोज भावना भाऊ गा।
मे नित उठ कर के उनका ध्यान लगाऊ गा।
वह कहा है — मेरे मन मे है।
मन मे कहा — अन्तर में है।
अन्तर मे क्या होता है — भगवान का दर्शन होता है।
'लक्ष्मी' कहे जो, शुद्ध मन मे गुण गाऊ गा।
मन मन्दिर मे, इक पल ध्यान लगाऊ गा।
मानव तन यह जन्म, सफल कर पाऊँगा।

---

६०. पूज्य गुरुवर कान्ति सागर जी महाराज

(पालीताणा मे साध्वी श्री विकास श्री जी के मास क्षमण तप महोत्सव के समय बनाया गया गीत)

तर्ज—ओ आज मोसम है बडा (लोफर)

ओ नाम रोशन है तेरा एहसान है बडा। एहसान है नाम ....
कान्ति सागर गुरु जी, गुणगान है तेरा गुणगान है नाम ...

१ माता सोहन देवी के दुलारे।
पिता मुक्तिलाल के है प्यारे।

छोड के ममता सुख जग के सारे।
हो गए योगी सयम को धारे।
देख लो छोडा झूठा जहान है। नाम····

२ हर जगह गुरुवर पैदल विचरते।
सर्दी गर्मी की परवाह न करते।
जहा जाते धर्म ध्यान होते।
भक्तो के मेले वही पे भरते।
जिन शासन की शोभा महान है॥ नाम····

३ दादा गुरु का मेला, दिल्ली आए।
विलाड़ा मे, प्रतिष्ठा कराए।
नाकोडा मे, थे उपध्यान रचाए।
जयपुर मे, तप के ठाठ लगाए।
अब तो पालीताना मे देखो शान है॥ नाम

४ हरिसागर के शिष्य उपकारी।
है निभाई, तुम ने जिम्मेदारी।
हरिविहार, यह सुन्दर बना है।
यादगार गुरु की यह न्यारी।
दर्शन सागर की भी न्यारी शान है॥ नाम '

५. धन्य धन्य 'विकास' श्री' ने।
तप किया मास क्षसरण का जिन्होने।
जयपुर की नवयुवक मडली ने।
दर्श पाया है झूमे खुशी मे।
आलीताना 'सुभाग' तीर्थ महान है॥

——————

६१ बीकानेर मे पट्टाभिषेक

[महोत्सव पर बनाया गया गीत]

तर्ज —कितना मजा आ रहा है (राजा जानी)

कितना हर्ष छा गया है। हो कितना····
गुरुवर जो मिल गए हैं, ओ
चमन यह खिल गए हैं। ओ कितना ·

१ सुधर्मा स्वामी गणधर के जैसे,
परम्परा यह चल रही है वैसे।
विजयेन्द्र सुरीश्वर थे, गुणी कैसे,
शिष्य रत्न भी मिले हैं एसे।
७७ वें पट्टधर, चर्चा है आज घर घर ।। ओ कितना··

२ यह धरती मा की गोद, कितनी प्यारी,
हुए हैं महापुरूष, अवतारी।
धर्म, कर्म, नैतिकता सदाचारी,
टिकी हुई है आज भी हमारी।
करेंगे नाम रोशन, चमकेगा जैन शासन ।। ओ · कितना··

३ जग के, सुखो को छोड, दीक्षा धारी,
'चन्द्रोदय' होगे उपकारी।
होंगे यह, श्रीपूज्य हितकारी,
पूरी हुई है, आस यह हमारी।
युवक मडल का आना, 'सुभाग' घूम मचाना। ओ ···कितना····

———

६२. वीकानेर मे पट्टाभिषेक महोत्सव

तर्ज.—यारी हो गई यार से (दो चोर)

त्यागी हो गए, त्याग के सव, देखो।
मोह प्यार, घर वार झूठे संसार को॥

१ चन्द्र वाई माता से, हुआ है चन्द्रोदय।
हसमुख लाल, पिता से मुखड़ा, पाया हसमुख यह।
पुत्र रत्न मिला, था यह परिवार को॥ त्यागी

२ सयम का रंग यह कैसा, जीवन मे छा गया।
जग के, सुखो को तज, मन वैरागी हो गया।
देख के दुख भरे, झूठे व्यवहार को॥ त्यागी....

३ सौभाग्य था जयपुर का, आई थी शुभ घडी।
धरणेन्द्र सुरीश्वर से, तुम ने दीक्षा थी धरी।
आयू १६ वर्ष, देखो होनहार को॥ त्यागी....

४ यति यतनमल जी का, मिला है सहारा।
रायपुर मे शिक्षा से, वड़ा ज्ञान तुम्हारा।
हो गए योग्य है, धर्म प्रचार को॥ त्यागी....

५ वीकानेर का सूना, भवन आठ वर्ष से।
आज सजा फिर देखो, यह कितने हर्ष से।
विजयेन्द्र सूरीश्वर के पट्टाधार हो॥ त्यागी ...

६ चन्द्रोदय गणीवर जी, श्री पूज्य अव वने।
जिन शासन, और श्री सघ की, शोभा फिर वढे।
युवक मंडल आया, हर्ष 'सुभाग' को॥ त्यागी ...

तपश्चर्या का महत्व

(विशेष परिशिष्ट)

कुछ प्रचलित गीत

६३. जीवन सफल करो

तर्ज—कोई शहरी बाबू दिललहरी बाबू (लोफर)

दुशकर्म खपालो, अब पुन्य कमालो,
शुद्ध भाव सदा घरना, यह जीवन सफल करो। यह
पल पल यूं ही जाए, नही लौट के आए।
व्रत तप और ध्यान करो॥ यह जीवन

१ कल कल करे, नही पल का पता।
प्रमाद मे जीवन लगाने लगा।
अन्त समय जब जाने लगा।
तब तो यह मन पछताने लगा।
अब कौन बचाए, कर्मों से छुडाए।
जो करना सो आज करो॥ यह जीवन

२ तन नश्वर मोह करता है क्यो।
विषियों की आग में जलता है क्यो।
आया अकेला, जाए अकेला।
मैं मेरा अब करता है क्यो।
यह हाट हवेली, यह नार नवेली।
नहीं साथ चलेंगे, सुनो॥ यह जीवन

देखो है तप मे आज मगन।
.... है धन्य।
.... दिनो से उपवास किया।
देखो प्रभू से लागी लगन।
सब खुशिया मनाएं, झूमें और गाऐं।
तपस्वी को वन्दन करो॥ यह जीवन

———

६४. व्रत तप, संयम

तर्ज -यह राखी बन्धन है ऐसा (बेईमान)

यह व्रत तप संयम है ऐसा ॥ यह व्रत ....
इससे होता नाश कर्म का, बजता है डंका धर्म का।
होता है कल्याण आत्म का ॥ यह व्रत

१. दुनिया में जिसने आकर के,निज आत्मा को पहचान लिया।
तन नश्वर से मोह हटा, उसने है तप और ध्याय किया।
देखो तप तीर्थंकरों का ॥ बजता है डंका.........

२ त्यागी तपस्वी महापुरुषों के, आज भी हम गुण गाते हैं।
नाम अमर है, अमर रहेगा, सादर शीश झुकाते हैं।
अपनाते जो राह उन्हीं का ॥ बजता है डंका ...

३ इससे भव भव के पाप कटें, वह पुण्य अपार ही भरता है।
जन्म मरण के दुख मिटें, शिव सुख इसमें ही मिलता है।
गाए गुण 'सुभाग' उन्हीं का ॥ बजता है डंका......

४ आज खुशी का दिन यह आया, कितना आनन्द छाया।
• बाई की निर्मल हुई है काया।
किया व्रत यह मास क्षमण का ॥ बजता है डंका......

———

६५. मुक्ति का साधन

तर्ज -सुबह जब होगी तो देखा जाएगा।

व्रत तपस्या और प्रभू का ध्यान कर।
मुक्ति पाने का तो कुछ सामान कर।

क्या पता फिर मानव भव यह पाएगा, या न आएगा।

१ नाशवान है तन यह, क्यों इतराता है।
खिलता है जो भी चमन, मुरझाता है।
श्वास का पंछी, कभी उड़ जाता है।
खाली पिंजर तन भी यह जल जाना है ॥ व्रत.........

२. घोर तप तीर्थंकरो ने भी किया।
अनेक उपसर्गों को भी था सह लिया।
तप से ही कर्मों का नाश होना है।
कर्म खपाते जो शिवपद पा लिया ॥ व्रत.......

३. तप कठिन.........बाई ...ने किया।
तीस दिन उपवास का है व्रत किया।
अन्न भोजन सब कुछ, त्याग कर दिया।
पुण्य अनन्ता है, उन्होंने कमा लिया ॥ व्रत.......

४ कैसा खुशियो का, है दिन यह आ गया।
हर तरफ चर्चा, धर्म का छा गया।
ठाठ से है आज यह, उत्सव हुआ।
जयपुर श्री संघ है हर्षा गया ॥ व्रत.........

---

६६. तपस्या से कर्म चूर

तर्ज—है प्रीत जहां की रीत यहा (पूरब पश्चिम)

है प्रीत प्रभू से जितनी यहा, हम हाल उसी का सुनाते हैं।
इस देश के रहने वाले हैं, हम गीत उसी के गाते हैं।

श्री महावीर जयन्ती सास्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता मे श्री स्वरूपचन्द चोरडिया स्मृति चल शील्ड लगातार तीन वर्ष तक विजय करके, सदा के लिए प्राप्त कर लिया । (नीचे) शील्ड के साथ हमारे विजयी कलाकार→
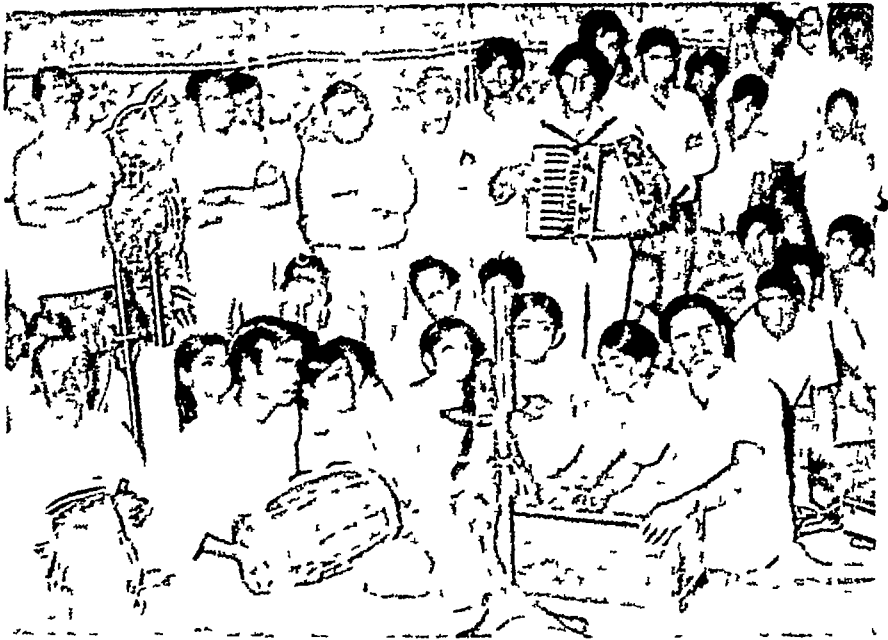
↑ भक्ति की मस्ती मे मडल के कलाकार जनता को आकर्षित करते हुए।

↓ महावीर जयन्ती के जुलूस मे धूम मचाती हुई भजन मण्डली।

१ है ऋषभदेव ने एक वर्ष, अन्न पान नही है पाया था।
छ मास महावीर स्वामी ने, है एक अभिग्रह धारा था।
चन्दनवाला कर तीन उपवास, महावीर का दर्शन पाया था।
जिसे मान चुकी सारी दुनिया, हम बात वही दोहराते हैं।
इस देश....

२ इक श्राविका चम्पा बाई ने, छ: मास का व्रत है धारा था।
देहली के बादशाह अकबर ने, उनको है शीश नमाया था।
गाधी जी ने अनशन करके, भारत आजाद कराया था।
कितने पावन हैं लोग यहा, हम नित नित शीस नमाते हैं।
इस देश

३ व्रत तप से घाती कर्म कटे, महापुरुषो ने फरमाया है।
शुभ अवसर है यह तिरने का, मानव भव हमने पाया है।
युवक मडल गुण गान करे, 'लक्ष्मी' ने शीश नमाया है।
यह पुण्य उदय अपना आए, हर रोज यही, गुण गाते हैं।
इस देश....

---

६७. तप की महिमा

तर्ज ओ हम तुम जोड़ी मे (धरती कहे पुकार के)

ओ व्रत तप करने सें, ओ सयम धरने से,
कर्म होवें चक्कचूर। कर्म होवे.........
ओ मन मे भाव धार के ॥ ओ व्रत तप....

१ भद्रकर सेठ का सेवक, पुरुषोत्तम ध्यान लगाया।
अक्षयनिधि तप वह करके, है राज्य सिहासन पाया।

फिर तप किया तिर गए, तिर गएं, संयम को धारके ।। श्रोव्रत....

२. दुखियारी चन्दन वाला, कर्मों ने खूब रुलाया ।
दिन तीन उपवास किए जो, प्रभू वीर का दर्शन पाया ।
बन्धन कटे, दुख मिटे, दुख मिटे, प्रभू के दीदार से ।। श्रोव्रत....

३ माया यह सग न जाए, मोह से मन को हटाले ।
तज ईर्षा, द्वेष कषाए, निज आत्म ज्योत जगाले ।
जग मे मेहमान हम यहा, है यहा, दो दिन या चार के ।। श्रोव्रत...

४ जब तक न कर्म कटे हैं, कोई न मुक्ति पाए ।
तिर्थंकर भगवन्तो ने, घोर तप से कर्म खपाए ।
कहे 'सुभाग' तिर गए, वह तिरे, गए मुक्ति द्वार पे ।। श्रोव्रत

---

६८. आत्म निखार

तर्ज—सारी दुनिया मे देखे हैं (मेहरबान)

मानव भव यह पाकर जो, करते हैं व्रत तप ध्यान ।
वह तिर जाते इन्सान............... वह तिर .....

१ ऋषभ देव ने एक वर्ष तप किया, कभी आहार न पाया ।
छ मास महावीर प्रभू, उपवास किया और ध्यान लगाया ।
तिर्थंकर पद पाया है, यह पूजे सकल जहान ।।
मानव भव ....

२ मैना सुन्दरी ने तप करके, नौ पद का था ध्यान लगाया ।
कोडी पति का कोढ़ गया था, उसने निर्मल तन फिर पाया ।

जग मे चमका नाम उसी का, वन गए विगडे काम ॥
मानव भव…………

३. तप से आत्म रूप निखरता, निज कर्मों का मैल विखरता ।
उज्वल ज्योति मन मे होती, तव ही मुक्ति राह नजरता ।
'सुभाग' है तप की महिमा भारी, शास्त्रो का फरमान ॥
मानव भव…………

६९. सावधान

तर्ज—ओ बुढ्ढू पड़ गया पल्ले (अनहोनी)

ओ अव तू, व्रत तप करले, ओ धर ले सयम धर ले ।
वीती जाए यू दिन रात ।
कल कल करता है क्यूं, जीवन ढलता है यू
सुनलो जी मानो मेरी वात ॥ ओ अव तू……

१ यह तन तप से तपा ले, कर्म का मैल जलाले ।
जगा ले भाग्य, आत्म नर्मल वना ले ।
पल पल जाए, क्यू यूं गवाए ।
वीती जाए यूं दिन रात । ओ अव तू……

२ जो तन तू रोज सजाए, नए नित स्वाग रचाए ।
आए न काम तेरे, यह माटी मे मिल जाए ।
क्यू इतराए, क्यू भरमाए ॥
सुन लो जी मानो मेरी वात ॥ ओ अव…………

३. यह माया संग न जाए, तू जिससे प्रीत लगाए,
आया मुट्ठी बांधे, हाथ पसार के जाए।
क्यूं ललचाए, समझ न आए।
कुछ न चले यह तेरे साथ ॥ ओ अब ……………

४. है तीस दिन तप किया है, नही खाया पिया है।
धन्य…… ……………………, यह जीवन सफल किया है।
सब हर्षाए, खुशिया मनाए।
छूटे दुष्कर्मों से सुभाग ॥ ओ अब ……………
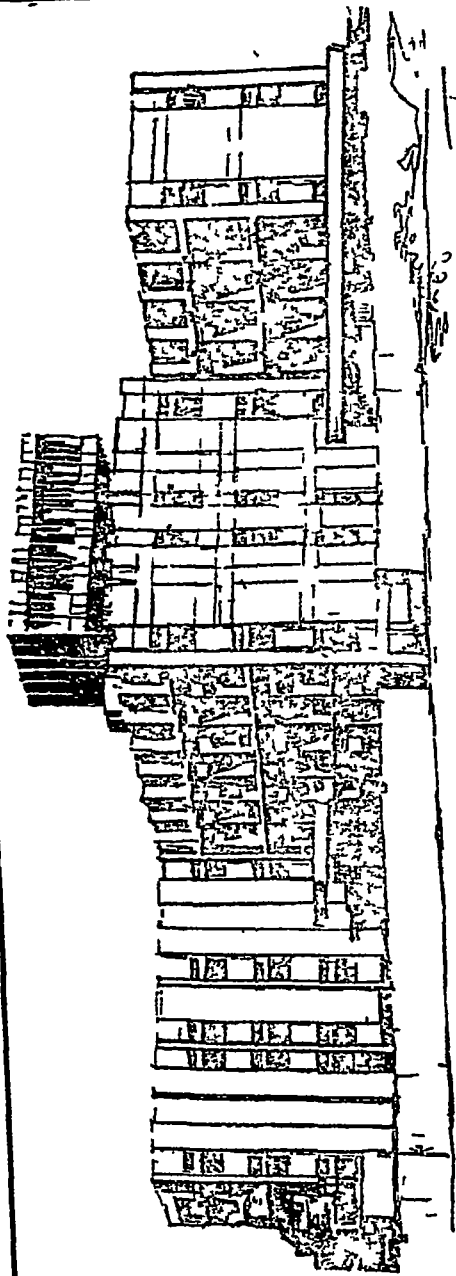
नगर की प्रतिष्ठित कालोनी बापू नगर मे स्थित , रिजर्व बैंक, सुबोध महाविद्यालय व नगर विकास न्यास बिल्डिंग से सटा हुआ, राजस्थान विश्वविद्यालय व सवाई मानसिंह अस्पताल के समीप, रोगियो का सेवास्थल—

सन्तोकबा दुर्लभजी मेमोरियल हास्पिटल, जयपुर

- ☐ 'प्रसूति और नर्सिग होम' से प्रारम्भ होकर यह विशाल हॉस्पिटल इस आधुनिक सुसज्जित रूप से तिमजिली बिल्डिग, रिकार्ड समय केवल दो वर्षों मे तैयार हुई।
- ☐ प्रारम्भ राष्ट्र-सेवा से—दिसम्बर, ७१ मे भारत-पाक युद्ध मे राष्ट्र को सभी सेवायें नि शुल्क समर्पित। जन-साधारण के लिये १ जनवरी,७२ से प्रारम्भ।
- ☐ डाक्टर, कम्पाउन्डर व स्टाफ के लिये क्वार्टस की व्यवस्था। दो नये चार मजिला फ्लेट (डॉक्टर व नर्सिग स्टॉफ के लिये) निर्माणाधीन।
- ☐ मरीजो के परिवारो व सम्बन्धियो के लिये धर्मशाला निर्माणाधीन।
- ☐ 'न लाभ न हानि' उद्देश्य पर आधारित। केवल एक रुपये के साधारण शुल्क मे एम डी डाक्टरो की सेवाये उपलब्ध।
- ☐ ड्रग एव जनरल प्रोवीजन स्टोर तथा कैन्टीन।
- ☐ एयर कूलर/ऐयर कडीशिनिग की साधारण खर्च पर सुविधा उपलब्ध।
- ☐ विदेशी व देशी श्रेष्ठतम व आधुनिक उपकरणो मे सुसज्जित।
- ☐ योग्यतम एव अनुभवी डाक्टरो का विशाल ग्रुप। राजकीय अस्पतालो से भी अधिक वेतनमान।
- ☐ कान्फ्रेंस रूम चलचित्र-प्रोजेक्टर व्यवस्था, ऐक्सरे, लेबोरेट्री एव अन्य सभी व्यवस्था। अनेको नये विभागो का प्रारम्भ व विस्तार।
- ☐ पुस्तकालय देशी व विदेशी जरनल व पुस्तके।
- ☐ बेंक व पोस्ट ऑफिस की सुविधा उपलब्ध।
- ☐ १९७२ वर्ष का लेखा जोखा (एक नजर मे)

कुल खर्च	१०,६१,५४३ ०७
कुल आय	४ २९,४०७ १४
कुल घाटा	६,३२,१३५ ९३

- ☐ 'प्राणी मात्र की सेवा' ही हमारा लक्ष्य है।

भगवान श्री महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव में अपना पूर्ण सहयोग देकर सफल बनाईए

वर्ष १९७४ में भगवान महावीर के निर्वाण प्राप्ति के २५०० वर्ष पूरे हो जाए गे, वह हमारे इतिहास के ऐसे पूज्य महापुरुष हैं जिनका चरित्र और दर्शन विगत युगो की भाति ही दूरस्थ भविष्य तक मानवीय जीवन का निर्देशन करता रहेगा।

इनके जीवन और विचारों को विश्व के सन्मुख प्रस्तुत करना एक पुनीत कर्त्तव्य है

यह हमारी पीढी का अहोभाग्य है कि हम इस एतिहासिक क्षण मे जी रहे है। इसलिए हम सब मिल कर एक होकर २५००वां निर्वाण महोत्सव मनाए।

प्रचार विभाग
श्री जैन नवयुवक मंडल,
जयपुर
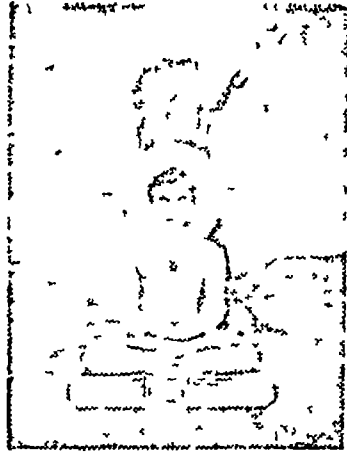
१ ६ ७ ४

भ० महावीर २५वीं निर्वाण शताब्दी

मुनि श्री सुशील कुमार जी

१३ नवम्बर, १९७४ से भगवान महावीर की २५००वी निर्वाण शताब्दी वर्ष के अवसर पर अखिल भारतीय तथा विश्वव्यापी स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है इन अनेकानेक समारोहो के मूल मे निहित पवित्र भावना यही है कि हम इस महापुरुष के व्यक्तित्व कृतित्व को एक बार फिर से नये ढग से जाने, सोचे और समझे, जिसने हमारे चिन्तन को विवेक दिया और विकास की भूमिका दी।

भगवान महावीर के जीवन और दर्शन का सम्बन्ध समस्त मानवता से था। अत. २५वी निर्वाण शताब्दी समारोहो को सफल बनाने के लिए केवल जैन समुदाय ही नही, अपितु मानवोत्थान मे आस्था रखने वाले सभी नागरिको को अपना योगदान देना चाहिए।

इन समारोहो से महावीर के उपदेशानुसार सहिष्णुता और सह-अस्तित्व की भावना को अधिकाधिक लोक गाह्य बनाने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए, अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व, शान्ति, सह अस्तित्व और पारस्परिक सहिष्णुता के तन्तु ही परस्पर जुडकर रज्जु के समान हमारी विभिन्न मन स्थितियो दृष्टिकोणो और धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओ मे एकसूत्रता स्थापित कर सकते है।

भगवान महावीर इस युग के चौबीस तीर्थंकरो मे से अन्तिम तिर्थंकर हैं, उनका जन्म बिहार प्रान्त के वैशाली जनपद के कुण्डल-पुर ग्राम मे हुआ था।

एक व्यक्ति जो अपने युग की सर्वाधिक सम्पन्न नगरी वैशाली के राज परिवार मे जन्मा हो, उसके लिए भौतिक सुख-सुविधाओ की कोई कमी नहीं हो सकती थी, बाल्यकाल मे महान्, उदात्त विचार जिस बालक के मन मे घर कर चुके हो उसे गृहस्थ, वह लोकोत्तर सुख कैसे दे सकता था, जिसकी खोज के लिए उसने जन्म लिया। ३० वर्ष के गृहस्थ जीवन के पश्चात भगवान् महावीर के मस्तिष्क मे एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य के बीच की दूरी, एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से आचरण, उनकी समानताए उनकी असमानताए – जैसे मूल प्रश्न उठने लगे जीवन मे विसगतिया दिखाई पडी, आचरण मे अध्या-त्मिक मूल्यो की हीनता, समाज मे परस्पर शोषण की दुष्प्रवृत्तियो और सभ्यता मे हिसा की कुरीतिया दिखाई पडी।

इस विश्व को, इस विश्व के समाज को और इस समाज के मनुष्य को मनुष्योचित प्रेम की राह पर लाने और उसे रचनात्मक तथा सुधारवादी दृष्टि प्रदान करने का सकल्प उनके मन मे जागा। वे इसी विश्व मे क्षुब्ध हो उठे, जिसे वह प्रेम करते थे और इसी 'प्रेम' ने उन्हे 'त्याग' के लिए विवश किया। त्याग का उनका प्रथम चरण था-गृहत्याग और अन्तिम चरण था– विश्वत्याग 'अर्थात् निर्वाण' वस्तुत यही दोनो त्याग भावना महावीर के जीवन के दो छोर है जिनके बीच मे जो कुछ भी है,वही इस देवतुल्य महापुरुष के जीवन की कहानी है।

तीस वर्ष की इस अवधि मे भगवान ने अनथक देशाटन किया। उन्होंने ज्ञान की दीपशिखा ज्वलित की ताकि मानव एक दूसरे के निकट आए वैषम्य की दूरी समाप्त हो और हिसा के गलघोटू वाता वरण से हटकर अहिसा के सुखद वातावरण मे सास ले सके।

भगवान महावीर ७२ वर्ष की आयु मे निर्वाण को प्राप्त हुए। मानवीय इतिहास के उस महाक्षण को व्यतीत हुए अब ढाई हजार वर्ष पूरे होने को हैं। इसी अवसर पर भगवान महावीर २५वी निर्वाण शताब्दी समारोह के आयोजन की तैयारी की जा रही है।

महावीर का सम्बन्ध पूरी मानवता से है। उनके 'सत्य, अहिंसा, लोभ, त्याग के सिद्धान्त और अनेकान्त' दर्शन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए हैं।

सह-अस्तित्व और सहजीविता के लिए अहिंसा परमावश्यक है--इस तथ्य को आर्यावर्त के मनीषी शिरोधार्य करते आये हैं, महावीर ने सर्वप्रथम इसी अहिंसा के सिद्धान्त को एक सार्वभौम और सार्वकालिक स्वरूप प्रदान किया, इसलिए जैन दर्शन सार्वजनीन भी है और सर्वयुगीन भी।

महावीर स्वामी की उद्घोषणा थी—'अनन्तधर्मात्मिक वस्तु' अर्थात् सत्य अनन्त आयाम वाला है। जो विश्वास और जो चिन्तन हमारा अपना है, वही ठीक है और बाकी सब गलत है, इस धारणा को त्याग कर निहित सत्य को स्वीकार और अंगीकार करना ही हमारे लिए श्रेयकर है। भगवान के ऐसे ही चिन्तन सूत्रो ने मानव के चितनात्मक विकास को असीमित सम्भावनाओ की ओर उन्मुख किया।

सभी जीव पारस्परिक रूप से सम्बन्धित है—"परस्परोपग्रही जीवाना मित्ती मे सव्वभूएसु", हिंसा और द्वेष से ग्रस्त समाज को नई भावभूमि प्रदान करते हुए महावीर ने मानव--मन की उन सहज-वृत्तियो को प्रतिपादित किया जो सब के प्रति मैत्रीभाव और अहिंसा के व्यवहार को पूर्णता की ओर ले जा सके।

महावीर ने जो भी सिद्धान्त प्रतिपादित किये, वे मात्र बौद्धिक उपलब्धि न होकर ठोस जीवन मे उतारे गये प्रयोगो के परिणाम हैं,

इसका स्पष्ट प्रमाण यही है कि न केवल मनुष्य वर्ग अपितु महावीर स्वामी के सम्पर्क मे आने वाले क्रूर और खूखार जीवो की हिंसक वृत्तिया भी मैत्रीभाव मे परिणत हो गई थी, उस समय भाग्यवादिता और दैवाधीनता का वोलवाला था। इन परिस्थितियो मे उन्होने 'परम पुरुषार्थ' का स्वर मुखरित किया, अप्पा कत्ता, विकत्ता य, सुहाण दुहाण य, अप्ता मित्तममित्त च दुपट्टिओ सुपट्टिओ' अर्थात् मनुष्य सुख--दु ख, उत्थान--पतन, मित्र--शत्रु, सुविचार दुर्विचार आदि का स्वयकर्त्ता और भोक्ता है।

नये आध्यात्मिक मूल्यो के साथ ही साथ भगवान महावीर ने मनुष्य के सामाजिक जीवन को भी नए आधार प्रदान किये · कुटुम्ब-कवीला, दास--मालिक तथा विभिन्न वर्गों मे विभक्त समाज के सम्मुख उन्होने कहा, 'एगा मणुस्सस्स जाई' अर्थात् सारे मानव समान हैं और एक ही जाति के हैं। स्त्री और पुरुष की असमानता को उन्होने मिटाया और दास तथा मालिक के भेद को दूर करने का भरपूर प्रयास किया। अपने इन्ही उच्चादर्शो से उन्होने जैन (श्रमण) सस्कृति की लडखडाती परम्परा को पुन जीवित किया। सक्षेप मे भगवान महावीर के उपदेश का सार यह है—

ज इच्छसि अप्पणतो, ज च न इच्छसी अप्पणतो।
त इच्छ परस्स वि वा, एत्तियग जिणसासणय॥

(वृहत्कल्प भाष्य)

अर्थात् जिस वात की अपने लिए इच्छा करो, उस की औरो के लिए भी इच्छा करो, और जो वात अपने लिए नही चाहते, उसे दूसरो के लिए भी न चाहो।

अव हमे अनेकान्तवाद के द्वारा समन्वय को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म वनाकर सभी धर्मों का एक सार्वभौम सनातन परिवार उपस्थित करना होगा—यही आज के युग की नैतिक आवश्यकता है।

७०. महावीर के सन्देश

तर्ज —समझौता गमो से करलो (समझौता)

समता भाव, दिलो मे धरलो,
दया दान, सभी तुम करलो।
वीर के सन्देश, हम को कहते हैं। ओ ..
सम्यभाव दिलो मे धरलो ।। दया....

१ मैं यह मेरा, ममत्व को त्यागो,
कोई न तेरा, मोह नीद, से जागो।
क्या लेकर,आया था,अब सोच ले क्या, ले जाना ?
मुट्ठि बाधे, आया था, अब हाथ पसारे, जाना ।। ओ समता····

२ लोभ और तृष्णा, छोडो भाई।
सग्रह करना, है दुखदाई।
गर सच्चा समाजवाद, भारत मे, तुम को लाना।
अपरिगह, त्याग का मार्ग, जीवन मे अपनाना ।। ओ समता

३ धर्म अहिसा, है यह प्यार,
खुद जीओ, जीने दो नारा।
वेद, पुराण, कुराण ग्रन्थ मे भी, इसका यश गाया।
ईसा और मुहम्मद साहिब, रहम करो फरमाया ।। ओ समता

४ झूठ, कपट, चोरी न करना,
दुर्व्यसनो मे कभी न पडना।
पर नारी है मात बहन सम, बुरे भाव न धरना।
५ युवक मडल, अब 'सुभाग', नीति न्याय पे चलना ।। ओ समता''

———

७१. 'मेरा स्वप्न'

तर्ज —देखा ओ मैंने देखा सपनो की इक रानी को (विक्टोरिया नं २०३)

देखा, मैंने देखा, स्वपनो मे महावीर स्वामी को।
देखा, अन्तर्यामी को, दानी, ज्ञानी, ध्यानी को।
देखा, मैंने देखा ···· ओ, मैंने ·· ॥

१ पुत्र चार बैठे थे, पास, वह उनसे बोले।
भेद भाव न रखना प्रेम का नाता जोडे।
कोई, वक्त भयानक आएगा, आपस मे लडवाएगा।
कौन तुम्हे समझाएगा॥ देखा, मैने ···· ··

२. चाहे कितने पास रहो, चाहे कितनी दूर।
आपस मे मिलकर रहना, मेरे नैनो के नूर।
कोई चारो को आजमाएगा, भेद भाव नही पाएगा।
सर उनका झुक जाएगा॥ देखा मैंने·······

३. श्वेताम्बर, दिगाम्बर, तेरापन्थी स्थानकवासी।
महावीर के लाल सभी, हम है भारत वासी।
गुण उनके अपनाएगे, घर-घर मे फैलाएगे।
'लक्ष्मी' शान बढाएगे॥ देखा मैंने·······

---

७२. विश्व की महान् विभूति

तर्जः—यहां वहा सारे जहां मे तेरा राज है (फिलम आन मिलो सजना)

यहा वहा सारे, भारत मे खुशी आज है।
महावीर स्वामी, तू है जिन्दावाद॥ महा····
धूम से मनाते, जन्म जयन्ति आज हैं। महावीर····

मेरुगिरी पर्वत पर इन्द्र इन्द्रानियो द्वारा महावीर जन्मोत्सव मनाते हुए
चित्ताकर्षक दो दृष्य रजतजयन्ती पर मंडल का विशेष कार्यक्रम ।

डरा द्वारा अभिनीत 'चन्दन बाला' एकाकी का एक दृश्य
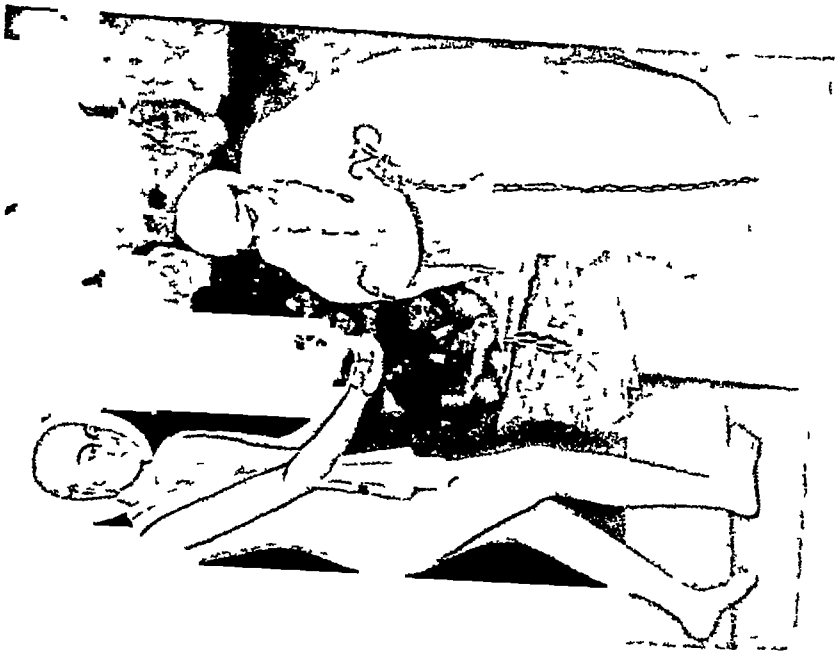
गरशियन फूलझडी नृत्य की एक झाकी

१ पाखड, जुल्म, हिंसा छाई, हर तरफ होती दुहाई।
मन्दिरो मे, वलिया चढने, कटते थे प्राणी।
तुम ने ही किया, सुख शान्ति का साम्राज्य है ।। महावीर....

२ चैत सुदी दिन तेरस प्यारा, चमका भारत का सितारा।
जय जयकारा, जग पुकारा, जन्म तुम्हारा।
तीन लोक झूमे, सब का सरताज है ।। महावीर....

३. त्रिशला माता का वह प्यारा, वेसहारो का सहारा।
जग यह छोडा, मुखडा मोडा, सयम धारा।
निकल पडा घर से, अहिंसा की आवाज है ।। महावीर....

४ त्याग, परिग्रह वताया, शान्ति से जीना सिखाया।
अमृत वाणी, सुनते प्राणी, लाखो है तारे।
'सुभाग' उपकारो पे, हमको वडा नाज है ।। महावीर....

---

७३. उपकारी महावीर

तर्ज—मिलू जो तुम से जी घबराए (फिल्म हीर रांझा)

तेरे दरश को जी ललचाए, देखू तो झूमे गाए।
वही दिन आ गया है। वही.....
मोहनी मूरत मन को लुभाए, हृदय कमल खिल जाए।
जन्म दिन आ गया है। जनम.......

१. तीस साल की उमर मे, तूनें तोडी ममता की जजीर को।
वारह वरस जगलो मे, तपाया है शरीर को।
निर्मल केवल ज्ञान को पाकर, फिर जो सामने आए ।।वही...

२ किया नारा बुलन्द पहला, जियो और जीने दो जहान मे ।
सारे जहा मे गू जा, आप तो विचरे हिन्दोस्तान मे ।
समाजवाद तू ने फैलाया, त्याग के गुण वतलाए ॥ वही…

३ हिंसा को मिटाया तू ने, प्रेम सिखाया इन्सान को ।
कैसा गजब है, भूले हुए हैं एहसान को ।
वीर प्रभु की अमर जयन्ती मिल कर सभी मनाए ॥ वही…

४. ओ त्रिशला दुलारे, महिमा जो देखी तेरे नाम की ।
हम हैं दीवाने तेरे, जपते है माला तेरे नाम की ।
'लक्ष्मी' तेरा गीत है गाए, युवक मण्डल गुण गाए ॥ वही…

---

७४ उपकारी महावीर

तर्ज —ओ आज मौसम है वड़ा (लोफर)

ओ नाम रोशन है तेरा, एहसान है वडा ।
एहसान है, नाम…
महावीर प्रभू जी, गुणगान है तेरा ।
गुण गान है, नाम…

१. माता त्रिशला के, सुत प्राण प्यारे,
सिद्धारथ के, राज दुलारे ।
छोड के ममता, सुख जग के सारे,
हो गए योगी, सयम को धारे ।
तज दिया देखो, झूठा जहान है ॥ नाम…

२. तीस वर्ष, हर जगह वह विचरते,
अमृत वाणी, की वर्षा थे करते ।

ध्यान जगल, गुफाओ मे करते,
कष्टो से वह कभी भी न डरते।
योगी, त्यागी, तपस्वी महान् है ।। नाम''

३ ऊ च नीच का, भेद हटाया,
जुल्म पाखण्ड, तुम ने मिटाया ।
दानवो को था, मानव बनाया,
सुख शान्ति का, साम्राज्य छाया ।
अपनाया सभी नें फरमान है ।। नाम''''

४ क्षमा मूरत और था विषधारी,
युद्ध अहिंसा और हिंसा मे भारी।
चण्डकोषी ने जब ढक मारे,
दया दृष्टी, तेरी समता धारी।
जीत अहिंसा की,'सुभाग'महान है ।। नाम'

---

७५ महावीर जन्मोत्सव

तर्ज —छम छम छम छम घु घरु बाजे (सुहाना सफर)

जय जय जय जय, बोले जग सारा ।
जन्मे हैं तारनहारा, छाई खुशिया,
तीन लोक से न्यारा, वीर प्रभू प्यारा ।। हमारा''

१ भारत का उजडा, चमन फिर खिला है । ...२. ..
दीन दु खी जीवो को, सहारा मिला है ।। जय '''

२ राजा सिद्धारथ, के आज अ गना ।''''२''''

गाए सब वधाईया, देखो चाद सा ललना ।। जय····

३. रतनो का पलना, रेशम की डोरी ।····२····
माता त्रिशला झुलाए, गाए है लोरी ।। जय···

४. देव भी आए, इन्द्र धरणेन्द्र आए ।····२····
वन्दन करे, मगल गीत गाए ।। जय····

५. प्रभू की जयन्ती, हम आज मनाते ।····२····
प्रभू के गुणो को, 'सुभाग' हैं गाते ।। जय····

---

७६. विश्व का चमकता सितारा

तर्ज—बिंदिया चमकेगी (फिल्म : दो रास्ते)

धरती चमकी थी माता हरशी थी ।
इस देश मे तूनें जन्म लिया ।।

१. आया अंगना त्रिशला जी का ललना, तू जिस दिन जाया था ।
चैत्र सुदी तेरस का दिन था, घर घर आनन्द छाया ।
ममता बरसी थी, दुनिया हर्षी थी, देवो ने जय जय कार
किया ।। धरती········

२. योगी बन के, तूने सारे जग को, है जीना सिखलाया ।
इक दूजे से नफरत छोड़ो, प्यार का नाता जोड़ो ।
तेरी वाणी ने अमर कहानी ने, उस युग नूं सब ने याद
किया ।। धरती········

३ तुमने स्वामी है जग को जगाया, था अपने ज्ञान से ।
माने या ना माने दुनियां, याद करेगी इक दिन ।

ना कोई रोके से, ना कोई टोके से, रंग लायेगा कभी
उपकार तेरा ।। धरती……

४ कोई समझे, या ना कोई समझे, किसी पर जोर नही ।
जियो और जीने दो, है यह वीर प्रभु का नारा ।
इक नारे से, इक ललकारे, से अज वीर प्रभू नूं याद
किया ।। धरती ……

५ जग गाये है गीत तुम्हारे, यह शुभ दिन आया है ।
जय वोलो महावीर प्रभु की, सुरनर मगल गायें ।
युवक मण्डल ने, मिलकर भक्ति मे, अज वीर प्रभू नू
याद किया ।। धरती……

---

७७. त्यागी महावीर

तर्ज —यारी हो गई यार से (वो चोर)

त्यागी महावीर की, जय वोलो ।
सत्य ज्ञान दिया, सारे ससार को ।। त्यागी……

१. मानव वना दानव था, हिंसा का जोर था ।
धर्म-कर्म भूली दुनिया, पापो का दौर था ।
देखो चारो तरफ, खून की धारें को ।। त्यागी……

२ चैत्र सुदि तेरस का, शुभ दिन वह आ गया ।
वीर प्रभू का जन्म हुआ, त्रिभुवन हर्षा गया ।
पुत्र रत्न मिला, था वह परिवार को ।। त्यागी……

३ संयम का रंग वह कैसा, जीवन मे छा गया।
दुनिया के वैभव ठुकरा, वैरागी हो गया।
देख के दुख भरे, झूठे व्यवहार को ॥ त्यागी........

४. वीर प्रभू भारत का, अभिमान बन गया।
जिसने सुना उप देश तेरा, इन्सान बन गया।
'सुभाग' नमे तारनहार को ॥ त्यागी... ...

---

७८. चौबीस्वे तीर्थंकर

तर्ज.—दो बेचारे, बिना सहारे [विक्टोरिया न० २०३]

वह सहारे, तारन हारे, महावीर जिनेश्वर प्यारे।
तिर्थंकर चौबीस्वे है वह, स्वामी नाथ सहारे।
तेरी भक्ति का मस्ताना, यह जमाना था दीवाना।
नाम उनका दिलमे ध्याना, अब आना....प्रभू के गुण गाना ॥
वह सहारे........

१ क्षत्रीकुण्ड, नगरी थी, वह एक सुहानी।
जहा राजा सिद्धारथ, त्रिशला रानी।
देखे रानी, चौदह स्वप्न, बढे लासानी।
राजा को हाल सुनाया, पण्डित पुरोहितो को बुलाया।
पूछे फल राजा रानी, होगा पुत्र रत्न ज्ञानी,
त्रिभुवन मे पूज्य स्वामी, सुन लेना... प्रभू के गुण गाना ॥

२. वह आया, चैत्र सुदि तेरस दिन आया।
हर्षाया, तीन लोक मे आनन्द छाया।
मन भाया, महावीर ने जन्म था पाया।

देवी देवता मिलकर आए, नाचे मगल गीत गाए।
राजा खुशिया मनाए, सारे खजाने खुलाए,
नर नारी सब पाए, आ जाना प्रभू के गुण गाना ॥

३. देवी–देवो ने, मेरु पर्वत है, खूब सजाया।
धरणेन्द्र प्रभू जी को, वहा ले आया।
न्हवन है कराने को, जब गोद बिठाया।
नन्ही सी देह जल भारी, यह शका मन मे विचारी।
प्रभू अगुष्ट लगाया, मेरु पर्वत थर्राया,
महावीर नाम पाया, सबने शीश झुकाया,
है 'सुभाग' हर्षाया, सब आना...... प्रभू के गुण गाना

———

७६ जग हितकारी 'महावीर'

तर्ज मैं तुम से मिलने आई (हीरा)

हम सब मिल कर के आए, प्रभु वीर का दर्शन पाने।
है घर घर आनन्द छाए, गाओ गीत सुहाने।
पच्चीस सौ साल पहले का, दिन है याद आया।
हा — आया, वही दिन है आया,
चैत सुदि तेरस का दिन था, सुरनर हुए दीवाने ॥ हम·

१ त्रिशला माता की गोदी मे, चाद सा ललना आया।
सूरज जैसा तेज था जिन मे, सुन्दर सोहनी काया।
सब खुशिया मनाए, कोई नाचें गाएं।
रतनो के झूने मे झूले, आए सभी झुलानें ॥ हम·

२. सिद्धारथ राजा ने इक दम, यह आदेश सुनाया।
छोड दो जितने अपराधी हो आज है वह दिन आया।
जगमग दीप जलाओ, सारी नगरी सजाओ।
हर कोने मे नोवत वाजे, गाओ मंगल गाने।

३. तीस वर्ष के निर्मोही ने जग से नाता तोडा।
सयम लेकर वन गए योगी जंगल को मुख मोड़ा।
घोर तप हैं किए, कितने कष्ट सहे।
वारह वर्ष लगे इन जंगलो मे, घाती कर्म खपाने ।। हम""

४. ४२वर्ष की आयु में वह, वन गए पूर्ण ज्ञानी।
तीस वर्ष तक घूम घूम, वर्षाई अमृत वाणी।
वह था भारत का लाल, उनका हृदय विशाल।
तीन लोक में महिमा जिनकी, हुए सभी दीवाने ।। हम"'

५ अन्त समय को जान के स्वामी, पावापुर में आए।
सोलह पहर तक देके देशना, मुक्तिपुरी को सिद्धाए।
युवक मंडल कहे, 'लक्ष्मी' अर्जी करे।
घर घर में फैलादो वाणी, अमर रहे अफसाने। हम""

---

८०. अमर 'महावीर'

तर्ज — मैं शायर तो नहीं (बॉबी)

ए वीर अव तूं नही, मगर यह जग वही।
तेरी महिमा, सोर जगमे, आज भी कम नही ।।

१. साल २५०० पहले का, दिन याद है,
ऐसा लगता है, जैसे वह दिन आज है।

माता त्रिशला के नैनो का तारा है तू,
देश भारत पे हम को बडा नाज है।
आज भी सामने हो, हमारे अभी, यह क्या बात है
इसमे क्या राज है।
कोई जानता नही ॥ मगर यह जग ...

२ सब से पहले यह आवाज दी आपने,
भेद भाव मिटाए सभी आपने।
प्रेम से रहना जग मे सिखाया हमे,
खुद भी जीओ और जीनेदो ससार मे।
लेके झण्डा अहिंसा का लहरा दिया,
सर झुकाया तभी सारे ससार ने।
यह उपकार कम नही ॥ मगर यह जग ....

३ अगर तेरे उपदेश न मानते,
यह इन्सान को इन्सान न पहचानते।
है उपकार हम पर के जितने तेरे।
यह ससार वाले, सभी जानते।
चाहे जितनी गुजर जाए, सदियाँ मगर।
हैं दिवाने तेरे, आज भी मानते।
हमे कोई गम नही ॥ मगर यह जग... ....

४ यह चाद और सितारे जहां तक रहे,
अमर तेरी वाणी वहा तक रहे।
तू है ब्रह्म ज्ञानी, वीतरागी है,
तेरे गुण सदा जग मे गाते रहे।
युवक मडल यू ही गीत गाता रहे,
'लक्ष्मी' तेरे चरनो मे हर दम रहे।
वह मन्दिर है मन यही ॥ मगर यह जग ......

८१. भगवान महावीर पर उपसर्ग

तर्ज:—झूठ बोले कौआ काटे (बॉबी)

घोर तप से, कर्म काटे, ऐसे वीर को नमियो।
उपसर्गों से न घबराए, गुण उनके सब गाईयो॥

१ तीस वर्ष की आयु थी, घर बार यह तुमने छोडा था।
राज्य पाठ यह छोडा था, ममता से नाता तोडा था।
ससार से मुखडा मोडा था, सयम ने नाता जोडा था।
त्याग करे, जगल मे जाए, ऐसे योगी को नमियो॥ उप…

२ जगल मे ध्यान लगाया था, ग्वाला गाये ले आया था।
वही छोड के गाये आया था, वापस आ कर न पाया था।
वह क्रोध मे भर आया था, लकडी के कीलें लाया था।
गाड दिए कानो मे प्रभू के, समता भावी को नमियो॥ उप…

३ शूलपाणी था यक्ष एक, कई रूप बदल कर आया था।
प्रभू ध्यान मे थे डराया था, वह शेर बनकर आया था।
फिर चिटिया बन सताया था, लोहे का गोला ढाया था।
घस गए धरती मे आधे, महावीर को नमियो॥ उप…

४ ग्वाले ने पग मे आग जला, हाडी मे खीर पकाया था।
वह सर्प चण्डकोषि ने, प्रभू जी को डक लगाया था।
ध्यान बारह वर्ष लगया था, दुष्कर्म को खपाया था।
ज्ञान की ज्योत'सुभाग'प्रकाशे, केवल ज्ञानी को नमियो॥ उप…

८२. जन्म जयन्ती

तर्जः—देखो राजा देखो, दिल वाले (प्राण जाय पर वचन न जाए)

देखो आज देखो, जग वाले, झूमें खुशी मे।
होके दीवाने, जगवाले, झूमें खुशी मे॥ देखो

१ चैत्र सुदि का दिन तेरस, मशहूर है।
जन्म हुआ प्रभू का, चमका इक नूर है।
त्रिशला माता के अगना में, चाद खिला मतवाला है।
भारत का था भाग्य खुला, दुनिया का रखवाला है।
सिद्धारथ, राजा, मुख चूमे, झूमे खुशी में॥ होके…

२ तीन भुवन मे आज, दुधभी वजी है।
क्षत्री कुण्ड सारी वह, नगरी सजी है।
गली गली हर चौरस्ते मे, होते नाच और गाने हैं।
जी भर के ले लो राजा ने, खोले आज खजाने हैं।
चहुँ ओर, मची आज, धूमें, झूमे खुशी मे॥ होके…

३ देव प्रभू को, मेरु गिरिवर ले आए।
न्हवन करावें खूब उत्सव मनाए।
शका हुई, धरणेन्द्र के मनमे, छिन मे प्रभू निवारा था।
एक अगूठे से ही, मेरु पर्वत को कपाया था।
महावीर, कहलाए, तभी से, झूमे खुशी मे॥ होके…

४. जग हितकारी, तुम्हे कैसे भुलाए।
दिल मे वसी है सूरत, कैसे दिखाए।
वीत गए पच्चीस सौ साल, तेरे ही गुण गाते हैं।
तेरा जन्मदिन आता है, फूले नही समाते हैं।
गाए युवक मण्डल, है 'सुभाग' झूमे खुशी मे॥ होके…

भगवान महावीर और चण्डकोषिक सर्प

(रचियता—सुभागचन्द नाहटा)

एक घनघोर सुनसान जगल था। जहा चहुँ ओर निर्जनता छाई हुई थी। किन्तु वह जगल हमेशा ऐसे न था। एक समय वहाँ से होकर एक राज मार्ग निकलता था जहाँ से राजा महाराजा और सरदार सामन्त रथ और घोडो पर गुजरा करते थे। एक दिन एक भयानक सर्प इस जगल मे आ पहुँचा। जिसकी फुक्कार कोसो दूर तक असर करती। सामने आने वाले प्राणी का शरीर काला पड जाता। उसने धीरे-धीरे वहा आने जाने वाले मुसाफिरो को डसना शुरू किया। अब लोग उधर से गुजरने मे घबराने लगे। धीरे-धीरे यह रास्ता उजड़ गया। मनुष्य के खून के प्यासे उस सर्प को अब मनुष्य मिलना मुशकिल हो गया। उसने वहा के पशु पक्षियो पर अपना दाव जमाना शुरू किया वह भी डर कर उस जगल से निकल गए। इस

सर्प ने इस सुन्दर वन को उजाड दिया।

एक दिन इस निर्जन जगल के मार्ग पर एक योगी के चरण पडे। वह योगी महान तपस्वी भगवान श्री महावीर स्वामी थे। गाव वालो ने उन्हे जाता देख कर उधर न जाने की विनती की। पर योगी किस का नाम, वह किसी की क्यो सुनते। वह आगे बढे। तो गाव वाले चारो तरफ आकर के और घबरा कर हाथ जोडकर के प्रार्थना करने लगे। महाराज इस रास्ते मे एक भयकर सर्प निवास करता है, जिसने मनुष्य मात्र तो क्या पशु-पक्षियो तक का विनाश कर डाला है। इधर जो भी गया है वह आज तक बच कर वापिस नही आया। हम आप को हाथ जोडते हैं, आप के पाव पकडते हैं आप से प्रार्थना करते हैं, हे प्रभू आप इस रास्ते से मत जाईए, प्रभू मत जाईए। क्या कहते हैं :—

तर्ज —चाहे मन्दिर मसजिद तोड़ो (बांबी)

सुन लो, भगवन अब जिद्द छोडो।
प्रभू वीर, महावीर ....
दुश्वार बडा जगल मत जाओ ओ ... ...
इक बिल मे विषधर रहता।
इस रास्ते से, जो भी गुजरे।
लौट के वापिस कभी आए ना॥

चण्डकोषिया सर्प है स्वामी, वह डरावना।
प्रभू लौट आओ न जा, प्रभू लौट आओ न जा।
प्रभू लौट आओ न जाओ, मेरी मान जाओ न।
सुन लो स्वामी राह विकट, जीवन गवाओ ना॥

क्रोध और जहर भरा है उस मे।
ऐसी फुक्कार लगाए। क्रोध ...
प्राणी के तब प्राण ही निकलें।

वही ढेर हो जाए।
जहा सामने मौत खडी हो। ओ....जहां
उन राहो से नही गुजरना ॥ गुजरना.....

चण्डकोषिया सर्प है, स्वामी वह डरावना।
प्रभू लौट आओ न जा, प्रभू लौट आओ न जा।
प्रभू लौट आओ न जाओ, मेरी मान जाओ ना।
सुन लो स्वामी, राह विकट, जीवन गवाओ ना।
जाओ ना.... प्रभू ना जाओ ना.....

पर वह किसी की नही सुनते, सुने भी क्यूं ? घोर तप से कर्म-रूपी जाल को काट कर आत्म कल्याण करने वाले क्या मौत से डरते हैं। वह तो मानो मौत को हथेली मे लिए हुए बढने लगे.—

फिर क्या हुआ :—

तर्ज:— पीते पीते कभी कभी यह जाम (बैराग)

चलते चलते वीर प्रभू भगवान, वनो मे जाते हैं।
वह न घबराते हैं, कष्ट सहे जाते हैं।
आंधी तूफान से टकराते हैं ॥ चलते....

१. चण्डकोषिया सर्प के बिल पर, जाकर ध्यान लगा दिया।
अाई गन्ध मानव की, विषधर बाहर निकल कर आ गया।
सोचा यह किसकी मौत आई है आज। सोचा.......
पास प्रभू के आया, देख फुक्कार लगाया।
ध्यानी महावीर न डर पाते हैं ॥ चलते ....

२. हुआ असर न जब फुंक्कार का,तब लिपट कर कस लिया।
जहर उगल कर तीन बार है, पग पे प्रभू के डस लिया।

हुआ युद्ध 'अहिंसा' का 'हिंसा' के साथ। हुआ ··· ·
प्रभु शान्त भाव मुद्रा मे, वहे दूध धार चरनो सें।
दया अमृत वह वर्षाते हैं।। चलते ··· ····

३ दया दृष्टी भगवन की देखी, क्रोध वैर सब मिट गया।
हार हुई हिंसा की, विषधर प्रभू चरणो मे झुक गया।
प्रभु तो वहा से चले गए। प्रभु तो
वह साप शान्त रहता है, भव से वह तिर जाता है।
सदा 'सभाग' गुण गाते हैं।। चलते ··

लोग 'भगवान महावीर' की जय बोलते वन में आए। सभी कहने लगे, सच्चा निर्भय इसी को कहते हैं। निर्भय को भय क्या ?

वह साप तो उसी दशा मे पडा था। दुनियाँ के लोगो ने उसे देव मान कर पूजा करना शुरू किया। वे उस पर घी दूध व वैवेद्य चढाने लगे। इस पूजा ने उसके प्राण ले लिए। घी दूध और नैवेद्य की गध से चीटिया आई और चीटियो ने घी दूध के साथ सर्प की काया को भी खा लिया। पर जिसे अमृतकूप हाथ लगा हो, उसे फिर काया का मोह क्यो ? उसने काया मोह छोड कर सदगति प्राप्त की।

शिक्षण केन्द्र के छोटे-छोटे बच्चे प्रसिद्ध डका नृत्य करते हुए।

मंडल के सब से नन्हे मुन्हे कलाकार "सुधीर नाहटा" सभा को आकर्षित करते हुए।
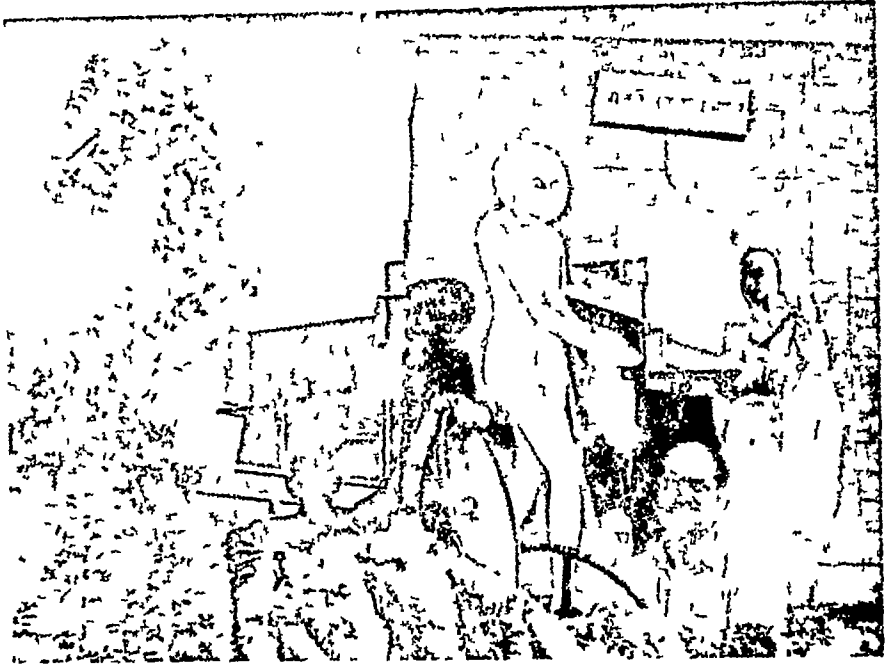
महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर मडल द्वारा प्रस्तुत दो भव्य झाकिया (ऊपर) चन्दन वाला भगवान को अहार वोहराते हुए (नीचे) त्रिशला माता के देखे हुये स्वपनो का सिद्धार्थ राजा राजपुरोहितो से फल पूछ रहे हैं।

दादा गुरुदेव के भक्ति गीत

८५. दादा कुशल सूरि की अमर गाथा

तर्ज'—तू न मिली तो हम जोगी बन [विक्टोरिया न० २०३]

दादा गुरु के हम, सदा गुण गाए गे, कुशल गुरु के।
चरण कमल के पुजारी बन जाए गे, कुशल ......॥

१ जिल्हागर पिता के प्यारे, माता जैतसिरी के दुलारे।
माडवार समियाणा ग्राम मे, झूम रहे सब घूम धाम सें।
जन्म लिया वह तारन हारे, जिन शाशन के है रखवारे।
द्वार पे आके सदा शीस झुकाए गे ॥ कुशल.. .. . ...

२ आयु दस वर्ष की आई, रीत प्रीत जग की न भाई।
शुभ दिन था वह शुभ घडी थी, वाणी सुनी जिन चन्द्रसूरि की।
सयम की धुन मन मे समाई, माता पिता से आज्ञा पाई।
योगी बने वह, कुशलकीर्ति कहलाए थे ॥ कुशल ... ...

३ नगर नगर गुरुवर थे जाते, अमृत वाणी वह वर्षाते।
सिन्ध प्रान्त मे आप पधारे, दुखियो के थे कष्ट निवारे।
हिन्दू मुस्लिम, सिख सब आते, गुरूवर के वह गुण अपनाते।
हिंसा मिटाई, मास मदिरा छुडाए रे। कुशल ....

४ गुरुवर की महिमा अति भारी, झुकती थी यह दुनिया सारी।
चमत्कार तुमने दिखलाए, जैन पच्चास हजार बनाए।
बारह सौ थे शिष्य उपकारी, हितकारी दादा अवतारी।
तेरे उपकारो को, न भूल हम पाए गे ॥ कुशल' . .

५ नाव को जब खतरे मे पाया, समयसुन्दर कविवर घबराया।
सग था श्रीसघ तूफान आया, सब ने गुरु का ध्यान लगाया।

गुरुवर तुमने आन बचाया, सकट उनका सभी मिटाया।
नैया तिराई तुमने, हम भी सदा ध्याए गे ।। कुशल ·····

६ देरावर नगरी मे आए, वही पे गुरुवर स्वर्ग सिद्धाए।
फागुण सुदि पूनम जब आए, दिल दर्शन को है ललचाए।
मालपुरे मे दर्श दिखाए, युवक मडल झूमे गाए।
लाज 'सुभाग' की भी गुरुवर निभाए गे ।। कुशल ·····

---

८६. भक्तों की पुकार

तर्ज —पल भर के लिए कोई (फिल्म जानी मेरा नाम)

पल भर के लिए भक्तो की, पुकार सुन लो, थोडी ही सही।
अब दर्शन देना होगा, इक बार सुन लो, थोडा ही सही।

१ हमने सदा आप ही को पुकारा, तुमने दिया हमको हरदम सहारा।
हर दम सहारा दिया दुखडा निवारा, मन के ही भीतर है नाम तुम्हारा
देखो तडपे हैं मन, आवाज सुन लो ।। थोडी ही ·····

२ तोरा नाम जपे, सब विपत टले, तोरी चरण पडत, मन चैन पडे।
तोरे नाम से भूत पिशाच डरे, तोरे दर पे पडे, सब छोटे बडे।
माना कोई हम से भूल पडी है, तेरी कृपा तो सदा ही रही है।
अब भूलें हमारी, आप माफ कर दो ।। थोडी ही·····

३. तेरे चरण के हम है पुजारी, तेरे दर्श के हम हैं भिखारी।
हम तो भिखारी भर दो झोली हमारी, दर से तेरे कोई जाये न खाली।
यह तो विनती हमारी स्वीकार करलो ।। थोडी ही सही।

४ अजमेर गये, सागानेर गये, हम मालपुरे बीकानेर गये।
तेरी तो चरचा है सारे जहान मे, छोटे बड़े दादा दादा पुकारें।
अब तो देहली मे, पूरे अरमान करदो ॥ थोडे ही ·····

५ हमने सुना जब से मेला है भारी, देहली मे देखी है तेरी सवारी।
तेरी सवारी की तो शान निराली, जयपुर से आई है मडली हमारी।
कहे 'लक्ष्मी' यह नैया अब पार करदो ॥ थोडी ही ··

——————

८७ दादा श्री जिनदत्त सूरि की अमर कहानी

तर्ज—यारा दिलदारा मेरा दिल [आदमी और इन्सान]

तुम्हारा नाम प्यारा सब दुख हरता।
दिल मे तुझ को घ्याए, तेरे ही गुण गाए। दुख
ओ ···श्री जिनदत्त सूरी, सहारे हमारे ॥ दुख ··

१ गुजरात मे धोलका, ग्राम तेरा प्यारा है। ग्राम ·
सम्वत् ११३२, जन्म तुम्हारा है। जन्म ··
धन्य वह पिता, वाच्छिग का दुलारा है। वाच्छिग ···
वाहड़ देवी माता की, अखियो का तारा है। अखियो ··
ओ ···नौ वर्ष की आयु थी, दीक्षा का धारा ॥ दुख ···

२ जुल्म और हिंसा, इस धरती पे छाई थी। धरती ···
दुखी हर प्राणी, चहू ओर दुहाई। चहू ··
अमृत वाणी, गुरुवर बरसाई। गुरुवर····
जैन धर्म की, शान बढाई थी। शान····
ओ सवा लाख नए, जैन बनाए ॥ दुख··

३ विजली गिरी तो,पात्रे से, ढक डाली । पात्रे·
मन्त्र सुनाया, मरी गाय उठ चाली । मरी··
मुगल पूत की, जान वचा ली थी । जान·
विक्रमपुर, की विपता टाली थी । विपता ···
ओ सारे जहान मे थे, चर्चे तुम्हारे ।। दुख· ··

४ पाच पीरो को, राह दिखलाई थी । राह
योगनि चौसठ, शरण मे आई थी । शरण· ·
वश मे वावन, वीर सहाई थे । वीर ·
युग प्रधान की, पदवी पाई थी । पदवी
ओ देखे चमत्कार, झुक गए सारे ।। दुख ·

५ वीते आठ सौ वर्ष अमर कहानी है । अमर· ·
अजमेर दादावाडी, गुरु की निशानी है । गुरु· ··
स्वर्ग सिद्धारे यहा मूरत सुहानी है । मूरत ·
भक्तो पे रहती सदा,तेरी मेहरवानी है । तेरी
ओ दास 'सुभाग'युवक मण्डल पुकारे ।। दुख ··

---

८८. उपकारी मणिधारी

तर्ज —मिलूं न तुम से जी घबराए (फिलम हीर राझा)

तेरे दर्श को जी ललचाये, देखू तो झूमे गाये ।
हमे गुरू मिल गया है ।। हमे ··· ··

मोहनी मूरत मन को लुभाए, हृदय कमल खिल जाए ।
हमे गुरू मिल गया है ।। हमे· ··

१ देहली के राजा, तेरी अर्थी उठी ना माणक चौक मे।
शाही फरमान से भी, हिल न सकी हाथी के जोर से।
राजा राणा शीस नमावे, वही चरण पधराये ॥ हमे·····

२ छ साल की उमर मे, तूनें, तोडी ममता की जजीर को।
दो ही वर्ष मे, पदवी आचार्य मिली आप को।
मणी मस्तक मे, ज्ञान की चमके, मणिधारी कहलाये ॥ हमे····

३ सारा श्री सघ साथ घेरा डाकुओ ने आके तुझे राह मे।
वाह रे, फकीर खेंची ऐसी लकीर तूने राह मे।
देख २ डाकू घबराये आख से ना दिख पाये ॥ हमे·······

4 ओ मन वसिया, देखो जो महिमा तेरे नाम की।
दर पे सवाली पड़े, जपते है माला तेरे नाम की।
लक्ष्मी' तुम्ही से प्रीत लगाये, तुम्ही को हाल सुनाये ॥ हमे

८९. चौथे दादा श्री जिनचन्द्र सूरी की 'अमर गाथा

तर्ज —मुझे पीने की आदत खराब हो गई (बनारसी बाबू)

दादा चन्द्र सूरीश्वर की शान हो गई।
जिन धर्म की,महिमा महान हो गई ॥ जिन

१ जोधपुर मे, खेतसर नगरी मे तेरा जन्म हुआ था।
माता श्रीया देवी को, पुत्र रत्न मिला।
श्रीवन्त शाह पिता का, देखो भाग्य खिला।
फूले फले जब आयु ९ साल हो गई।
हुए वैरागी, दीक्षा ली कमाल हो गई ॥ जिन

२ नाम है उनका, सुमतिधीर हुआ है देखो नाम है उनका।
अब तो वह मन लगाके खूब पढने लगे ।
व्याख्यान शास्त्रवाद खूब करने लगे।
विद्या की उनमे कैसी, झलक खिल गई।
आयु सत्रह वर्ष, आचार्य पदवी मिल गई।। जिन

३ देखो देखो, अकवर वादशाह पूजे उनको, देखो २ ।
सुनी जो महिमा गुरुवर की, लाहौर वुलाया।
हुई श्रद्धा गुरु पे, फरमान निकलाया।
अहिंसा की आवाज फिर बुलन्द हो गई ।
जगह जगह है जीव, हिंसा वन्द हो गई। जिन

४ सव ने देखा, वकरी की लीला को, सारे जगने देखा।
तहखाने मे वकरी को है, मुगलो ने छिपाया।
गुरुवर गुजरे उस राह से, यह भेद वताया।
वकरी थी एक, अव तो तीन जान हो गईं।
अकवर शरण लीना, दुनिया हैरान हो गई।। जिन

५ देखो देखो, गुरुवर को वदनाम करे, वह काजी देखो।
मन्त्र वल से हैं, उसने था टोपी को उडाया।
गुरुवर ने रजोहरण से है, पीछा कराया।
टोपी गिरी फिर काजी के ही सर पे आ गई।
सव ने है सर झुकाया, जय-जयकार हो गई।। जिन

६ हम से पूछो, कितने चमत्कारी गुरुवर, हम से पूछो ।
अमावस थी, गुरु शिष्य ने था पूनम वताया।
इस भूल का मज़ाक, मौलवी ने मचाया।
गुरुवर ने लाज रखी, स्वर्ण थाल उडाया।
अमावस्या को पूनम का हे, चान्द उगाया। जिन

७. पदवी देखो, युग प्रधान की पदवी अकवर दीनी देखो।
घूम घूम के गुरुवर जी, विलाडा अव आए।
अन्त समय आया, यही पे स्वर्ग सिद्धाए।
'सुभाग' यह समाधि, गुरुवर की बन गई।
युवक मडल, जो आया द्वार, विगडी वन गई।। जिन....

---

६०. दादा कुशल सूरी की स्तुति

तर्ज —तेरे होटो के दो फूल प्यारे प्यारे [पारस]

दादा कुशल गुरू है प्यारे न्यारे।
जो भी ध्याए, मिट जाए दुख सारे।
अब दर्शन हमे, दिखा देना।। दिखला....

१. जब जब हैं सकट आए, गुरूवर तुमने ही मिटाए।
यही मालपुरे मे दर्शन, गुरुवर तुमने दिखलाए।
जो भी लाए अरदास, पूरी हो जाती है आस।
हम को न गुरू, भुला देना।। भुला देना...

२ तेरी वाणी अमृत जैसी, सुनी जिसने हुआ वह दीवाना।
तेरी मोहनी मूरत कैसी, था रूप अनूपम सुहाना।
जैनी पच्चास हजार, बने तेरे उपकार।
अब जल्वा वही, दिखा देना।। दिखला देना.......

३ कवि समयसुन्दर घबराए, जब डूब रही थी नैया।
तेरा ही ध्यान लगाए, तुम्ही बन गए खेवैया।
श्री सघ हर्षाए, सब शीश झुकाए।
'सुभाग' की लाज निभा देना।। निभा देना.....

- श्रमणोपासक, श्रावक के तीन मनोरथ
  आचार्यदेव विजय समुन्द्र सूरि जी म०
- संयम जीवन का विकास है
  आचार्य श्री तुलसी जी महाराज
- हाय लुट गया
  साध्वी श्री विचक्षण श्री जी म०
- मैं कौन हूँ
  डॉ० हुकमचन्द जी भारिल्ल
  (शास्त्री न्यायतीर्थ)

श्रमणोपासक, श्रावक के तीन मनोरथ

आचार्य देव विजय समुन्द्रसूरि जी म०

श्री श्रमणोपासक-श्रावक को चार घडी रात शेप रहे तब निद्रा को त्याग करके चारपाई पथारी से उठ जाना चाहिए और देव गुरु, धर्म का स्मरण और नवकार मन्त्र का जाप और २४ तीर्थकर देवो आदि महापुरुषो का स्मरण करना चाहिये और एसी भी= भावना भानी चाहिये कि "उपसर्गों की प्राप्ति होने पर भी अपने व्रत के रक्षरण और पालन मे दृढ रहने वाले कामदेव आदि श्रावक तीर्थंकरो की प्रशसा के पात्र बने थे। अतः वे धन्य हैं।"
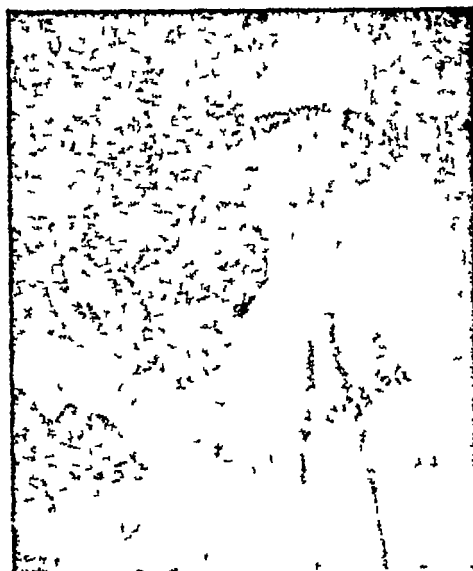
श्रावकत्व की प्राप्ति होने पर वह वीतराग जिनेन्द्र को देव, दया को धर्म और पच महाव्रतधारी साधु को गुरु के रूप मे स्वीकार करता है। ऐसे शुद्ध देव, गुरु और धर्म को मानने वाले श्रावक की कौन बुद्धिमान प्रशसा नही करेगा ?

वे तीन मनोरथ इस प्रकार हैं।

जैन-धर्म सें वचित होकर मैं चक्रवर्ती भी न होऊँ, किन्तु जैन-धर्म को प्राप्त करके मुझे दास होना और दरिद्र होना भी स्वीकार है।

श्रावक को प्रतिदिन यह मनोरथ करना चाहिए कि "मेरे जीवन मे वह मगलमय दिन कब आएगा, जब मैं समस्त पर-पदार्थों के सयोगो का त्यागी, जीर्ण-शीर्ण वस्त्र का धारक, शरीर के स्नान आदि सस्कार सें निरपेक्ष होकर मधुकरी वृति युक्त मुनिचर्या का अवलम्बन लूँगा।"

"अनाचारियो की सगति का त्याग करके, गुरुदेव की चरण-रज का स्पर्श करता हुआ, योग का अभ्यास जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने मे मैं कब समर्थ होऊँगा?"

ऐसा अवसर कब आएगा कि "मैं घोर रात्रि के समय, नगर से बाहर निश्चल भाव से कार्योत्सर्ग मे लीन रहूँ और मुझे स्तभ-खभा समझ कर बैल मेरे शरीर से अपना कधा घिसे? मुझे ध्यान की ऐसी तल्लीनता और निश्चलता कब प्राप्त होगी?"

अहा! कब वह अवसर प्राप्त होगा कि "मैं वन मे पद्मासन जमाकर स्थित होऊँ, हिरन के बच्चे मेरी गोद मे आकर बैठ जाएँ और मृगो की टोली का मुखिया वृद्ध मृग मुझे जड समझ कर मेरे मुख को सूँघे?"

ऐसा शुभ अवसर कब आएगा कि "मैं शत्रु और मित्र पर, तृण और स्त्रियो के समूह पर, स्वर्ण और पाषाण पर, मणि और मिट्टी पर तथा मोक्ष और ससार पर समबुद्धि रख सकूँ? अर्थात् समस्त दु खो का निवारक और समस्त सुख का कारण समभाव मुझे कब प्राप्त होगा?"

यह मनोरथ मोक्ष रूपी महल मे प्रविष्ट होने के लिए "निश्रेणि-नसैनी" के समान गुणस्थानो की श्रेणी पर उत्तरोत्तर आरूढ होने के लिए आवश्यक है। परमानद रूपी लता के कद है। श्रावक को इन मनोरथो का सदा चिन्तन करना चाहिए।
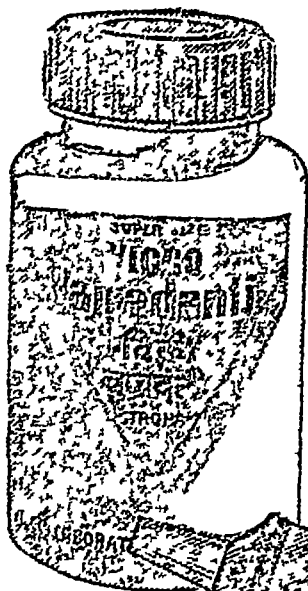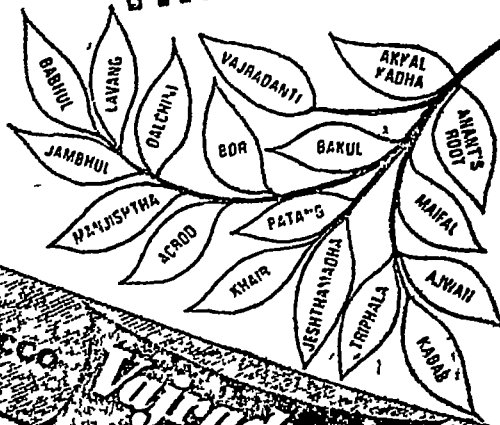
संयम जीवन का विकास है

जैन-संस्कृति आत्म-उत्सर्ग की संस्कृति है। बाह्य स्थितियों में जय-पराजय की अनवरत शृंखला चलती है। वहां पराजय का अन्त नहीं होता। उसका पर्यवसान आत्म-विजय में रहता है। यह निर्द्वन्द्व स्थिति है। जैन-विचारधारा की बहुमूल्य देन है संयम।

आचार्य श्री तुलसी जी महाराज

सुख का वियोग मत करो, दुःख का संयोग मत करो-सब के प्रति संयम करो। सुख दो और दुःख मिटाओ की भावना में आत्म-विजय का भाव नहीं होता। दुःख मिटाने की वृत्ति और शोषण, उत्पीडन तथा अपहरण साथ-साथ चलते हैं। इधर शोषण और उधर दुःख मिटाने की वृत्ति--यह उच्च संस्कृति नहीं।

सुख का वियोग और दुःख का संयोग मत करो-यह भावना

आत्म--विजय की प्रतीक है। सुख का वियोग किये विना शोषण नही होता, अधिकारो का हरण और द्वन्द्व नही होता।

सुख मत लूटो और दु ख मत दो--इस उदात्त--भावना मे आत्म-विजय का स्वर जो है, वह है ही। उसके अतिरिक्त जगत की नैसर्गिक स्वतन्त्रता का भी महान् निर्देश है।

प्राणीमात्र अपने अधिकारो मे रमणशील और स्वतन्त्र है, यही उनकी सहज सुख की स्थिति है।

सामाजिक सुख--सुविधा के लिए इसकी उपेक्षा की जाती है किन्तु उस उपेक्षा को शाश्वत -सत्य समझना भूल से परे नही होगा।

दस प्रकार का सयम, दस प्रकार का सवर और दस प्रकार का विरमण है, वह सव स्वात्मोन्मुखी वृत्ति है, या वह निवृत्ति है या है निवृत्तिसकलित प्रवृत्ति।

दस आशसा के प्रयोग ससारोन्मुखी वृत्ति हैं। जैन-सस्कृति मे प्रमुख वस्तु हे 'दृष्टिसम्पन्नता'-सम्यक्-दर्शन। ससारोन्मुखी वृत्ति अपनी रेखा पर और आत्मोन्मुखी वृत्ति अपनी रेखा पर अवस्थित रहती है, कोई दुविधा नही होती। अव्यवस्था तव होती है जब दोनो का मूल्याकन एक ही दृष्टि से किया जाए। संसारोन्मुखी वृत्ति मे मनुष्य अपने लिए मनुष्येतर जीवो के जीवन का अधिकार स्वीकार नही करते। उनके जीवन का कोई मूल्य नही आकते। दु:ख मिटाने और सुखी वनाने की वृत्ति व्यावहारिक है किन्तु क्षद्र-भावना, स्वार्थ और सकुचित वृत्तियो को प्रश्रय देनेवाली है। आरम्भ और परिग्रह से व्यक्ति को धर्म से दूर किये रहते है। वडा व्यक्ति अपने हित के लिए छोटे व्यक्ति की, वडा राष्ट्र अपने हित के लिए छोटे राष्ट्र की निर्मम उपेक्षा करते नही सकुचाता।

वड़े से भी कोई वड़ा होता है और छोटे से भी कोई छोटा।

वडे द्वारा अपनी उपेक्षा देख छोटा तिलमिलाता है किन्तु अपने से छोटे के प्रति कठोर वनते वह नही सोचता। यहा गतिरोध होता है।

जैन-विचारधारा यहा वताती है—दु खानवर्तन और सुख-दान की प्रवृत्ति को मिजा की विवशात्मक अपेक्षा समझो। उसे ध्रु व-सत्य मान कर मत चलो। सुख मत लूटो दु ख मत दो-इसे विकसित करो। इसका विकास होगा तो 'दु ख मिटाओ, सुखी वनाओ' की भावना अपने आप पूरी होगी। दु खी न वनाने की भावना वढेगी तो दु ख अपने आप मिट जायगा। सुख न लूटने की भावना दृढ होगी तो सुख वनाने की आवश्यकता ही क्या होगी ?

सक्षेप मे तत्व यह है-दु ख सुख को ही जीवन का ह्रास और विकास मत समझो। सयम जीवन का विकास है और असयम ह्रास। असयमी थोडे व्यक्तियो को व्यावहारिक लाभ पहुँचा सकता है किन्तु वह छलना, क्रूरता और शोषण को नही त्याग सकता।

सयमी थोडे व्यक्तियो का व्यावहारिक हित न साध सके फिर भी वह सवके प्रति निश्छल, दयालु और शोषणमुक्त रहता है। मनुष्य-जीवन उच्च सस्कारी वने, इसके लिए उच्च वृत्तिया चाहिए, जैसे —

१ आर्जव या ऋजुभाव, जिससे विश्वास वढे।

२ मार्दव या दयालुता, जिससे मैत्री वढे।

३ लाघव या नम्रता, जिससे सहृदयता वढे।

४ क्षमा या सहिष्णुता, जिससे धैर्य वढे।

५ शोच या पवित्रता, जिससे एकता वढे।

६ सत्य या प्रामाणिकता, जिससे निर्भयता वढे।

७ माध्यस्थ्ये या आग्रहहीनता, जिससे सत्य-स्वीकार की शक्ति वढे।

किन्तु इन सवको सयम की अपेक्षा है। 'एक ही साधै,सव सधै'–सयम की साधना हो तो सब सध जाते हैं, नही तो नही। जैन-विचार-धारा इस तथ्य को पूर्णता का मध्य-विन्दु मानकर चलती है। अहिसा इसी की उपज है, जो 'जैन-विचारणा' की सर्वोपरि देन मानी जाती है।

प्रवर्त्तक-धर्म पुण्य या स्वर्ग को ही अन्तिम साध्य मानकर रुक जाता था। उसमे जो मोक्ष-पुरुषार्थ की भावना का उदय हुआ है, वह निवर्तक धर्म या श्रमण-सस्कृति का ही प्रभाव है।

अहिंसा और मुक्ति-श्रमण सस्कृति की ये दो ऐसी आलोक-रेखाए है जिनसे जीवन के वास्तविक मूल्यो को देखने का अवसर मिलता है।

जव जीवन का धर्म-अहिंसा या कष्ट-सहिष्णुता और साध्य-मुक्ति या स्वातन्त्र्य वन जाता है, तब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति रोके नही रुकती। आज की प्रगति की कल्पना के साथ ये दो धाराएं और जुड जाये तो साम्य आएगा, भोगपरक नही, किन्तु त्याग-परक, वृत्ति वढेगी, दानमय नही किन्तु अग्रहणमय, नियन्त्रण वढ़ेगा–दूसरो का नही, किन्तु अपना।

भारतीय सस्कृति की विशाल स्त्रोतस्विनी श्रमण-सस्कृति का जो महान् स्त्रोत अनिरुद्ध प्रवाहमान है, वह जीवन की शान्ति मे सहायक होगा ऐसा मेरा विश्वास है।
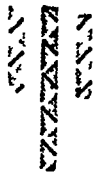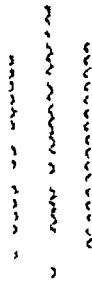
हाय लुट गया

प्रत्येक व्यक्ति की उत्पत्ति माता के उदर से होती है। माँ के पेट मे नौ महिने की अवधि व्यतीत करने मे अत्यत असह्य घबराहट व पीडा रहती है क्योकि एकदम सीमित स्थान पर रहना कोई सामान्य बात नही। यदि आज हमे वे क्षण स्मृति मे न हो तो पुन उसका चिंतन करें, सरल व सामान्य बात है, पर आवश्यकता है कल्पना की।

विदुषी प्रवर्तिनी साध्वी श्री विचक्षण श्री जी म

मान लीजिये किसी द्वेषी अथवा राजकीय व्यक्ति ने अपराध या अन्य प्रतिकार मे किसी अपराधी के लिए ऐसी काष्ट पेटी का निर्माण किया हो जिसमे स्वास के आवागमन की अपेक्षा से पर्याप्त छिद्र हो, उस पेटी मे अपराधी प्राणी को बैठने पर जो आतरिक,

पीडा व्यथा, वेदना होगी उसका अनुमान कोई सहज ही लगा सकता है। ठीक इसी प्रकार के कष्ट की अनुभूति माता के उदर से उत्पन्न होने वाले प्रत्येक जीव को होती है जिसकी अभिव्यक्ति वह जन्म के समय रुदन के रूप मे व्यक्त करता है। सभवत: किसी के मन मे यह शका हो सकती है कि क्या उदरस्थित बालक भी इस प्रकार की कल्पना करने मे शक्य हो सकता है? इसका उदाहरण तथा प्रत्यक्ष प्रमाण है वीर अभिमन्यु जिसने गर्भावस्था मे ही चक्रव्यूहय मे प्रवेश करने की क्रिया को सीखा।

जव कोई व्यक्ति (जीव) अपनी प्रतिकूल परिस्थितियो से छुट्टी पाता है अथवा उसे अपने व्यक्ति मिलते हैं तो वह सुख या दुख के रूप मे अपने आसुओ को रोक नही पाता, और आठ-आठ आसू रो उठता है। इसी प्रकार उदर स्थित व्यथित बालक माता के उदर से शीघ्र बाहर निकलने की प्रार्थना कर यही सोचता है कि अब इस स्थान से मुक्ति पाने के वाद कभी ऐसा दुष्कृत्य नही करूगा जिसके फल-स्वरूप इतने घृणास्पद स्थान मे पुन इतना समय व्यतीत करना पडे।

जन्म के बाद क्रमश शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, भावात्मक विकास हो जाने पर भी सत्सग, सद्ग्रथ स्वाध्याय के अभाव मे तथा भौतिक पदार्थों को जुटाने मे ही मानव अपने जीवन के अमूल्य क्षणो को नष्ट कर देता है। भोगो की उपलब्धि मे वह अपने जीवन की सार्थकता, अन्तिम लक्ष्य तथा चरम उद्देश्य समझता है, जिसके पास सभी प्रकार के ऐशो-आराम की सामग्री है, रहने के लिए बगला, घूमने के लिए कार, काम करने के लिए नौकर तथा मन के अनुकूल परिवार है वह अपने जीवन को धन्य, सफल व सुखी मानता है—"जोड जाने मोरी, सफल घडी रे' (आनन्द घनजी) 'किसी के पूछने पर यही उत्तर देता है कि मेरे घर राम राजी है जवकि है माया। वह यह नही सोचता कि जीवन में आज बसत है तो क्या हुआ, कभी पत्तझड भी आ सकता है।

कोई पथिक ग्रीष्म ऋतु की कडकडाती चिलचिलाती धूप मे नगे पैर, लम्बे समय चले और उसी क्षण उसे वादल के कारण छाया प्राप्त हो जाय तो वह खुशी से नाच उठेगा, प्रसन्नता से भर जायेगा पर वह यह नही सोचता कि यह क्षणिक सुख व आनद है, कुछ समय पश्चात् वादल अपना स्थान ले लेते है और उसके शरीर से श्वेद कण निस्सृत होने लगते है अर्थात् उसका वह क्षणिक सुखदायी आनद समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार जैसे वादलजन्य शीतलता स्थाई नही हो सकती, ठीक उसी प्रकार यह क्षणिक भौतिक सुख भी रहने वाला नही है या तो परिस्थितिया वदल जायेगी या व्यक्ति उठ जावेगा। अत: ऐसे जीवन पर क्या इठलाना, इतराना तथा गर्व करना।

हमे उपलब्ध सामग्री का हर प्रकार से सद्व्यय करके पुण्यार्जन का कार्य करना चाहिये। सत्सग द्वारा आत्मज्ञान पाना चाहिये। यौवन व जीवन की क्षण भगुरता समझकर जीवन मे अनाशक्ति योग का अभ्याम करना चाहिये ताकि जन्म-मरण की कुछ घडियाँ टूटे और माता के गर्भ मे जाना भी छूटे। किन्तु हर व्यक्ति इस जीवन को आकर्षित करने वाले वाह्य पदार्थों के पीछे इतना उन्मत्त तथा मदोन्मत्त वन जाता है कि उसका विषय-कषाय का नशा नही उतरता, मोह-माया का भूत नही भागता। शरीर जर्जर हो जाता है, यौवन का मोती खो जाता है फिर भी वह जीवन का मोती 'आतमतत्व' को नही पाता।

जव कभी सद्गुण जीवन की क्षण भगुरता का ज्ञान कराते है, मोह, निद्रा को त्यागने का उपदेश देते हैं उस समय हर व्यक्ति यह कह उठता है कि यह कौन नही जानता कि इस ससार मे कौन किसका है। यह उत्तर ठीक उसी सेठ के समान है जो अर्द्ध निद्रा या सुसुप्तावस्था मे भी कहता है कि मैं जागृत हू। उदाहरणार्थ जब घर मे चोर प्रवेश करता है उस समय सेठानी जागृतावस्था मे भी स्वय को उठने मे असमर्थ पाती है अत वह सेठजी से कहती है—उठो चोर आया है।

सेठ— जानता हू।

सेठानी—देखो अलमारी खोल रहा है।
सेठ— मैं जागृत हू।
सेठानी—केवल निद्रा मे ही कह रहे हो ?
सेठ— नही मैं जाग रहा हू।
सेठानी—उठो न, देखो, वह धन की गठडी बाध कर ले जा रहा है
सेठ उस समय भी यही उत्तर देता है कि "सब जानता हू" तब सेठानी झल्ला उठती है—"जाणो-जाणो काई करो
थाका जाण मे पडे धूल।"

ठीक यही स्थिति हम ससारी प्राणियो की भी है जिन्हें समय-समय पर स्वाध्याय, प्रवचन श्रवण का लाभ मिलता है पर व्यक्ति स्वय को समझदार समझकर चलता है। जब मरण की घडिया समीप आती हैं उस क्षण वह कातर दृष्टि से मरण-शैया पर पड़ा हुआ सबके सामने यही उद्‌गार व्यक्त करता है कि अब क्या करू — "हाय मैं लुट गया।'

उस समय वह व्यक्ति अनेक व्यथा वेदना से परेशान होता है। उसका मन दुखी होता है कि अरे मैंने जीवन मे दान पुण्य, तीर्थ-यात्रा सेवा, परोपकार, सत्सग आत्मा विकास के कोई कार्य नही किये। माता के गर्भ मे जिस पीडा से दुखी था आज पुनः उसी की ओर प्रस्थान कर रहा हू। काश मैं जीवन मे कुछ कर पाता। अब कैसे क्या हो। जब ट्रेन निकल गयी तब हाथ मलने से क्या लाभ। अरे दुनिया स्वप्न है पर मैंने सत्य समझा। हाय राम, अब सबके बीच से उठ चला। जब समय था तब सत्य नही समझा, जब सत्य समझ मे आया, तब समय नही रहा। उसकी अतिम श्वास की अभिव्यक्ति इन शब्दो मे होती है—"हाय मैं लुट गया।"

नादानी मत कर रे मूरख, धन वैभव नही तेरा है।
चार दिनो की चकाचौंध, आखिर जगल मे डेरा है।
दान, शीयल, तप, भाव, भावना, स्वर्णिम ज्ञान उजेरा है।
वही "विचक्षण" जो जीवन मे, पी अमृत को घू ट गया।

मैं कौन हूँ ?

'मैं' शब्द का प्रयोग हम प्रतिदिन कई बार करते हैं, पर गहराई से कभी यह सोचने का यत्न नहीं करते कि 'मैं' का वास्तविक अर्थ क्या है ? 'मैं' का असली वाच्यार्थ क्या है ? 'मैं' शब्द किस वस्तु का वाचक है ?

डॉ० हुकमचन्दजी भारिल्ल

सामान्य तरीके से सोचकर आप कह सकते हैं, कि इसमें गहराई से सोचने की बात ही क्या है ? क्या हम इतना भी नहीं समझते हैं कि 'मैं' कौन हूँ ? और आप उत्तर भी दे सकते हैं कि, मैं' बालक हूँ या जवान हूँ, मैं पुरुष हूँ या स्त्री हूँ, मैं पंडित हूँ या सेठ हूँ।' पर मेरा प्रश्न तो यह है कि क्या आप इनके अलावा और कुछ नहीं हैं ? क्योंकि ये सब तो बाहर में दिखने वाली संयोगी पर्यायें मात्र हैं।

मेरा कहना है कि यदि आप बालक हैं तो बालकपन तो एक दिन समाप्त हो जाने वाला है पर आप तो फिर भी रहेंगे, अतः आप बालक नहीं हो सकते। इसी प्रकार जवान भी नहीं हो सकते। क्योंकि बालकपन और जवानी यह तो शरीर के धर्म हैं तथा 'मैं' शब्द शरीर

का वाचक नही है। मुझे विश्वास है कि आप भी अपने को शरीर नहीं मानते होंगे।

ऐसे ही आप सेठ तो धन के संयोग से हैं, पर धन तो निकल जाने वाला है, तो क्या जब धन नही रहेगा तब आप भी न रहेंगे? तथा पंडिताई तो शास्त्रज्ञान का नाम है, तो क्या जब आपको शास्त्र-ज्ञान नही था तब आप नही थे? यदि थे, तो मालूम होता है कि आप धन और पंडिताई से भी पृथक् हैं अर्थात् आप सेठ और पंडित भी नही हैं।

तब प्रश्न उठता है कि आखिर 'मैं हूँ कौन?' यदि एक बार यह प्रश्न हृदय की गहराई से उठे और उसके समाधान की सच्ची जिज्ञासा जगे तो इसका उत्तर मिलना दुर्लभ नहीं। पर यह 'मैं' पर की खोज में स्व को भूल रहा है। कैसी विचित्र बात है कि खोजने वाला खोजनेवाले को ही भूल रहा है। सारा जगत पर की सभाल में इतना व्यस्त नजर आता है कि 'मैं कौन हूँ?' यह सोचने-समझने की उसे फुर्सत ही नहीं है।

'मैं' शरीर, मन, वाणी और मोह-राग-द्वेष यहाँ तक कि क्षण-स्थायी परलक्षी बुद्धि से भिन्न एक त्रैकालिक, शुद्ध, अनादि अनन्त, चैतन्य, ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुवतत्त्व हूँ, जिसे आत्मा कहते हैं।

जैसे 'मैं बगाली हूँ, मैं मद्रासी हूँ, और मैं पंजाबी हूँ? इस प्रान्तीयता के घटाटोप में आदमी यह भूल जाता है कि 'मैं भारतीय हूँ' और प्रान्तीयता की सघन अनुभूति से भारतीय राष्ट्रीयता खण्डित होने लगती है, उसी प्रकार 'मैं मनुष्य हूँ, देव हूँ, पुरुष हूँ, स्त्री हूँ, बालक हूँ, जवान हूँ, आदि मे आत्मबुद्धि के बादलो के बीच आत्मा तिरोहित सा हो जाता है। जैसे आज के राष्ट्रीय नेताओ की पुकार है कि देश प्रेमी बन्धुओ आप लोग मद्रासी और बगाली होने के पहिले भारतीय हैं, यह क्यों भूल जाते हैं? उसी प्रकार मेरा कहना है कि 'मैं सेठ

हूँ, मैं पण्डित हूँ, मैं बालक हूँ, मैं वृद्ध हूँ,' के कोलाहल मे 'मैं आत्मा हूँ' को हम क्यो भूल जाते है ?

जैसे भारत देश की अखण्डता अक्षुण्ण रखने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय मे 'मै भारतीय हूँ' यह अनुभूति प्रबल होनी चाहिये, भारतीय एकता के लिए उक्त अनुभूति ही एक-मात्र सच्चा उपाय है , उसी प्रकार 'मै कौन हूँ' का सही उत्तर पाने के लिए 'मै आत्मा हूँ' की अनुभूति प्रबल हो, यह अति आवश्यक है ।

हाँ ! तो स्त्री, पुत्र, मकान, रुपया पैसा यहा तक कि शरीर से भी भिन्न 'मै' तो एक चेतनतत्व आत्मा हूँ । आत्मा मे उठने वाले मोह-राग-द्वेष भाव भी क्षणस्थायी विकारीभाव होने से आत्मा की सीमा मे नही आते तथा परलक्षी ज्ञान का अल्पविकास भी परिपूर्ण ज्ञान स्वभावी आत्मा का अवबोध कराने मे समर्थ नही है । यहा तक कि ज्ञान की पूर्ण विकसित अवस्था, (केवल ज्ञान) अनादि नही होने से, अनादि-अनन्त पूर्ण एक ज्ञानस्वभावी आत्मा नही हो सकता है । आत्मा तो एक द्रव्य है और यह आत्मा के ज्ञान गुण की पूर्ण विकसित एक पर्याय मात्र है ।

"मै" का वाच्यार्थ "आत्मा" तो अनादि-अनन्त अविनाशी त्रैकालिक तत्व है । जब तक उस ज्ञानस्वभावी अविनाशी ध्रुवतत्व मे अहबुद्धि (वही 'मैं' हूँ ऐसी मान्यता) नही आती तब तक "मै कौन हूँ" यह प्रश्न भी अनुत्तरित ही रहेगा ।

'मैं' के द्वारा जिस आत्मा का कथन किया जाता है, वह आत्मा अन्तरोन्मुखी दृष्टि का विषय है, अनुभवगम्य है, बहिर्लक्षी दौडधूप से वह प्राप्त नही किया जा सकता है । वह स्वसवेद्य तत्व है, अत. उसे मानसिक विकल्पो मे नही बाधा जा सकता है, उसे इन्द्रियो द्वारा भी उपलब्ध नहीं किया जा सकता क्योकि इन्द्रिया तो मात्र स्पर्श, रस, गध, वर्ण और शब्द की ग्राहक है, अत वे केवल

स्पर्श, रस, गध, वर्ण वाले जडतत्व को ही जानने मे निमित्त मात्र हैं। वे इन्द्रिया अरस, अरूपी, आत्मा को जानने मे एक तरह से निमित्त भी नही हो सकती हैं।

यह अनुभवगम्य आत्मवस्तु ज्ञान का घनपिंड और आनन्द का कन्द है। रूप, रस, गध, स्पर्श और मोह-रागद्वेष आदि सर्व पर भावो से भिन्न, सर्वांग परिपूर्ण शुद्ध है। समस्त पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादिमय भावो से अभिन्नता ही इसकी शुद्धता है। यह एक है, अनन्त गुणो की अखण्डता ही इसकी एकता है। ऐसा यह आत्मा मात्र आत्मा है और कुछ नही है यानी 'मैं' मै ही हूँ और कुछ नही। 'मै' मै ही हूँ और अपने मे ही सब कुछ हूँ। पर को देने लायक मुझ मे कुछ नही है तथा अपने मे परिपूर्ण होने से पर के सहयोग की मुझे कोई आवश्यकता नही है। यह आत्मा वाग्विलास और शब्दजाल से परे है 'मात्र अनुभूतिगम्य है उसको प्राप्त करने का प्रारभिक उपाय तत्त्वविचार है, पर वह आत्मानुभूति आत्मतत्व सम्बन्धी विकल्प का भी अभाव करके प्रगट होने वाली स्थिति है।

"मै कौन हू" यह जानने की वस्तु है, यह अनुभूति द्वारा प्राप्त होने वाला समाधान (उत्तर) है। यह वाणी द्वारा व्यक्त करने और लेखनी द्वारा लिखने की वस्तु नही है। वाणी और लेखनी की इस सदर्भ मे मात्र इतनी ही उपयोगिता है कि ये उसकी ओर संकेत कर सकती हैं। ये दिशा इंगित कर सकती है, दशा नही ला सकती हैं।

श्री वर्धमान आत्मवल्लभ मिशन

(रजिस्टर्ड चेरिटेबिल ट्रस्ट)

१२३०, कच्चा बाग, चांदनी चौक, दिल्ली